गुरु पूर्णिमा विशेषांक
जुलाई-2021
मूल्य-40/-
वर्ष 11
अंक 10
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
श्रावण मास साधना
भाग्योदय साधना
सर्व सिद्धि प्रयोग
गुरु पूर्णिमा : गुरु तत्व धारण साधना

पूज्य सद्गुरुदेव के आशीर्वाद तले प्रकाशित

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

कृपया ध्यान दें

- 1. यदि आप साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं।
- 2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
- 3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप निम्न वाट्सअप नम्बर पर मैसेज भेजें।

450 रुपये तक की साधना सामग्री वी.पी.पी से भेज दी जाती है।
परन्तु यदि आप साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं तो सामग्री की न्यौछावर राशि में डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खातें में जमा करवा दें एवं जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण एवं अपना पूरा पता, फोन नम्बर के साथ हमें वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे जिससे आपको साधना सामग्री अधिकतम 5 दिनों में प्राप्त हो जायेगी।

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम	: नारायण मंत्र साधना विज्ञान
बैंक का नाम	: स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड	: SBIN0000659
खाता नम्बर	: 31469672061

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/-	हनुमान यंत्र + माला 405 + 45 (डाक खर्च) = 450	लक्ष्मी यंत्र + माला 405 + 45 (डाक खर्च) = 450	1 वर्ष सदस्यता 405/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 2432209, 7960039

आनो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वत:

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नम: ||

धनप्राप्ति के साथ सौभाग्य प्राप्ति हेतु : भाग्योदय साधना

शत्रु बाधा निवारण एवं वशीकरण सिद्धि प्रदायक : प्रत्यंगिरा साधना

यश प्राप्ति के साथ, पुत्र प्राप्ति के लिए : शिव साधना

प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद

पूजनीया माताजी

(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक

श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक

राजेश कुमार गुप्ता

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

स्तोत्र

आयुर्वेद

योग
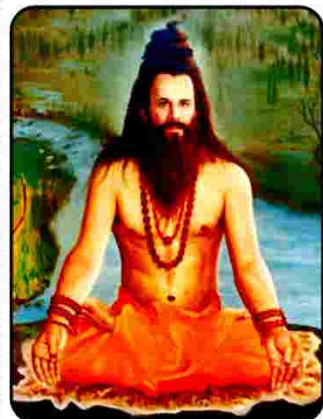
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक

श्री अरविन्द श्रीमाली

द्वारा

प्रगति प्रिंटर्स

A-15, नारायणा, फेज-1

नई दिल्ली:110028

से मुद्रित तथा

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'

कार्यालय :

हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से

प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति	40/-
वार्षिक	405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली- 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039

WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अत: उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अत: इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अत: पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

तपस्विनो यज्ञपरा सुधर्मिण:,
सुवेदिन: दिव्यकला: सुलक्षणा:।
सदुज्ज्वलं नैव न याति जीवनं;
बिना समर्पणं निखिलेश्वराय।।

साधक चाहे कितना भी तपस्वी हो, यज्ञ सम्पादन करने वाला हो, धर्माचरण में संलग्न हो, ज्ञानवान हो, श्रेष्ठ कलाओं में पारंगत हो तथा अच्छे लक्षणों से युक्त हो, फिर भी उसके जीवन का सौभाग्यपूर्ण निर्माण तब तक सम्भव नहीं हो सकता, जब तक सद्गुरु के चरणों में उसका समर्पण नहीं होगा।

शिष्य की व्याकुलता

उन दिनों कबीर ज्ञान प्राप्ति के लिए अत्यन्त व्याकुल रहते थे। किसी संन्यासी ने उन्हें बताया था, कि गुरु मिले बिना वास्तविक ज्ञान और वास्तविक भक्ति नहीं हो पाती। जब तक गुरु दीक्षा नहीं मिलती तब तक जीव का कल्याण सम्भव नहीं है, चाहे कितना भी प्रयास कर ले। यह बात कबीर को रह-रह कर बेचैन करती थी।

कुछ दिन बाद संन्यासी ने कबीर से कहा-'स्वामी रामानन्द का तो नाम सुना ही होगा ?

'उनके सत्संग में तो कई बार गया हूं, पर वह तो जाने क्यों मुझे दीक्षा देने को तैयार ही नहीं होते।' कबीर ने बड़े श्रद्धा भाव से कहा।

'वह यों ही जल्दी तैयार नहीं हुआ करते। उनके मुंह से निकला प्रत्येक शब्द भी दीक्षा से कम नहीं होता', संन्यासी बोला।

इसके बाद कबीर के दिल का चैन और रातों की नींद उड़ गई, वह निरन्तर इसी उधेड़बुन में रहते कि कैसे गुरु रामानन्द से दीक्षा प्राप्त हो। कबीर को मालुम था, कि स्वामी रामानन्द नित्य ब्रह्ममुहूर्त में ही स्नान करने गंगा घाट पर आते हैं। इसी उद्देश्य से वे जाकर एक चादर से अपने को लपेट कर घाट की सीढ़ियों पर लेट गए। सुबह स्वामी रामानंद घाट पर सीढ़ियों से उतरते समय अंधेरे में कबीर को न देख सके, और उनका पांव कबीर से जा टकराया।

'राम राम हे राम! रामानन्द कबीर को देखकर चौंके।

'ये पवित्र शब्द ही मेरे लिए गुरु मंत्र और आपका पद आघात ही मेरे लिए गुरु दीक्षा है।'-कबीर बोल उठे।

रामानन्द से रहा न गया, प्यार से कबीर के सिर पर हाथ फेरकर बोले-'तुमसे बढ़कर राम नाम का अधिकारी कौन हो सकता है। उठो कबीर, बिना किसी भेदभाव के सबको राम का नाम बांटना, एक ही तत्व का प्रकाश चारों ओर फैल रहा है।' यह कहकर वे प्रस्थान कर गए।

वस्तुत: जब शिष्य में आकुलता एकदम बढ़ जाती है, तो गुरु स्वत: ही दीक्षा प्रदान करने को बाध्य हो जाते हैं। गुरु तो उसी क्षण की प्रतीक्षा करते हैं, कि शिष्य में तड़फ उत्पन्न हो और वे अपना सब-कुछ शिष्य में उतार सकें।

शिष्य के सात सूत्र

भगवत्पाद शंकराचार्य ने शिष्यता की कसौटी पर उतरने हेतु शिष्य के लिए सात सूत्र बताये हैं, जो निम्न हैं। आप मनन कर निर्णय करें कि आपके जीवन में कितने सूत्र संग्रहित हैं।

- **अन्तेश्रियै वः –** जो आत्मा से प्राणों से हृदय से अपने गुरुदेव से जुड़ा हो, सभी के अन्दर गुरु को ही देखता हो और जो गुरु से अलग होने की कल्पना करके ही भाव–विह्वल हो जाता हो।
- **कर्तव्य श्रियै नः –** जो अपनी मर्यादा जानता हो, गुरु के सामने अभद्रता, अशिष्टता का प्रदर्शन न कर पूर्ण विनीत, नम्र एवं आदर्श रूप में उपस्थित होकर उनकी आज्ञा का पालन करता हो।
- **सेव्यं सतै दिवौं च –** जिसने गुरु सेवा को ही अपने जीवन का आदर्श मान लिया हो, और प्राण–प्रण से गुरु की तन–मन–धन से निःस्वार्थ सेवा करना ही जीवन का उद्देश्य रखता हो।
- **ज्ञानं मृते वै श्रियं –** जो ज्ञान रूपी अमृत वाणी का नित्य श्रवण करता रहता हो और अपने गुरु से निरन्तर ज्ञान प्राप्त करता ही रहता हो।
- **हितं वै हृदं –** जो साधनाओं को सिद्ध कर लोगों का हित करने और विश्व का कल्याण करने की भावना रखता हो।
- **गुरूर्वै गति –** गुरु ही जिसकी गति, मति हो, गुरुदेव जो आज्ञा दे, बिना विचार किये उसका पालन करना ही अपना कर्तव्य समझता हो।
- **इष्टौ गुरूर्वै गुरु –** जिस शिष्य का इष्ट ही गुरु हो, जो अपना सर्वस्व गुरु को ही समझता हो।

निस्पृहता से शिवत्व प्राप्ति
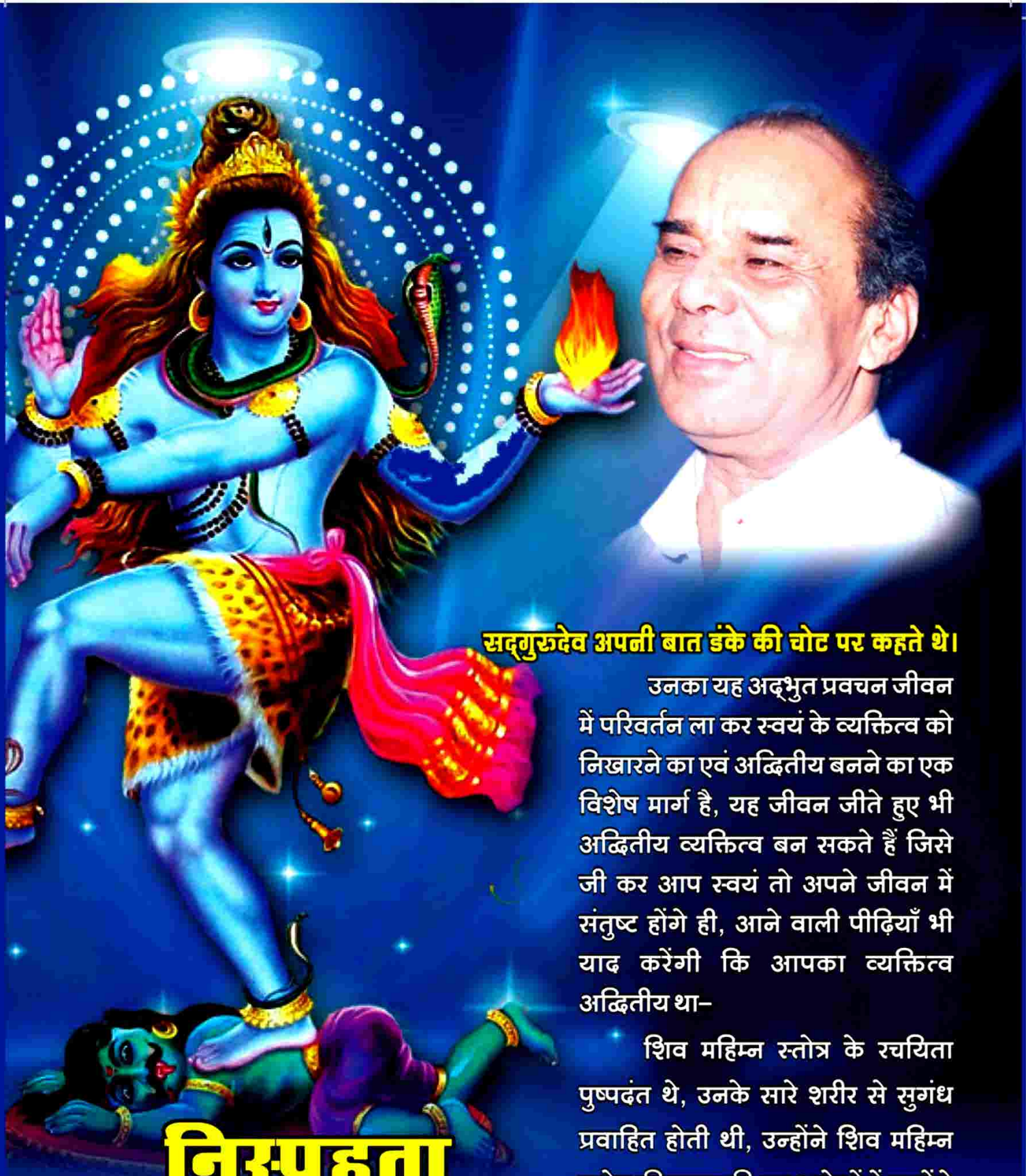
सद्गुरुदेव अपनी बात डंके की चोट पर कहते थे।

उनका यह अद्भुत प्रवचन जीवन में परिवर्तन ला कर स्वयं के व्यक्तित्व को निखारने का एवं अद्वितीय बनने का एक विशेष मार्ग है, यह जीवन जीते हुए भी अद्वितीय व्यक्तित्व बन सकते हैं जिसे जी कर आप स्वयं तो अपने जीवन में संतुष्ट होंगे ही, आने वाली पीढ़ियाँ भी याद करेंगी कि आपका व्यक्तित्व अद्वितीय था–

शिव महिम्न स्तोत्र के रचयिता पुष्पदंत थे, उनके सारे शरीर से सुगंध प्रवाहित होती थी, उन्होंने शिव महिम्न स्तोत्र की रचना की उन श्लोकों में उन्होंने भगवान शिव का एक अद्भुत तरीके से वर्णन किया है।

उन्होंने कहा कि जीवन का प्रत्येक क्षण सार्थकता एवं जीवंतता लिए होता है, प्रत्येक क्षण उपयोगी होता है, एक क्षण जो बीत जाता है वह फिर वापस नहीं आता। आज आपके साथ गुरु है तो आवश्यक नहीं कि वापस ये क्षण आ सके कि आप उनके पास हों या उनसे दीक्षा प्राप्त कर सकें, या वह ज्ञान प्राप्त कर सकें जिसके द्वारा पाप समाप्त होकर पुण्य का उदय होता है।

तो वैसा ही क्षण वापस आ नहीं सकता। एक बार एक मनुष्य की रचना हो गई, तो उसी आकृति के दूसरे मनुष्य की रचना नहीं हो सकती एक पिता के चार पुत्र हैं तो चारों का रूप, आकृति, स्वभाव, संस्कार अलग-अलग होते हैं चाहे जुड़वा भाई भी हों।

इसलिए एक क्षण विशेष में किया गया कार्य ही जीवन को पूर्णता दे सकता है और जीवन की अपूर्णता इसलिए होती है क्योंकि हमारा मन अपने आप में आंदोलित या डांवाडोल होता है, निर्णय नहीं कर पाता।

परन्तु बिना समुद्र में छलांग लगाए, बिना जोखिम उठाए समुद्र रूपी जीवन को पार नहीं किया जा सकता। जो जीवन में चैलेंज लेता है वही जीवन में कुछ प्राप्त कर सकता है।

जो घर जारे आपना.....

जो पहले अपना घर जलाता है, अपने अंदर के विकार जला देता है, अपने विचारों से लोभ, लालच, स्वार्थ मोह समाप्त कर देता है उसके लिए ही क्षण है, क्षण का महत्व है।

जीवन में तो लोभ लालच पैदा होगा ही, परंतु एक क्षण गुरु के साथ हो तो ये मिट सकते हैं, फिर मिटें या नहीं कोई आवश्यक नहीं है कि वही नक्षत्र, वही तिथि, वही मुहुर्त वापस स्थापित हो ही।

भगवान शिव ने कहा है कि मैं क्षण-क्षण परिवर्तित हूँ और जो परिवर्तित है वह जीवित है, वही अद्वितीय है, श्रेष्ठ है, पूर्ण है।

जीवन में गृहस्थ जीवन भी बहुत आवश्यक है, मैं यह स्वीकार करता हूँ, मगर मैं इस बात को भी स्वीकार करता हूं कि संन्यास जीवन इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण हैं और इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति गृहस्थ में रहते हुए भी संन्यासी जीवन जिए-यह उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है। लेकिन यह इतना सरल भी नहीं है। इसके लिए एक दृढ़निश्चयी व्यक्तित्व की आवश्यकता होती है, जिसका अपने आप पर संयम हो, शरीर अपने वश में हो, वही गृहस्थ रहते हुए संन्यस्त जीवन जी सकता है।

घर बार छोड़ने को संन्यास नहीं कहते, और बस घर में रहने वाले को गृहस्थ नहीं

कहते पत्नी साथ होने से ही गृहस्थ नहीं हो जाते, बेटे पैदा होने से भी गृहस्थ नहीं हो जाते। भगवान कृष्ण को पूर्ण योगीराज कहा गया जो कि गोपियों से प्रेम करते थे, जो 16000 रानियों के पति थे। वे योगीराज कहलाए।

इसलिए ये शब्द मन से उद्भूत हैं, आपके विचार एक क्षण विशेष में कमजोर हो गए तो आप चूक गए, उस क्षण को गंवा बैठे वह क्षण फिर वापस नहीं आ सकता। यह जो हृदय बार-बार परिवर्तन होता है, यह जो बार-बार मन में तर्क-वितर्क, संदेह, भ्रम पैदा होता है तो इसको कैसे दूर करें, कैसे ये दूर हो?

क्योंकि हर बार और हर क्षण ये तर्क-वितर्क पैदा होते ही रहते हैं। अच्छे से अच्छे योगी के भी और आपके भी।

यह सही है या नहीं यह कार्य करना उचित है या नहीं और जो इस प्रकार के विचार या संदेह रखता है वह एक पशु जीवन व्यतीत करता है और मर जाता है जो जीवन में दृढनिश्चय कर लेता है कि मुझे इस रास्ते पर बढना है और सब छोड़ देना है सब कुछ हाथ में रखते हुए भी छोड़ देना है, 16000 रानियों के होते हुए भी मुझे अपने कार्य को सम्पन्न करना है, अपने व्यक्तित्व को उच्चता प्रदान करनी है। वह व्यक्ति अद्वितीयता प्राप्त करता ही है, निःसंदेह करता है।

आपका व्यक्तित्व और आपकी धारणा, आपका चिंतन आपका कार्य केवल आपकी पहचान हो। आपके पिता के द्वारा आपका नाम याद किया जाए कि किशनलाल का पुत्र है तब ऐसा पुत्र मरने के काबिल होता है, और जो बेटे के नाम से पहचाना जाता है वह अधम होता है।

जो अपने कार्यों से, अपने व्यक्तित्व से लोक में विख्यात होता है, वही सर्वत्र विजयी होता है, इसलिए अपना व्यक्तित्व निखारना आवश्यक हैं और हमारे जीवन में सैकड़ों उदाहरण हैं, हजारों उदाहरण हैं। राम का उदाहरण है कि अपने व्यक्तित्व को निखारने के लिए विश्वामित्र के आश्रम में रहे, उच्च कोटि की साधनाएँ सम्पन्न की और उस रावण को मारकर संसार में विख्यात हो सकें।

कृष्ण ने कहा और कोई रास्ता है ही नहीं और अपने पूरे जीवन में उन मां बाप से केवल कुछ दिनों ही मिले, वासुदेव और देवकी को, जिन्होंने उनको जन्म दिया। अधिकतर समय उनका गोकुल में बीता नंद और यशोदा के साथ। उन्होंने कहा इनकी वजह से मेरा नाम नहीं हो पाएगा। मुझे अगर कुछ बनना है तो कुछ ऐसा करूँ कि अद्वितीय बन सकूँ, ऐसा कुछ करूँ जो लोगों ने नहीं किया।

प्रेम करना हेय समझा गया तो उन्होंने प्रेम करके दिखाया, जो कुछ करना है करे
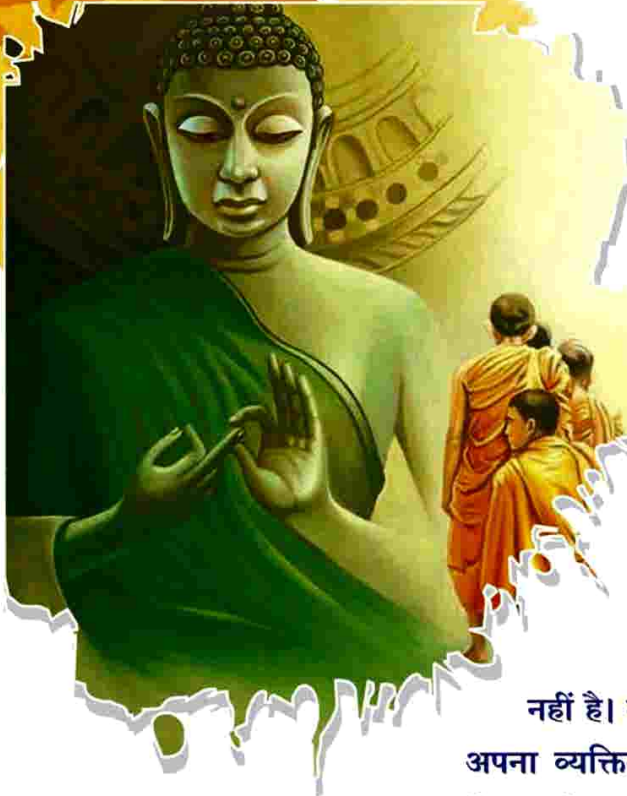
समाज। एक विद्रोह की भावना थी उनमें। उन्होंने कहा कि अगर मथुरा मेरे लिए सूटेबल नहीं है, मेरे व्यक्तित्व को निखारने में सही नहीं है तो मैं द्वारका में अपना राज्य स्थापित करूँगा और मैं वहाँ का उच्च कोटि का राजा बनूंगा और अपने व्यक्तित्व को सर्वोच्चता प्रदान करूँगा।

यही काम बुद्ध ने किया, एक राजकुमार होकर के घर-बार छोड़ करके बुद्धत्व को प्राप्त कर लिया और बुद्ध का नाम हमें आज भी याद है। उनके बेटों का या बाप का नाम हमें याद है या नहीं है। महावीर ने भी यही किया। गांधी ने भी निश्चय कर लिया कि अपना व्यक्तित्व निखारना है और अपना व्यक्तित्व निखारने के लिए न कस्तूरबा की तरफ देखा, न बेटों की तरफ देखा।

गांधी जी ने ध्यान दिया ही नहीं। उन्होंने कहा कि पुत्र अपनी जगह है, मेरा उनके प्रति कर्तव्य था वह मैंने पूरा कर दिया। अब उनके लिए मुझे जीवन बरबाद नहीं करना है। अपना व्यक्तित्व निखारना है।

त्रेता युग के उदाहरण से लगाकर के आज के उदाहरण में मैं आपको यह बता रहा था कि आपका व्यक्तित्व आपका है। आपकी पत्नी का या आपके बाप का और आपकी मां का या भाई का व्यक्तित्व आपके काम नहीं आएगा और इन लोगों ने जो निश्चय किया कि व्यक्तित्व निखारना है तो उन्होंने सब न्यौछावर कर दिया और उनका व्यक्तित्व अद्वितीय बन गया।

हम जब निश्चय करेंगे कि मुझे अपना व्यक्तित्व निखारना है बाकी सब कुछ बेकार है। न मेरी बेटी काम आएगी, न पिता काम आएंगे। मुझे अपने व्यक्तित्व को सर्वोच्चता प्रदान करनी है और पुष्पदंत भी यही कह रहा है, भगवान शिव भी यही कह रहे हैं कि आपको अपना व्यक्तित्व निखारना है तो भ्रम को छोड़ना पड़ेगा, संदेह को छोड़ना पड़ेगा और संदेह केवल दीक्षा के माध्यम से समाप्त हो सकते हैं, और कोई रास्ता नहीं है, अंदर कोई मशीन भी नहीं है।

दीक्षा का अर्थ है अंदर उन विचारों को पैदा करना जिनसे आपका व्यक्तित्व निखर सके, आपमें एक धारणा शक्ति मजबूत हो सके। यदि दीक्षा के विषय में मैं बार-बार कहता हूँ तो अवश्य कुछ तथ्य हैं।

उच्च कोटि का व्यक्ति एक बार भी कहता है तो सामने वाला श्रेष्ठ व्यक्ति उसे हृदय में उतार लेता है वहीं मूर्ख व्यक्ति को दस हजार बार कहें तो भी नहीं उतार सकता और अगर चेतनावान व्यक्ति है तो एक बार ठोकर भी बहुत है।

या तो आपके जीवन के जितने भी साल बचे हैं, बीस, पच्चीस, तीस, तो या तो आप

उन 20-25 सालों में अपने व्यक्तित्व को 10-12 टुकड़ों में बांट करके कि इसका बाप हूँ, इसका पति हूँ, यह मेरा नौकर है, यह मेरा घर है। इस प्रकार 20 टुकड़ों में बंट कर मर जाइए चिता पर लेट जाइए या फिर वो अपनी जगह पर है आप अपनी जगह पर हैं वो अपना काम करते रहें कपूत होंगे तो कपूत होंगे, जैसा कार्य करेंगे भविष्य में उन्हें ही उसका परिणाम भोगना पड़ेगा।

गांधी जी अपने लड़कों को कहां तक समझाते और समझाने से होता भी क्या? उनका तो निश्चय बस एक था।

शास्त्र भी यही कह रहा है कि इस मामले में हमें केवल एक निश्चय कर लेना है कि यह सब कुछ तो चलता रहेगा, उसके लिए आप दुखी मत होइए। बुखार आ गया तो परेशान मत होइए, खोपड़ी पकड़ कर मत बैठिए, बेटे अगर नहीं पढ़ रहे हैं तो नहीं पढ़ रहे हैं, सिर्फ आपके कहने से तो फर्स्ट क्लास आएंगे नहीं। आप उसे मार रहे हैं, उसके पीछे घूम रहे हैं और अपने व्यक्तित्व के टुकड़े-टुकड़े कर रहे हैं, जिंदगी, आधी से ज्यादा ऐसे बिता दी आपने और बाकी आधी भी ऐसे ही बिताएंगे। समझाना आपका कर्तव्य है, समझा कर अपने आप को अलग कर लीजिए।

दीक्षा व्यक्ति की धारणा शक्ति को मजबूत करने की प्रक्रिया है और इसे बार-बार करना पड़ेगा। क्योंकि एक बार माचिस नहीं लगती है तो दूसरी बार फिर घिसते हैं तीसरी बार फिर घिसते हैं, चौथी बार घिसते हैं, तो पांचवी बार माचिस लगेगी ही लगेगी। एक बार दीक्षा से नहीं होगा तो दूसरी, तीसरी, चौथी या पांचवी बार दृढ़ संकल्प आएगा कि मुझे इतना ऊंचा जीवन को उठा देना है।

गुरु ने कहा तुम्हें सूर्य बनना है तो बैठे-बैठे तो सूर्य बनेंगे नहीं। आप बनेंगे अपने व्यक्तित्व की वजह से और इसके लिए व्यक्तित्व को टुकड़े-टुकड़े होने से बचाना पड़ेगा। पत्नी आएगी तो बैठ जाएगी, बेटे कहना मानेंगे तो मानेंगे, मैं काहे को चिंता करूं। मेरा कर्तव्य था कि गृहस्थ होना चाहिए, पत्नी होनी चाहिए, पुत्र होने चाहिए। वंश चलेगा तो चलेगा, नहीं चलेगा तो चिंता किस बात की?

कबीर का कौन सा वंश चल रहा है, मीरा का कौन सा वंश है? वंश आवश्यक नहीं है। मुझे अपना व्यक्तित्व निखारना है, अपना ज्ञान पैदा करना है, मेरे मरने के हजार साल बाद भी मेरा नाम आकाश में इन्द्रधनुष के रंगों से लिखा होना चाहिए, यह जीवन में जरूरी है।

मेरे गुरु ने भी यही मुझे कहा था। उन्होंने कहा कि तुम एक काम करो, तुम्हें केवल अपना व्यक्तित्व निखारना है, और उसके लिए तुम्हें बहुत परिश्रम करना

पड़ेगा, हिमालय के चप्पे-चप्पे को छानना पड़ेगा, भूखों मरना पड़ेगा, तकलीफ देखनी पड़ेगी और तुम जरूर तकलीफ देखों मैं आशीर्वाद देता हूँ कि तुम्हारे, ऊपर विपत्तियां आएं, बहुत संघर्ष आएं,कठिनाइयां आएं, बहुत संघर्ष आएं तभी तुम निखर सकोगे। मगर साथ-साथ एक काम और करो, धोती के किनारे पर एक गांठ लगाओ, हर बार धोती बदलो तो यह गांठ लगाए रखना, गांठ हाथ में आएगी तो याद आएगा कि मुझे अपना व्यक्तित्व निखारना है, नहीं तो तुम भूल जाओगे।

और जब तक मैं संन्यासी रहा गांठ बांधे रहा, गुरु जी ने कहा था यह काम करना है, इस रास्ते को भी देख लेना है, हिमालय को भी देख लेना है, सिद्धाश्रम को भी देख लेना है।

आप में कहीं और कमी नहीं है, कृष्ण के भी दो हाथ थे और आपके भी दो हाथ हैं। कृष्ण में और राम में और आप में कोई अंतर है ही नहीं। आइंस्टाइन का माइंड और आपका माइंड बराबर है, कोई आपसे चौगुना नहीं था और गांधी जी तो केवल 42 किलो के थे। एक धक्का दें तो चार फुट दूर गिरें और बिना लाठी के चल नहीं पाते थे। परंतु व्यक्तित्व अपने आपमें अद्वितीय था।

उनमें एक चिंतन था, कि मुझे अपनी परस्नैलिटी बनानी है। मुझे सूर्य बनना है और इसके लिए गांधी जी ने कर्म योग की क्रिया योग की, कुण्डलिनी जागरण की दीक्षा ली और सहस्रार भेदन के लिए बराबर प्रयत्न करते रहे कि कोई गुरु मिले मुझे जो सहस्रार भेदन करे। उनकी जीवनी पढ़ें आप!

क्यों ऐसा था?

क्योंकि इसी प्रकार सर्वोच्चता प्राप्त हो सकती है और यों तो जो काम करता है उसे गालियां मिलती ही हैं और लोग गालियां दें हम सुनेंगे, आनन्द आए कि दो नई गालियां और सुनी। भगवान ने दो कान दिए ही इसलिए हैं कि इधर से गाली आए और उधर से निकले, नीचे में रखिए ही नहीं आप।

आप न उत्तेजित होइए और न बात करिए। आप बराबर एक ही चिंतन एक ही लक्ष्य रखिए कि व्यक्तित्व कैसे निखारें। चातक बिल्कुल एक ही तरफ देखता रहता है कि कब पानी की बूंद आए और मुंह में गिरे।

और पुष्पदंत ने भी कहा है कि जो भी महत्वपूर्ण क्षण है उसका मुझे प्रयोग कर लेना है और नहीं करेंगे तो जीवन में और बहुत क्षण तो आएंगे पर वह क्षण नहीं आएंगे। कोई

जरूरी नहीं कि आगे के क्षणों में गुरु साथ में हों या दीक्षा दें।

और मैंने कहा कि अगर एक बार दीक्षा लेने से निश्चिंतता आ जाती है, तो ठीक है नहीं आए तो दूसरी बार लें, तीसरी बार लें। कोई जरूरी नहीं कि एक दीक्षा लेते ही आप एकदम से सनातन धर्म में पूर्णता प्राप्त कर लें।

दत्तात्रेय ने 24 बार दीक्षा ली। राम ने दो बार दीक्षा ली, वशिष्ठ से अलग ली, विश्वामित्र से अलग ली। कृष्ण ने सांदीपन से दीक्षा ली और भी गुरुओं से ली। एक ही गुरु से 108 बार दीक्षा ली।

प्रश्न दीक्षा का नहीं है, प्रश्न है कब ऐसा चिंतन आता है, दृढ़निश्चितंता आती है। शिव महिम्न स्तोत्र का भाव ही यह है कि हम दृढ़निश्चय करें। यों तो आप निश्चय करें तो कल भूल जाएंगे, भूल इसलिए जाएंगे कि आपके ह्रदय में वह आग पैदा नहीं हो रही है। वह ज्वाला पैदा हो और निश्चय कर लें।

कर्तव्य तो चलेंगे ही उनसे बंधे नहीं, मेरी ड्यूटी पुत्र को केवल रोटी देना है और अपने लक्ष्य की ओर चलते रहना है। कोई हलवा पकाकर खिलाने से बेटा आज्ञाकारी होगा ऐसा नहीं है। जितना लाड करेंगे उतनी ही गड़बड़ हो जाएगी।

पत्नी को कहें–क्या तकलीफ है? वह कहेगी–सर दर्द है।

आप कहें ठीक है सिरदर्द है तो सो जा, मैं अपना काम करता हूँ।

फिर सिरदर्द होगा ही नहीं, उसकी जिंदगी में वापस।

मैं ऐसा नहीं कह रहा हूँ कि आप कर्तव्य से भाग जाइए, मैं ऐसा भी नहीं कह रहा हूँ कि आप गृहस्थ से भाग जाइए। घर में रहते हुए संन्यासी रहिए, न किसी के प्रति मोह, न किसी के प्रति आसक्ति, न किसी के प्रति क्रोध, न किसी के प्रति घृणा।

भगवान शिव के समान हम बनें और शिव बनें ऐसा जीवन में जरूरी है। शिव जैसा व्यक्ति तो है ही नहीं, ब्रह्म के बाद सब देवता बने और उन्होंने अपनी परस्नैलिटी निखारी सभी ने। शिव ने अपनी परस्नैलिटी अलग ढंग से बनाई, ब्रह्मा ने अलग ढंग से बनाई।

शिव ने पहले सती से शादी की, उनकी मृत्यु हो गई यक्ष के यज्ञ में, तो पार्वती से शादी की। वे कुछ कमाए नहीं, नौकरी करें नहीं शिव, व्यापार उनके बस की बात नहीं,

बस श्मशान में बैठे रहें।

घर-गृहस्थी वहां और बैठे रहें श्मशान में।

मैं आपकी तुलना कर रहा हूँ उनसे। मकान उनके रहने के लिए नहीं, पार्वती कहें कमा के लाओ कुछ, मैं शाम को बच्चों को खिलाऊं क्या?

दो बच्चे हैं, एक गणपति हैं, गजानन हैं, लम्बोदर हैं, जितना खिलाएं कम है क्योंकि पेट बहुत बड़ा है उनका। कितनी रोटियां उनको खिलाऊं। दूसरा कार्तिकेय जिसके छः मुंह। एक मुंह भरना ही बहुत भारी है, छः-छः मुंह भरने पड़ते हैं।

शिव कहते हैं—बस अपन श्मशान में बैठे हैं, खिलाना हो तो खिलाओ, नहीं खिलाना हो तो मत खिलाओ। हम तो बैठे हैं श्मशान में बिल्कुल निश्चिंत।

और जितना लड़ाई-झगड़ा आपके घर में नहीं है, उतना शिव के घर में है। पार्वती का वाहन शेर है और शिव का वाहन बैल है। शेर और बैल का झगड़ा हो तो वो उधर बैल पकड़े, इधर वो शेर पकड़े।

फिर गणपति का वाहन है चूहा और इनके पास सांप। सांप चूहे को खाए, वो चूहे को बचाए और कार्तिकेय का वाहन है मोर और इनके गले में है सांप, जिसको मोर तुरंत खा जाता है।

शिव न कमाए, न रोटियां खिला सके। दो बच्चे पैदा किए तो महान, जो चालीस-चालीस रोटियाँ खा ले। घर में लड़ाई-झगड़े अलग, उसके बाद भी......

शमशान्यां वासां भवतुं।

शिव कहते हैं—मैं तो श्मशान में बैठा हूँ, तेरी मर्जी हो तो मिल लेना घर की तू जाने, तेरे लड़के जाने, मुझे कोई चिंता नहीं है।

उन्होंने अपनी परस्नैलिटी निखारी और भगवान शिव कहलाए और आप बेकार टेंशन भुगतते रहते हैं कि पत्नी को सिरदर्द है, लड़का कहना नहीं मानता।

आप उन्हें रहने दें, अपने व्यक्तित्व को देखिए, आप हैं तो जिंदगी है इसलिए पुष्पदंत ने भगवान शिव से प्रार्थना की मुझे आप एक बार नहीं तब तक दीक्षा देते रहिए जब तक मेरे मन के विचार समाप्त नहीं हो जाएं, अंदर ज्वाला पैदा हो जाए कि मैं ऐसे स्तोत्र की रचना करूं कि आने वाली पीढ़ियां मेरे व्यक्तित्व को याद रख सके।

और इस प्रकार की अद्वितीयता को प्राप्त कर उन्होंने शिव महिम्न स्तोत्र के 40

श्लोक लिखे जिसके एक-एक श्लोक पर एक-एक ग्रन्थ लिखा जा सकता है और इस प्रकार उन्होंने अपने व्यक्तित्व को निखारा।

आप अपने युग में मार्गदर्शन करना चाहें तो तब कर पाएंगे जब आपका एक व्यक्तित्व बनेगा। कुटिलता से आप नहीं कर पाएंगे, छल और झूठ से नहीं कर पाएंगे, व्याभिचार से नहीं कर पाएंगे, आपमें सत्यता, ईमानदारी और शरीर में फौलाद होना चाहिए।

और यह दीक्षा से ही हो सकता है। दीक्षा का अर्थ है गुरु का शिष्य के अंदर स्थापन होना। तभी उसके व्यक्तित्व का निखार हो सकता है और इस अद्वितीयता को प्राप्त करने के लिए उम्र बाधक नहीं है। सौ साल आप जिएं तो भी समय कम है और बीस साल जीएं तब भी कुछ कर गुजरने को बहुत है।

अभिमन्यु सोलह साल की उम्र में मर गया और अर्जुन 80 साल की उम्र में मरा। दोनों विजयी हुए पर अभिमन्यु जैसी गति अर्जुन नहीं प्राप्त कर पाया। अभिमन्यु जैसा साहस वह नहीं कर पाया। अभिमन्यु श्रेष्ठ बना क्योंकि वह जूझा, उसने संघर्ष किया, वह बैठा नहीं।

और गीता में कुछ है ही नहीं। एक लाइन में गीता को कहें तो गीता का मतलब है–हे अर्जुन तू उठ और काम कर, बाकी मैं अपने आप संभाल लूंगा। तू खड़ा हो जा पैरों पर।

मैं भी वापस गीता समझा रहा हूँ कि आप खड़े हो जाओ एक बार, गुरु आपके पीछे खड़ा है।

संकल्प करना है तो इसी क्षण आपको संकल्प करना पड़ेगा। दृढ़निश्चय करना पड़ेगा कि मुझे यह करना ही है। आपमें, गांधी में, आइंसटीन, लिंकन में, ईसा मसीह में और ब्रह्मा, विष्णु, महेश में कोई अंतर नहीं है। अंतर है तो दृढ़संकल्प शक्ति का अंतर है। चुनौती आएं और मैं कहता हूँ पांच हजार आएं, हम चुनौतियों का सामना करेंगे।

बस पड़े रहे, रोटी खाई, ऑफिस गए, अफसर की झिड़की सुनी, आकर पत्नी को सुना दी, रोटी खाई और सो गए। दूसरे दिन भी यही काम, इसमें चुनौती है ही क्या इस जीवन में आपने किया भी क्या?

इसलिए भगवान शिव की तरह बने, जिनके गुणों का वर्णन ही नहीं किया जा सकता इतनी अद्वितीयता है उनके व्यक्तित्व में। ऐसे आप में गुण हों, दृढ़ निश्चितता हो, गुरु के शब्दों से आप अपने मन को घिसे और आप अद्वितीय बनें, दीक्षाओं के माध्यम से, साधनाओं के माध्यम से, यही मेरी कामना है।

और कोई रास्ता है ही नहीं, आने वाली पीढ़ियों के लिए उच्चता, श्रेष्ठता का कोई रास्ता होगा ही नहीं। गोलियों का रास्ता रहेगा उनके पास। वहीं आपके पास शक्ति का रास्ता होगा, सत्य का रास्ता होगा, दीक्षा और साधना का रास्ता होगा, दूसरे के मन को परिवर्तित करने का रास्ता होगा, वशीकरण का, सम्मोहन का रास्ता होगा, चैतन्यता और ज्ञान का रास्ता होगा।
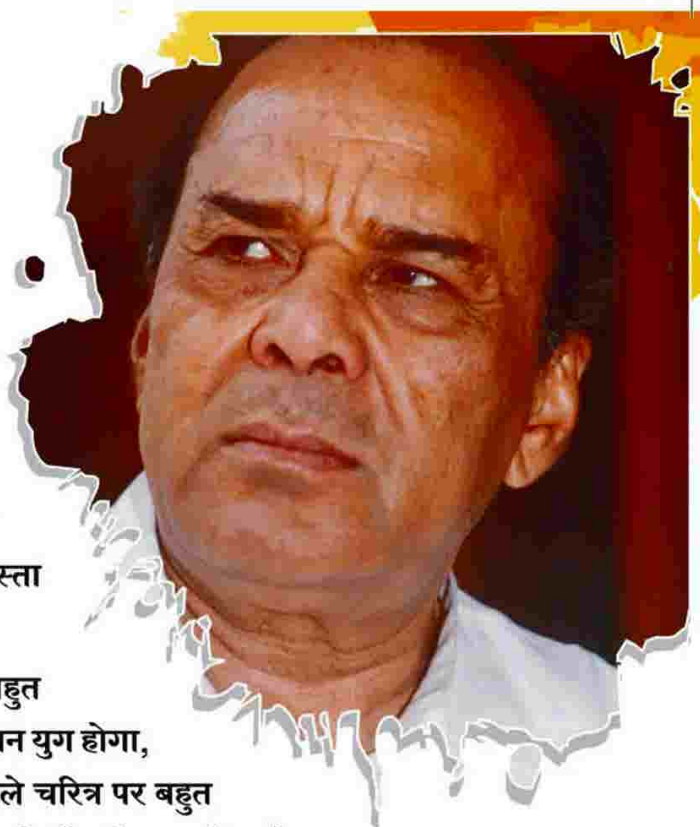
एक बार पार्वती ने कहा कि आने वाले युग में लोग बहुत परेशान और दुखी होंगे। एक कारण होगा कि वह अर्थ प्रधान युग होगा, धन प्रधान युग होगा और आज से सौ-डेढ़ सौ साल पहले चरित्र पर बहुत ध्यान दिया जाता था कि जिसके पास चरित्र है वह सब कुछ है। जिसके पास विद्या है वह सब कुछ है और इन सौ सालों में यह धारणा बदल गई और यह समझा जाने लगा कि जिसके पास धन है वह सब कुछ है। यह भी सही है।

जीवन के सारे अंग अपने आप में पूर्ण होने चाहिए। संन्यासी को भी भोजन करना जरूरी होता है, भगवान शिव ने भी शादी की तो पार्वती जैसी लक्ष्मी की अवतार से शादी की, भगवान विष्णु ने भी शादी की तो सागर मंथन के बाद मोहिनी रूपी लक्ष्मी से शादी की और वे वैभवशाली बने।

भगवान शिव श्मशान में रहते हुए भी कुबेरपति बने। इसलिए युग के अनुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पुरुषार्थ आदमी के जीवन के बताए हैं कि चारों होने जरूरी हैं। धर्म यानि कि अंदर एक धारणा शक्ति होनी चाहिए, धर्म का अर्थ यह नहीं कि हिन्दू या मुसलमान या कोई और। धर्म का मतलब है जो गुरु कहे उसे धारण कर लें।

धारयति स धर्म।

जो गुरु कहे उसके अनुसार करे और गुरु कोई धोखा दे, छल करे अपने स्वार्थ के लिए कुछ करे तो आप उसकी आज्ञा मत मानिये, वह गुरु हो ही नहीं सकता।

गुरु लालजी तजो
तजो चेला, अलसेला
पिता अधर्मी तजो
तजो नालायक बेटा।

अगर पिता अधर्मी है तो उसे भी छोड़ देना चाहिए, पुत्र नालायक हो तो उसे भी

छोड़ देना चाहिए, गुरु लालची हो या शिष्य आलसी हो तो छोड़ देना चाहिए। धर्म का अर्थ यह है। उसके बाद दूसरा पुरुषार्थ, अर्थ बता दिया।

अर्थ का मतलब है धन, वाहन, घर, सुख-सुविधाएं। ऐसा न हो कि लोग आपको कहें कि आप तो गुरु से मिलकर आए हैं और आप खुद भूखे मर रहे हैं कि आपके पास रहने को मकान भी नहीं है। हो सकता है आपके पास मकान नहीं है मगर आप शुरुआत करेंगे तो मकान बन जाएगा। कहीं न कहीं तो शुरू करना पड़ेगा।

काम का अर्थ है शादी करना पुत्र, संतान पैदा करना और अपने जीवन में पूर्ण गृहस्थ का पालन करना। गृहस्थ में रहते हुए पूर्ण संन्यासी रहना कि जो हो रहा है, हो रहा है। आप दुखी मत होइए। कर्तव्य जरूरी है मगर चिंता मत करिये। मैं स्वयं आपके सामने उदाहरण हूं।

और मोक्ष का अर्थ है मुक्ति अर्थात् सभी समस्याओं से मुक्त हो जाएं। न कोई तनाव, न आवश्यकता, न अनिवार्यता। भोजन मिल गया तो मिल गया, नहीं मिला तो नहीं मिला। पैसा हो तो ठीक, नहीं हो तो ठीक, इसे ही मोक्ष कहते हैं।

और जीवन में ये चारों अंग आवश्यक हैं। धर्म तब होगा जब आप रोग मुक्त होंगे। आप रोगी होकर आप धर्म नहीं कर सकते, मंत्र जप नहीं कर सकते, दीक्षा नहीं ले सकते और जीवन का आनन्द नहीं ले सकते। जीवन एक आनन्द की चीज है।

मृत्यु श्रृंगार की चीज है, मृत्यु तो ऐसी है जैसे आदमी का श्रृंगार किया जाता है, जीवन ऐसा हो जो आनन्ददायक हो।

अगर भगवान ने सकल पदार्थ बनाया तो ऐसा हो कि हम उनका प्रयोग करें। इतने पेड़-पौधे, प्रकृति बनाई, खाने के लिए फल बनाए। घूमने के लिए स्थान बनाए, वस्त्र बनाए तो हम उनका आनन्द लें।

ऐसा गुरु भी क्या काम का कि शिष्य गरीब हो, दुखी हो। लोग उंगलियां उठाएं। ऐसा तो गुरु भी बेकार है, उस गुरु पर भी लांछन लगेगा।

आप आनन्द लें, धन कमाएं मगर आप लक्ष्मी के दास मत बनिये, लक्ष्मीपति बनिये। मगर आप हो जाते हैं लक्ष्मी के दास कि लक्ष्मी मिली और तिजोरी में बंद कर दी। अब उसके बाद लक्ष्मी आपका चेहरा देखे नहीं आप उसका चेहरा देखे नहीं। बस इकट्ठे करते रहें, आप मर जाएंगे और बेटे उसको उड़ा देंगे।

आप धन का प्रयोग करें, आनन्द लें और उस धन का सदुप्रयोग करें।

कमाओ तुम और मौज करें बेटे। करना ही नहीं ऐसा। आप खुद खाइए, पीजिए, अपने परिवार को घुमाने ले जाइए, पर अगर संचय करके रख दिये कि मरने के बाद बेटों को दो-दो लाख रुपये दिए, तुम्हारे क्या काम आए?

और इकट्ठा करने में आनन्द ही नहीं है आज 15 लाख रुपये हैं तो कल 16 लाख होंगे। वही रोटी, वही सब्जी बस मन में इतना होगा कि एक लाख बढ गए। ऐसा धन नहीं चाहिए।

दोनों हाथ उलीचिए। जो आए उसका उपयोग करें, मगर सही तरीके से होना चाहिए। होटलों में डांस करने से, डिस्को करने से कुछ लाभ नहीं। मैं यह नहीं कहता आप होटल में मत जाइए, डिस्को मत करिये, मगर एक संन्यासी की तरह जाइए। पैंट पहने हुए भी संन्यासी हो सकते हैं, कोई संन्यासी का ठेका नहीं है कि लंगोट लपेटे हुए ही संन्यासी हो। मैं यह परिभाषा भी बदल रहा हूँ। केवल लंगोट लगाने वाले को संन्यासी नहीं कहते।

अब संन्यासी बनने का मेरा योग है ही नहीं मगर संन्यासी बना तो पैंट टाई पहन कर संन्यासी बनूंगा। लोग कहेंगे तो कहेंगे। मैं खुद चाहता हूँ कि आपको एक बार टाई पैंट पहन कर दीक्षा दूं। देखता हूँ आपकी आँखों में कितना विकार आता है देख लेना चाहता हूँ। आप तटस्थ रहें, आपकी आंख में एक शालीनता हो, आंख में एक गंदगी न हो यह आवश्यक है।

पार्वती ने कहा कि आने वाली पीढ़ियों में रोग होगा। हर व्यक्ति को कोई न कोई रोग होगा। चाहे मानसिक हो, चाहे शारीरिक हो, चाहे तनाव हो, चाहे मन में क्रोध हो।

और यह कहा कि लोग अर्थाभाव से पीड़ित होंगे। सोलह रुपये किलो अन्न होगा तो लोग पीड़ित होंगे ही होंगे। सैकड़ों टैक्स लेने वाले होंगे तो अर्थाभाव होगा ही होगा।

बहुत अच्छे एक अधिकारी हैं कलेक्टर। वो घर में सोफा रखते हैं, नया सोफा खरीदते हैं, उस पर पैबन्द लगाते हैं फिर बैठते हैं उस पर। मैंने पूछा—नया सोफा लाए उस पर यह पैबंद।

उसने कहा—आप समझते नहीं हैं, कई लोग आते हैं गुरु जी, देखते हैं, आजकल मेरे ऊपर इंक्वायरी हो जाएगी गुरुजी इसलिए पैबंदी लगाया है। लाया नया हूं, पर ऐसा कर दिया है।

अब वह पैसा क्या काम का उनका। आप बस निश्चिंत रहें कोई आएगा तो देखा जाएगा। सोफे पर बैठे हैं, तो बैठे हैं, लिख लें सोफा है मेरे पास, कहीं से गुरुजी ने मुझे भेंट दिया था, गुरुजी से पूछ जाकर। कोई आएगा मैं जवाब दे दूंगा।

व्यक्ति दो तरीके से दुखी होगा। मगर भगवान शिव, उनके लिए फिर क्या किया जाएगा। आने वाली पीढ़ियां बहुत दुखी होंगी।

और आप देख लें आज ऐसा ही हो रहा है। आज की विचारधारा में और आज से कुछ वर्ष पहले की विचारधारा में जमीन आसमान का अंतर है। आपके बच्चे समझाने पर भी समझते ही नहीं, दोनों में एक गैप है। उनकी धारणा अलग है, आपकी धारणा अलग है। दोनों में एडजेस्टमेंट हो ही नहीं सकता, संभव ही नहीं है। फिर आप फालतु दुखी हों कि नहीं बेटा ऐसा करना चाहिए। तो उससे कुछ नहीं होगा।

जो कर्तव्य है गृहस्थ का उसका पालन करिए समझाइए, मगर आप उसमें इनवाल्व मत होइए और इसके लिए भगवान शिव ने कहा कि मैं स्वयं गुरु में स्थापित हो कर इसका समाधान करूंगा, पार्वती तुम चिंता मत करो।

और गुरु स्वयं शिवमय होकर के दीक्षा प्रदान करते हैं और यह मैं शास्त्र वचन कह रहा हूँ कोई व्यक्तिगत बात नहीं कह रहा। क्योंकि शास्त्र में कहा है।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।

और यह आज से दस हजार साल पहले का श्लोक है। कल का श्लोक तो है नहीं।

यः गुरु सः शिवः प्रोक्तः
यः शिवः सः गुरु स्मृतः
स याति नरकाम गति।

जो शिव है वही गुरु है, जो गुरु है वही शिव है। इन दोनों में जो भेद समझता है वह नरक यानि दुःख, पीड़ा में जाता है।

और जब गुरु से दीक्षा प्राप्त होगी तो स्वयं ही जीवन के सब विकार समाप्त होंगे ही, धनाभाव, रोग चिंता सब समाप्त होंगे।

जैसा मैंने कहा पहले ही आपका स्वयं का व्यक्तित्व बनना चाहिए और मैंने कहा कि आप क्या है, यह जरूरी है चाहे पुरुष हैं, चाहे स्त्री हैं और व्यक्तित्व का अर्थ है तेजयुक्त हों, ओजस्वी हों।

यह छोटी बात नहीं होगी, ये सब चीजें मिल नहीं सकतीं आपको। यूनिवर्सिटी में नहीं पढ़ाई जाती। आपको यह विद्यालय में नहीं बताया जाता कि आपका व्यक्तित्व बनाना चाहिए। व्यक्तित्व बनेगा तो आप उच्चता तक पहुँच पाएंगे।

और मैंने उदाहरण दिया। सतयुग से लगाकर आज तक का कि जिस आदमी ने अपने व्यक्तित्व के निर्माण का चिंतन किया वही व्यक्ति हमें आज स्मरण है। राम उनके पिता दशरथ, दशरथ के पिता अज से आगे?

चौथी पीढ़ी क्या है पता ही नहीं, उनका नाम ही याद नहीं, क्योंकि उन्होंने खुद के व्यक्तित्व का निर्माण किया ही नहीं और जो व्यक्तित्व का निर्माण करेगा वह तो विद्रोही बनेगा ही।

आपमें भी विद्रोह पैदा हो, आप दीक्षा ले सकें। साधनाएं कर सकें ऐसा ही मैं आशीर्वाद देता हूँ।

पूज्यपाद सद्गुरूदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमालीजी
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)
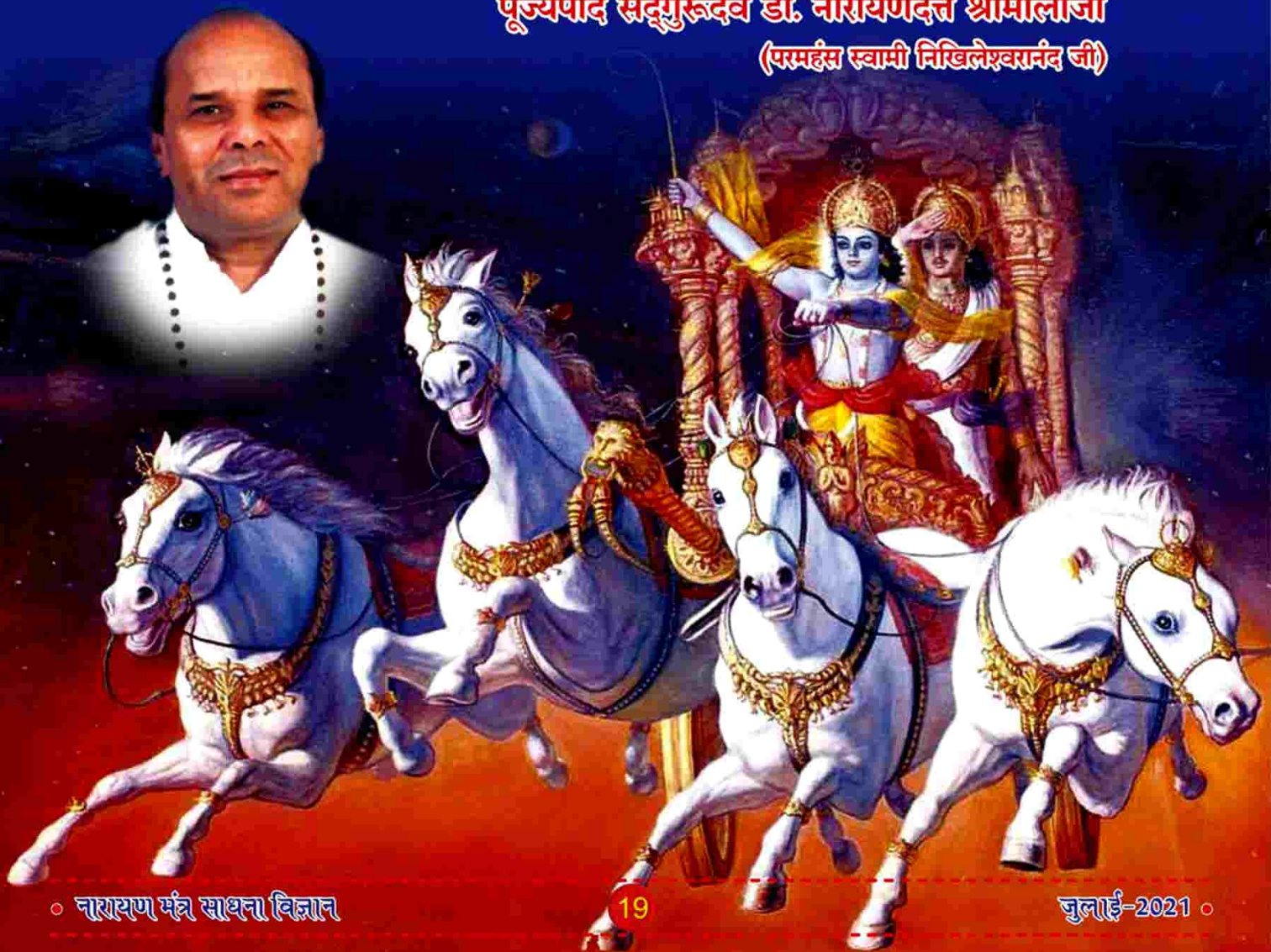
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'

पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है,क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

405/-

गुरु सायुज्य यंत्र

गुरु के बारे में शास्त्रों में कहा गया है :-

|| गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः,
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ||

वास्तव में ही पूर्णता का दूसरा नाम गुरु हैं, अष्ट महासिद्धियां गुरु से ही प्रकट होती हैं, समस्त तीर्थ और देवता गुरु के ही चरणों में समाहित होते हैं, जो अपने आप में ज्ञान स्वरूप, विज्ञान स्वरूप और सत चित्त स्वरूप होते हैं और जो शिष्यों के चित्त में व्याप्त समस्त प्रकार के अंधकार को समाप्त कर उसे पूर्णता देने में सक्षम होते हैं। ऐसे चेतनापुंज स्वरूप सद्गुरु से सायुज्यता प्राप्त करना, उनसे एकाकार होने की क्रिया करना, उनमें लीन होने की क्रिया होना अपने आप में जीवन का सौभाग्य है। जिसने गुरु की सायुज्यता प्राप्त कर ली, उसके लिए फिर शेष रह भी क्या जाता है ? पूर्णता में लीन हो कर पूर्णता ही प्राप्त होती है। ऐसा सौभाग्य आप भी अपने जीवन में घटित कर सकते हैं। इस दुर्लभ अद्वितीय यंत्र को प्राप्त करके।

यह मात्र यंत्र नहीं है, अपितु गुरुदेव का पूंजीभूत स्वरूप है, गुरु की समस्त चेतना का पूंजीभूत स्वरूप है, जिसे अपने पूजा कक्ष में स्थापित कर नियमित उसका सामान्य पूजन कर गुरु से सायुज्य प्राप्त करने का चिंतन करने पर स्वतः ही गुरु की चेतना उस साधक या शिष्य के हृदय में समाहित होने लगती है और वह श्रेष्ठता की ओर अग्रसर हो जाता है।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/- Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें **नारायण मंत्र साधना विज्ञान**

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

भाग्योदय जयंती-06.08.21

जीवन शैशव से निकल कर और यौवन की अठखेलियों से गुजर कर बहुत शीघ्र उस स्थान पर आ जाता है जहां से फिर कर्त्तव्य और जीवन-यापन की समस्या सामने आकर खड़ी हो जाती है। यदि इस स्थिति के लिये व्यक्ति पहले से सतर्क न हो या कोई प्रबन्ध न किया हो, तो उसका सारा जीवन अस्त-व्यस्त होकर रह जाता है।

महालक्ष्मी की भाग्योदय साधना

जीवन में कर्त्तव्य आवश्यक हो सकते हैं,

लेकिन जिस प्रकार से कर्त्तव्य आकर जीवन को ग्रसित कर लेते हैं वह न तो आवश्यक होता है न सहज। बचपन, बचपन के बाद किशोरावस्था, किशोरावस्था के बाद यौवन और इसी यौवन की प्रथम सीढ़ी पर पांव रखते ही कर्त्तव्यों का संसार भी प्रारम्भ हो ही जाता है। स्वयं खुद के भरण-पोषण के साथ-साथ माता-पिता का दायित्व छोटे भाई-बहिनों का परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से दायित्व एवं स्वयं अपने परिवार की जिम्मेदारी–यही लगभग पचहत्तर प्रतिशत व्यक्तियों के जीवन की कथा है।

शेष पच्चीस प्रतिशत में हो सकता है कि उन्हें पैतृक सम्पदा मिली हो, पारिवारिक दायित्व, किन्हीं अन्य सुविधाओं से या तो न हो अथवा सीमित हो, किन्तु फिर भी जीवनयात्रा तो शेष रह ही जाती है।

प्राय: 20-22 वर्ष की अवस्था आते-आते व्यक्ति को अपने भविष्य और भावी जीवन की चिन्तायें आकर घेर लेती हैं। स्व व्यवसाय अथवा नौकरी–इनमें से किसका चुनाव किया जाय, इस बात का द्वंद्व प्रारम्भ हो जाता है। कुछ सौभाग्यशाली होते हैं जिन्हें पैतृक रूप से जीवन-यापन का मार्ग मिल जाता है। घर का व्यवयाय या पैतृक सम्पत्ति मिल जाती है किन्तु सम्पत्ति प्राप्त होना ही जीवन की पूर्णता और सफलता नहीं मानी जा सकती, इसके बाद भी विवाह, खुद का स्वास्थ्य, शत्रु-निवारण, घर की शान्ति जैसे बहुत से पक्ष शेष रह जाते हैं दूसरी ओर सामान्य व्यक्ति को तो प्रारम्भिक बिन्दु अर्थात् धन के उपार्जन से ही अपने जीवन का प्रारम्भ करना पड़ता है।

जीवन के कर्तव्यों और इन आवश्यक प्राथमिक पक्षों को यदि क्षण भर के लिये परे रखकर देखें तो व्यक्ति की अपनी इच्छाओं और भावनाओं का भी संसार होता है और वह संसार ही उसके दैनिक जीवन में सरसता तथा गति का आधार होता है। लेकिन कब जीवन कर्त्तव्य भावना और वास्तविकताओं के बीच गड्ड-मड्ड होकर बीत जाता है इसका पता ही नहीं चलता और जब तक पता लगता है, जीवन में कुछ ठहराव आता है तब तक खुद ही संतान बड़ी हो गई लगती है। पता लगता ही नहीं कि यौवन की उस पहली सीढ़ी के बाद 20-22 वर्ष बीत गये और जीवन के उस चरण तक आने के बाद मन में उमंगें बची हों या न बची हों जीवन में आशा शेष रह गयी हों या न रह गयी हों, कुछ कहा नहीं जा सकता।

एक प्रकार से देखा जाय तो प्राय: पच्चीस वर्ष की अवस्था में कंधों पर कर्त्तव्यों का जो भार लाकर रख दिया जाता है वह फिर मृत्यु के साथ ही उतरता है और उतरता कहां है? व्यक्ति जाते-जाते अपनी संतानों के कंधे पर रखकर चला जाता है, इसका क्या कारण है, इसका क्या उपाय है, यह सोचने के अवसर जीवन में आते ही नहीं क्योंकि धन कमा कर कुछ फुर्सत पायी तो पत्नी की बीमारी सामने आकर खड़ी हो गयी पत्नी स्वस्थ हुई हो तो बेटा पढ़ाई में कमजोर पड़ने लगा उससे निपटे तो कहीं धन फंस गया ज्यों-ज्यों उसको भी निबटाया तो खुद का स्वास्थ्य....

साधक पत्रिका में वर्णित साधनायें पढ़ते हैं, उनका लाभ भी प्राप्त करते हैं किन्तु उनके मन में एक प्रश्न शेष रह जाता है कि जीवन पूरी तरह से क्यों नहीं संवर रहा है? उन्हें शंका होती है कि मैंने अमुक-अमुक साधनायें की, दीक्षायें भी ली किन्तु पूर्णरूप से लाभ नहीं मिल सका और एक प्रकार से उनका सोचना गलत भी नहीं है

जो भी साधना जीवन से दुर्भाग्य मिटा दे वही वास्तव में सौभाग्य प्रदायक साधना है सही अर्थों में भाग्योदय साधना है।
.....और जहां भाग्योदय की बात आती है वहां लक्ष्मी की साधना ही अनिवार्य है, जीवन की प्राथमिक आवश्यकता है।

क्योंकि प्रत्येक जागरूक साधक अपनी ओर से अपनी क्षमता भर प्रयास करता ही है, इसमें कमी केवल यह रह जाती है कि उनके जीवन में प्रत्येक साधना आवश्यक होते हुए भी फल अपने विशेष स्वरूप के अनुसार ही देती है, जबकि जीवन की सफलताएं अनेक पक्षों में निर्मित होती हैं। जीनव के अनेक पक्ष और वे भी पूर्णता से, प्रत्येक साधना नहीं समेट सकती जबकि एक इच्छा के बाद दूसरी इच्छा का जन्म होता ही है, एक स्थिति में सफलता मिलने के बाद दूसरी स्थिति सामने आती ही है और इनकी पूर्ति करना भी कोई दोषयुक्त कार्य नहीं है। जीवन के ऐसे चिन्तन को लेकर योगियों ने वे सूत्र ढूंढने चाहे जो जीवन के आवश्यक सूत्र हैं और उनके साथ ही साथ कोई ऐसी साधना भी प्राप्त करनी चाही जो जीवन के सभी प्रारम्भिक और आवश्यक तत्वों को अपने साथ समेटती हो। उन्होंने अपने निष्कर्षों में पाया कि जीवन के ऐसे पक्ष कुल 14 हैं जिनमें धन प्राप्ति, स्वास्थ्य, पारिवारिक सुख, शत्रु बाधा निवारण, राज्य सम्मान, विदेश यात्रा योग, पुत्र सुख इत्यादि सम्मिलित किये और यह निष्कर्ष निकला कि जीवन में इन चौदह स्थितियों को प्राप्त होना ही जीवन की पूर्णता है जिसे उन्होंने भाग्योदय के नाम से वर्णित किया, जिसके द्वारा जीवन की प्रारम्भिक स्थितियों को सुधारने के साथ ही साथ जीवन की भावी योजनाओं की पूर्ति भी हो सके।

जीवन में साधनायें तो महत्वपूर्ण होती ही हैं उनके साथ ही साथ वे दिवस भी महत्वपूर्ण होते हैं जिनका तादात्म्य साधना विशेष से किया जाय और जब ऐसा सम्भव हो सकता है अर्थात् उचित मुहूर्त का समन्वय उचित साधना से कर दिया जाता है तब तो विशेष कुछ घटित होता ही है। यों तो जीवन में कोई भी साधना कभी सम्पन्न की जा सकती है किन्तु जो साधनायें प्रारम्भ की, आधार एवं एक प्रकार से अंकुरण की साधनायें होती हैं उनके सन्दर्भ में मुहूर्त का महत्व सबसे अधिक होता है। ठीक यही बात उन साधनाओं के सन्दर्भ में भी कही जा सकती है जो सम्पूर्णता की साधनायें होती हैं। क्योंकि प्रारम्भिक साधनायें और सम्पूर्णता की साधनायें–इन दो दशाओं में साधना विशेष का महत्व काल के किन्हीं विशेष क्षणों से पूर्णत: बद्ध होता ही है।

भाग्योदय साधना एक विशिष्ट साधना है, जिसे यदि भाग्योदय जयंती के मुहूर्त पर सम्पन्न किया जाय तो शीघ्र फल प्रदान करती है। सिद्धाश्रम पंचाग द्वारा प्रणीत यह मुहूर्त अत्यन्त उच्चकोटि का मुहूर्त है और जहां सिद्ध योगी इस दिवस का उपयोग किसी उच्चकोटि की साधना को सम्पन्न करने में करते हैं वहीं गृहस्थ व्यक्ति इस दिन का उपयोग भाग्योदय साधना में कर सकते हैं। उच्चकोटि की साधनाओं में प्रवेश लेने से पूर्व, महाविद्या साधना अथवा जगदम्बा साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त करने हेतु भी भाग्योदय साधना सम्पन्न करना अति आवश्यक माना गया है।

इस साधना की मूलशक्ति मां भगवती महालक्ष्मी है और जहां केवल महालक्ष्मी साधना सम्पन्न करने से साधक को धन, ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है वहीं महालक्ष्मी को आधार बनाते हुए इस दिवस की भाग्योदय साधना सम्पन्न करने से उसे सर्वविधि सौभाग्य प्राप्त होता है। एक प्रकार से महालक्ष्मी अपने एक हजार आठ वर्णित स्वरूपों के साथ पूर्ण कृपालु हो जाती है और विशेष यंत्रों के माध्यम से विशेष प्रक्रिया के द्वारा उनको चिरस्थायित्व दिया जा सकता है, जिससे साधक के जीवन में कदम-कदम पर बाधाएं और अड़चनें न आएं।

साधक को चाहिए कि इस दिवस की साधना सम्पन्न करने के लिये समय से बहुत पहले ही सचेत होकर इस
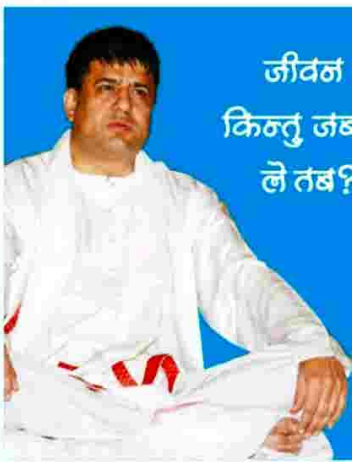
जीवन में कर्त्तव्य आवश्यक हो सकते हैं, किन्तु जब कर्त्तव्य आकर जीवन को ग्रसित कर ले तब?

फिर कब व्यक्ति अपनी इच्छाओं का संसार रच पाएगा, अपने स्वप्नों को पूर्ण कर पाएगा। जिससे जीवन में प्रसन्नता आए।

साधना की सामग्री को प्राप्त कर लें, क्योंकि यह अवसर ऐसा विशिष्ट अवसर है जो वर्ष में केवल एक बार ही घटित होता है। अन्य साधनाएं तो किन्हीं भी शुभ दिवसों या नक्षत्रों में की जा सकती है किन्तु भाग्योदय की यह साधना तो केवल इस दिवस पर ही सम्पन्न की जा सकती है। इस साधना में केवल तीन सामग्रियों की आवश्यकता होती है–पारद श्रीयंत्र, सौभाग्य शंख एवं कमलगट्टे की माला इसके अतिरिक्त इस साधना में किसी विशेष विधि-विधान या पूजन की आवश्यकता नहीं हैं यदि साधक के पास महालक्ष्मी का चित्र हो तो वह उसे मढ़वा कर स्थापित कर दे अथवा महालक्ष्मी के किसी भी स्वरूप का प्राण-प्रतिष्ठित चित्र प्राप्त कर उसे साधना हेतु मढ़वा कर स्थापित कर लें।

साधना दिवस के दिन प्रातः आठ बजे से नौ बजे के मध्य साधना में अवश्य बैठ जाएं और समय को इस प्रकार से निश्चित कर लें कि साधना साढ़े दस के पहले-पहले अवश्य पूर्ण हो जाय। महालक्ष्मी के चित्र के सामने घी का बड़ा दीपक लगाएं कुंकुम, केसर, अक्षत, पुष्प की पंखड़ियां एवं नैवेद्य से उनका पूजन करने के उपरान्त केसर से स्वस्तिक चिह्न अंकित कर उस पर सौभाग्य शंख स्थापित करें और पहले से ही चुनकर रखे चावल के 108 बिना टूटे दानों को मंत्रोच्चार पूर्वक सौभाग्य शंख पर समर्पित करें।

मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ
मम मंदिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

इस पूजन के उपरान्त कमलगट्टे की माला से श्रीयंत्र पर त्राटक करते हुए, निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें।

मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध लक्ष्म्यै नमः।

मंत्र जप के उपरान्त भगवती महालक्ष्मी की आरती करें और प्रार्थना पूर्वक अपने स्थान को छोड़ें। उस सम्पूर्ण दिवस पूजन को स्थापित रहने दें लेकिन ध्यान रखें कि चूहे आदि पूजा स्थान को अव्यवस्थित न करें। सायंकाल गोधूलि के पश्चात् उपरोक्त मंत्र की एक माला जप पुनः करें तथा सौभाग्य शंख पर चढ़ाए गये चावलों तथा पुष्प की पंखुड़ियों को किसी रेशमी कपड़े में बांध लें जो आपके जीवन में स्थायी सौभाग्य के रूप में विद्यमान रहेंगे। सौभाग्य शंख एवं कमलगट्टे की माला को अगले दिन प्रातः विसर्जित कर दें और श्रीयंत्र को किसी भी पवित्र स्थान पर स्थापित कर दें।

सौभाग्य प्राप्ति की यह विशेष सिद्ध सफल साधना किसी भी आयु वर्ग का कोई भी साधक या साधिका सम्पन्न कर सकती है।

साधना सामग्री– 660/-

ज्ञानामृत
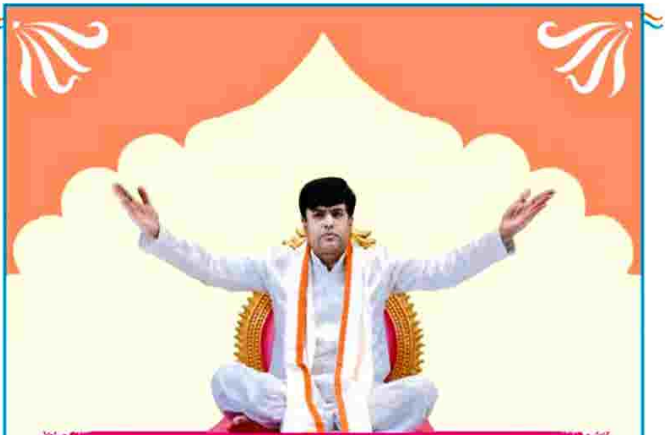
धैर्यंयस्य पिता, क्षमा च जननी, शान्तिश्चिर गेहिनो
सत्यं सूनुरयं, दया च भगिनी, भ्राता मनः संयम।।
शय्या भूमितलं दिशोऽपि वसनं ज्ञानामृतं भोजनः।
येते यस्य कटुम्बिनो वद सखे कस्माद् भयं योगिनः।।

जिसका पिता धैर्य हो, मां क्षमा हो, पत्नी रूप में शांति हो, सत्य जिसका साथी, दया जिसकी बहिन हो, मन का संयम ही जिसका भाई हो, पूरी पृथ्वी जिसकी शैय्या हो, दशों दिशाएं जिसके पहिनने के वस्त्र हों तथा ज्ञानरूपी अमृत ही जिसका भोजन हो, जिसके ऐसा समृद्ध कुटुंब हो, उस योगी को इस पृथ्वी पर क्या भय हो सकता है?

स्तब्धस्य नश्यति यशो विषमस्य मैत्री;
नष्टेन्हियस्य कुलमर्थ परस्य धर्मः।
विद्याफलं व्यसनिनः कृपणस्य सौख्यं;
राज्यं प्रमत्त सचिवस्य नराधिपस्य।।

अकर्मण्य अथवा आलसी मनुष्य का यश नष्ट हो जाता है, विषम स्वभाव वाले से मित्रता नष्ट हो जाती है, धन के लोभी का धर्म नष्ट हो जाता है, व्यसनों में फंसने वाले की विद्या नष्ट हो जाती है, कंजूस का सुख नष्ट हो जाता है, मतवाले मन्त्री युक्त राजा का राज्य नष्ट हो जाता है।

शोको नाशयते धैर्यं, शोको नाशयते श्रुतम्।
शोको नाशय तेसव नास्ति शोक समोरिपुः।।

शोक धैर्य को नष्ट कर देता है, शोक (चिन्ता) पढ़ी-लिखी विद्या को नष्ट कर देता है, शोक जीवन का सब कुछ नष्ट कर देता है, अतः शोक के समान जीवन में अन्य कोई दूसरा शत्रु नहीं है।

▪ गुरु पूर्णिमा
या किसी भी गुरुवार से

गुरुतत्व

को धारण करने की साधना है

साधना

भारत के अलग-अलग प्रान्तों में अलग-अलग दिवसों में गुरु पूर्णिमा दिवस होगा, जिसका रेखाचित्र इस प्रकार है

गुरु पूर्णिमा
23/24 जुलाई 2021

23 जुलाई

24 जुलाई

क-ख रेखा से बायीं ओर गुरुपूर्णिमा (व्यास पूजा) 23 जुलाई 2021, को और इस रेखा से दायीं ओर 24 जुलाई, 2021 ई॰ को होगी।

> ध्यानमूलं गुरोर्मूति: पूजा मूलं गुरो: पदम
> मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरो: कृपा

जीवन की क्षुद्रता, न्यूनता

को समाप्त करने में गुरु ही सर्व समर्थ होते हैं, अत:साधक, शिष्य को यथासम्भव प्रयास कर गुरु साधना करनी ही चाहिए, क्योंकि किसी भी तंत्र प्रयोग की तीव्रता गुरु साधना से अधिक हो ही नहीं सकती

जब शिष्य अपने हृदय, देह, प्राण, रोम प्रतिरोम में

गुरु का स्थापन कर लेता है, तो उसके रक्त के कण-कण से गुरुदेव की ध्वनि उच्चरित होने लगती है। गुरु स्वयं उसके हृदय में आकर स्थापित हो जाते हैं। ऐसा तब होता है जब शिष्य अपने छल, कपट, चालाकी आदि को समाप्त कर देता है...

और ऐसा तब होता है जब वह अपने हाड़-मांस के शरीर को मल-मूत्र से न भर कर, गुरु के प्रेम से सराबोर कर लेता है।

यह साधना तो 'स्व' को समाप्त करने की है और जैसे-जैसे वह इस साधना में अग्रसर होगा, उसी क्रम में गुरु उसके हृदय में स्थापित होने लगेंगे, गुरु का स्थापन तो वहीं हो सकता है, जहां रिक्तता होगी, क्योंकि गुरु हाड़-मांस का शरीर नहीं वरन् ब्रह्माण्ड की विराटता को समेटे हुए उसके हृदय में स्थापित होते हैं और यही विराटता वह अपने शिष्य को भी प्रदान कर देते हैं।

शिष्य को तो प्रारम्भिक अवस्था बनानी पड़ेगी। दिखाना पड़ेगा कि उसमें क्षमता है, कि वह विराटता को धारण कर सकता है उसे अपनी योग्यता सिद्ध करनी ही पड़ेगी, उसे अर्जुन की भांति संधान का अभ्यास करना ही पड़ेगा, कृष्ण की भांति गुरु की सेवा करनी ही पड़ेगी। गुरु के प्रति विश्वास व्यक्त करना ही पड़ेगा, गुरु के लिए समर्पण बनाना ही होगा, क्योंकि इसके बिना वह गुरु के हर कार्य को तौलने लगता है, गुरु के कार्य को अपनी बुद्धि की कसौटी पर रखकर उसे देखता है। वहां वह शिष्य नहीं आलोचक बनने लगता है, वह गुरु की क्रिया को नहीं समझ सकता है, विराटता को समझने के लिए विराटता ही धारण करनी पड़ेगी। जब शिष्य पूर्णतया गुरु के अनुकूल होगा तभी वह उनके कार्यों को समझ सकता है।

इसी अग्नि से शिष्य अपने विकारों को समाप्त करने में सफल होता है और जब वह अपने स्व को समाप्त कर लेता है, तो स्वयं ही उस विराटता को स्थापित कर लेता है। यह स्वयं में ही इतनी क्षमता प्राप्त कर लेता है, कि शनैः-शनैः विराटता को ग्रहण करता हुआ वह स्वयं पूर्ण हो जाता है।

यही क्रिया, तो पूज्य सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमालीजी ने करवाई हैं। आज अधिकांश लोगों का चिन्तन अत्यधिक स्वार्थपूर्ण हो गया है, वह स्व से हटकर कुछ सोचना ही नहीं चाहते, यदि वह बहुत अधिक विस्तारित है, तो अपने आस-पास के वातावरण तक ही सीमित रहते हैं, इससे अधिक वह कुछ करने की हिम्मत नहीं कर पाते हैं। सद्गुरुदेव ने उनकी इस क्षुद्रता को समाप्त कर उन्हें स्व से ऊपर उठाने की क्रिया सिखलाई और यह सोच उन्होंने अपने लिए नहीं वरन समाज में व्याप्त उस क्षुद्रता से परिपूर्ण चिन्तन को समाप्त करने के लिए शिष्यों-साधकों में पैदा की है।

उनका चिन्तन मात्र सभी के कल्याण करने की भावना थी-शिष्यों में किसी प्रकार की अपूर्णता न रह जाए। वे इसके लिए, अपनी शक्ति, अपनी ऊर्जा को शिष्य में प्रवाहित करने के लिए प्रयत्नशील रहते थे। उन्होंने हमेशा प्रयास किया, कि कहीं उस चिंगारी को कहीं कोई हवा का झोंका बुझा न दे, समाज कहीं उस चिंगारी पर रेत न डाल दे। दीक्षाओं और साधनाओं के माध्यम से वे निरन्तर प्रयत्नशील रहे, कि उनकी जलाई हुई चिंगारी बुझने न पाए और आज भी वह सारे कार्य उसी प्रकार से गतिशील हैं।

शिष्य धर्म ऐसा है, कि यदि चिंगारी लगी है तो एक दिन आग भी अवश्य धधकेगी, परन्तु इसके लिए तो शिष्य को स्वयं ही प्रयत्न करना चाहिए-परम्परा तो यही है, परन्तु गुरुदेव तो समस्त परम्पराओं को समाप्त करते हुए अपने शिष्यों को विराटता प्रदान करने की क्रिया में आज भी उसी प्रकार गतिशील है।

वे निरन्तर प्रयत्नशील हैं, सहयोग आपको देना है, क्योंकि गुरुदेव ने इस क्रिया को इतना सरल एवं सहज बना दिया है, कि शिष्य अपने अल्प प्रयासों से

ही विराटता को धारण करने में समर्थ हो जाता है और पूर्णता की ओर अपने कदम बढ़ा देता है।

परन्तु समाज तो अपनी प्रवृत्ति के अनुसार किसी भी दिव्य क्रिया को सहजता से होने ही नहीं देता है, वह हर चिंगारी पर रेत डालने को व्यग्र रहता है, क्योंकि यदि विराटता प्राप्त हो जाएगी तो अहं समाप्त होने लगेगा और व्यक्ति का अहं अपनी समाप्ति स्वीकार नहीं कर पाता है। परन्तु पूज्य गुरुदेव ने भी यह निश्चय कर रखा है, कि वे किसी भी चिंगारी को बुझने नहीं देंगे और उसे समर्थ बना देंगे, जिससे कि वह पूर्णता को धारण कर सके। लेकिन इसके लिए तो निरन्तर गुरुदेव से सम्पर्क स्थापित करना पड़ेगा।

यदि गुरु निश्चय कर लेते हैं, तो उसे पूरा करने की सामर्थ्य भी रखते हैं। वह ऐसी परिस्थितियां भी निर्मित कर लेते हैं, कि उनकी लगाई हुई चिंगारी एक आग में परिवर्तित हो सके। गुरुदेव अपने शिष्यों को पूर्णता प्रदान कर देना चाहते हैं और इस क्रिया को करने में संलग्न भी है, पर प्राप्त करने के लिए हमें आगे तो आना ही पड़ेगा। यदि रेत के ढेर में दबने में ही हमें प्रसन्नता है, तो फिर इसमें न्यूनता तो हमारी ही है। आनन्द तो बह रहा है, यदि प्राप्त करना है, तो आगे बढ़ना ही पड़ेगा, पहुंचना ही होगा उस स्थान तक जहां पर यह क्रिया निरन्तर चल रही है।

इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए जिस साधना की विशिष्टता है, उसे यहां प्रस्तुत किया जा रहा है, इसे आप गुरु पूर्णिमा के दिन अवश्य ही सम्पन्न करें।

गुरु पूजन विधि

प्रातः स्नानादि नित्य क्रिया को समाप्त कर शुद्ध भावनाओं से पूजा स्थल में जो पहले से ही स्वच्छ कर लिया गया हो, पूर्व या उत्तर दिशा की ओर आसन बिछा कर बैठे। अपने सामने एक चौकी पर सफेद वस्त्र बिछा कर उसमें सद्गुरुदेव का प्राण प्रतिष्ठित चित्र स्थापित करें।

सामग्री–'निखिलेश्वरानन्द दिव्य चैतन्य सिद्धि यंत्र', 'गुरु प्रत्यक्ष दर्शन गुटिका', 'गुरु प्राण संजीवनी माला'।

पूजन से पूर्व शुद्ध घी का दीपक जला लें, घी का दीपक पूजन काल में सदैव साधक के दाहिनी ओर रखें। निम्न मंत्र से दीपक का पूजन रोली और अक्षत (चावल) से करें–

ॐ दीप ज्योतिषे नमः
ॐ दीपस्थ देवतायै नमः

फिर प्रार्थना करें–

भो दीप! देव रूपस्त्वं कर्म साक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावदत्र स्थिरो भव।।

इसके बाद दोनों हाथ जोड़कर अपने इष्टदेव का स्मरण करें–

सर्वमंगल मांगल्यं वरेण्यं वरदं शुभम्।
नारायण नमस्कृत्य सर्वकर्माणि कारयेत्।।

पवित्रीकरण–बाएं हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से अपने ऊपर जल छिड़कें–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वास्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सः बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

गुरु प्रणाम–दोनों हाथ जोड़ें–

ॐ ऐं गुरुभ्यो नमः ॐ ऐं परम गुरुभ्यो नमः
ॐ ऐं परात्पर गुरुभ्यो नमः ॐ ऐं पारमेष्ठि गुरुभ्यो नमः

जीवन्यास–अपने हृदय पर दाहिना हाथ रखकर अपनी प्राण प्रतिष्ठा करें–

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः मम प्राणाः इह प्राणाः।
आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः मम जीव इह स्थितः।
आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः
मम सर्वाणि इन्द्राणि, वाङ् मनः चक्षुः त्वक्
श्रोत्र घ्राण जिह्वा इहैव आगत्य सुखं चिरं तिष्ठतु।

गणपति का ध्यान करें–

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि
तन्नो दन्ति प्रचोदयात्
ॐ गं इदं स्नानं गणेशाय नमः
ॐ गं एष गन्धः सचन्दनं सपुष्पं गणेशाय नमः
ॐ गं एष धूपः साक्षतं गणेशाय नमः
ॐ गं एष दीपः नैवेद्येन सहितं गणेशाय नमः।

दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम कर लें।

गुरु चित्र को स्नान करावें–

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।

चित्र व यंत्र को पोंछ दें।

ॐ ऐं इदं स्नानं श्री गुरु चरणेभ्यो नमः। (स्नान)
ॐ ऐ एष गन्धः श्री गुरुचरणेभ्यो नमः। (तिलक करें)
ॐ ऐं इदं पुष्पं श्री गुरुचरणेभ्यो नमः। (पुष्प चढ़ायें)
ॐ ऐ एष धूपः श्री गुरुचरणेभ्यो नमः। (धूप दिखायें)
ॐ ऐं एष दीपः श्री गुरुचरणेभ्यो नमः। (दीप दिखाएं)
ॐ ऐं इदं नैवेद्यं समर्पयामि। (नैवेद्य अर्पित करें)

गुरु चित्र के सामने एक थाली रखें। अष्ट गन्ध या कुंकुम से त्रिकोण बना लें। मध्य में ॐ लिखकर 'निखिलेश्वरानन्द दिव्य चैतन्य सिद्धि यंत्र' को स्थापित करें। 'गुरुत्व प्रत्यक्ष गुटिका' दाहिनी ओर स्थापित करें।

स्नान–यंत्र को स्नान करावें।

स्नानं समर्पयामि श्री गुरु चरणेभ्यो नमः।

इसके बाद निम्न मंत्र बोलते हुए कुंकुम से चावल रंगकर बाएं हाथ में लेकर यंत्र पर चढ़ावें–

ॐ गुं गुरवे नमः
ॐ गुं परम गुरवे नमः
ॐ गुं परात्पर गुरवे नमः
ॐ गुं पारमेष्ठि गुरवे नमः
ॐ गुं अनन्तात्मने नमः
ॐ गुं परमात्मने नमः
ॐ गुं ज्ञानात्मने नमः
ॐ गुं अनन्ताय नमः
ॐ गुं पारिजाताय नमः
ॐ गुं ऐश्वार्यय नमः
ॐ गुं पद्माय नमः
ॐ गुं आनन्दकन्दाय नमः
ॐ गुं संविल्लाभाय नमः
ॐ गुं प्रकृतिप्रियाय नमः
ॐ गुं ज्ञानाय नमः
ॐ गुं आधार शक्तये नमः

ॐ ऐं एष सांगाय सपरिवाराय सर्वशक्ति मयाय गुरुदेवाय निखिलेश्वराय नमः।

पीठ पूजा–निम्न मंत्र बोलकर यंत्र पर गन्ध और पुष्प चढ़ावें।

ॐ ह्रीं एते गन्ध पुष्पे पीठ देवताभ्यो नमः।
ॐ ह्रीं एते गन्ध पुष्पे पीठ शक्तिभ्यो नमः।
ॐ ऐं इदं पुष्पं ब्रह्माण्डस्वरूपाय निखिलेश्वराय नमः।
ॐ ऐं एष धूपः ब्रह्माण्डस्वरूपाय निखिलेश्वराय नमः।
ॐ ऐं एष दीपः ब्रह्माण्डस्वरूपाय निखिलेश्वराय नमः।
ॐ ऐ इदं नैवेद्यं ब्रह्माण्डस्वरूपाय निखिलेश्वराय नमः।
ॐ ऐं इदं आचमनीयं श्री निखिलेश्वराय नमः।
ॐ ऐं इदं तात्बूलं श्री निखिलेश्वराय नमः।।

आवरण पूजा–निम्न मंत्रों से यंत्र पर सुगन्धित पुष्प चढ़ावें–

ॐ ऐं एष गन्धपुष्पे निखिलेश्वरानन्द देवताभ्यो नमः
ॐ ऐं एष गन्धपुष्पे परम गुरुभ्यो नमः
ॐ ऐं एष गन्धपुष्पे परात्पर गुरुभ्यो नमः
ॐ ऐं एष गन्धपुष्पे पारमेष्ठि गुरुभ्यो नमः।

इसके बाद 'गुरु प्राण संजीवनी माला' से 21 माला मंत्र जप करें–

मंत्र

।। ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः।।

OM PARAM TATVAAY NAARAAYANNAAY GURUBHYO NAMAH

जप समर्पण–

ॐ गुह्याति गुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत् कृतं
जपं सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर।

इसके बाद आरती करें तथा प्रसाद वितरण करें। साधना समाप्ति के बाद यंत्र को पूजन स्थान में स्थापित कर दें। माला तथा गुटिका को जल में विसर्जित कर दें।

न्यौछावर- 570/-

निखिलेश्वर आरती

जय संन्यासी अग्रणी जय शान्तं रूपं।
जय-जय संन्यस्त्वं मा जय भगवद् रूपं।।
ॐ जय-जय-जय निखिलं...

हिमालये निवसति मुक्तं प्रकृति त्वां मध्ये।
विचरति गिरिवर गहने गह्वरसहि मुदितां।।
ॐ जय-जय-जय निखिलं...

शान्तं वेशं भव्यं अद्धितीय रूपं।
व्याघ्रं वज्र विहन्तुं वक्षस्थल त्वं त्वं।।
ॐ जय-जय-जय निखिलं...

वेद पुराण शास्त्रं ज्योतिष महितत्त्वं
मंत्र-तंत्र उद्धारय साध्यं सहि सहितं।।
ॐ जय-जय-जय निखिलं...

ऋषि दिव्यं देह भस्मं रुद्राक्षं सहितं।
विचरति निशिदिन प्राप्त्ये धन्य मही युक्तं।।
ॐ जय-जय-जय निखिलं...

सिद्धाश्रम सप्राणं मंत्रं सृष्टत्वं।
लक्षं लक्ष निहारत अद्धय अधि युक्तं।।
ॐ जय-जय-जय निखिलं...

भव्य विशालं नेत्रं भालं तेजस्वं।
लक्षं शिष्यं ध्यायति निखिलेश्वर गुरुवं।।
ॐ जय-जय-जय निखिलं...

संगीत युक्तं आरार्तिकं पठत् यदि श्रृणुतं।
गुरु मोद वर प्राप्तुं शिष्यत्वं पूर्णं।।
ॐ जय-जय-जय निखिलं...

जय संन्यासी अग्रणी जय शान्तं रूपं।
जय-जय संन्यस्त्वं मा जय भगवद् रूपं।।
ॐ जय-जय-जय निखिलं...

भारतीय धर्म, साधनाएं और गुरु-तत्त्व

गुरु तत्त्व का जप प्रत्येक जीव निरन्तर करता ही रहता है।

श्वास के धारण करने एवं निक्षेप के द्वारा वह निरन्तर हंस मंत्र का जप भी करता रहता है किन्तु इस रहस्य को केवल सद्गुरु ही अनावृत्त कर सकते हैं और इस प्रकार शिष्य के दिव्य जीवन के मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

भारतीय धर्म-साधनाओं में ब्रह्म-तत्त्व को सर्वोपरि माना गया है, किन्तु इस ब्रह्म-तत्त्व का ज्ञान सद्गुरु के मार्ग-निर्देशन के बिना प्राप्त नहीं हो सकता। यही कारण है, संत कबीर के समक्ष जब गुरु और गोविन्द प्रकट होते हैं तो वे गुरु को ही प्रथम प्रणाम करना श्रेयस्कर समझते हैं।

विश्लेषण की दृष्टि से संसार का कोई भी कार्य विशिष्ट पथ-प्रदर्शक के बिना सफल नहीं होता। ऐसा सच्चा पथ-प्रदर्शक या गुरु साधक को ही प्राप्त होता है। साधक को परिभाषित करते हुए ऋग्वेद में कहा गया है-

श्राम्यन्तीति श्रवण तपसन्ते इत्यार्थ।

अर्थात् जो श्रम करता है, कष्ट सहता है तथा तप करता है और अपने पुरुषार्थ पर विश्वास करता है, वही सच्चा साधक है।

श्रीमद्भागवत में भी कहा गया है-

श्रवण वातरशना आत्म-विद्या विशप्दा।

-अर्थात् जो साधक उपवास में निराहार रहकर स्वाभाविक स्वच्छ वायु में जप-तप एवं स्वाध्याय में लीन रहते हैं, वे 'वातरशना' ही आत्म-विद्या में प्रवीण होते हैं।

वेदों, उपनिषदों और पुराणों के रहस्य इतने गंभीर हैं कि सामान्य बुद्धि से उनका वैज्ञानिक विश्लेषण नहीं किया जा सकता। उल्लिखित मंत्र में 'वातरशना' शब्द का प्रयोग किया गया है। 'वातरशना' का अर्थ है- वायु-सेवी। साधना करते-करते भौतिक शरीर की एक ऐसी स्थिति आती है, जब साधक केवल वायु पर ही निर्भर हो जाता है। आज के वैज्ञानिक युग में जो लोग यह तर्क करते हैं कि एकांत जंगलों में निवासित हमारे ऋषि बिना खाद्य-पदार्थों के कैसे शक्तिमान् रहकर साधना करते थे, उन्हें भागवत् में उल्लिखित 'वातरशना' का रहस्य समझने का प्रयास करना चाहिये। इस युग मे सर्वार्थ सिद्ध-पुरुष डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली अपने जीवन की दिव्य-साधनाओं के काल में इस 'वातरशना' का प्रयोग सिद्ध कर चुके हैं। उनका तो यह भी मत है कि 'समाधि' की अवस्था में शरीर को प्राण-वायु के बिना भी अक्षुण्ण रखा जा सकता है।

इस तरह की दुस्तर साधनाएं जो लोग सम्पन्न करते हैं, गुरु की उत्प्रेरणा से ही करते हैं। केवल ग्रंथों का अध्ययन कर संसार में कोई भी न तो ज्ञानी हुआ है, न किसी साधना में सफल हुआ है। हमारे देश में इसीलिये 'गुरु-सेवा' का महत्व प्रतिपादित किया गया है। जो साधक विनम्रतापूर्वक समर्पित भाव से

गुरुदेव निद्रा, स्वप्न, ध्यान, समाधि, तन्द्रा किसी भी रूप में शिष्य के शरीर में सूक्ष्म रूप से समाहित होकर परिमार्जन करते हैं। यही दीक्षा है, जिससे शिष्य में एक विलक्षण शक्ति का संचार होता है

निराभिमान होकर गुरु-सेवा करता है, उसे ही गुरु-कृपा (सिद्धि) प्राप्त होती है।

लौकिक और पारलौकिक दोनों ही विद्याओं के क्षेत्र में पग-पग पर गुरु की आवश्यकता पड़ती है, पारलौकिक विद्या के क्षेत्र में तो विचलित होने की अधिक सम्भावना होती है। ऐसी स्थिति में गुरु की शक्ति ही साधक को सम्बल प्रदान करती है। मानवी सभ्यता के अनादि-काल से इस देश में गुरुकुलों की परम्परा रही है, जहां ऐसे-ऐसे साधक हुए, जिनके तेज के सामने सूर्य भी निष्प्रभ हो गया। उन्होंने अपनी चेतना का परिष्कार, ईश्वरत्व के उस स्तर तक किया था, जहां उनके इंगित मात्र से सृष्टि में हलचल मच जाती थी। गुरु-तत्त्व का रहस्य यही है कि वह साक्षात् ईश्वर है। हमारी आर्य-परम्परा में जिस गुरु को ईश्वर के समकक्ष माना गया था, उसे उससे भी सर्वोपरि कहा गया तो इसका कारण यह है कि गुरु में कुछ ऐसे असाधारण गुण होते हैं कि सामान्य मानवों से उनकी तुलना नहीं की जा सकती। हमारे देश में गुरु के गुणों का वर्णन करते हुए निम्नांकित बातें शास्त्रों में कही गई हैं :-

1. जिस का स्वभाव शुद्ध हो, 2. जो जितेन्द्रिय हो, 3. जिसे धन का लोभ न हो, 4. जो वेद-शास्त्रों का ज्ञाता हो, 5. जिसे सत्य का दर्शन हो चुका हो, 6. नित्य जप-तपादि साधनों को लोक-संग्रहार्थ करता हो, 7. जो परोपकारी और दयालु हो, 8. सत्यवादी एवं शांतिप्रिय हो, 9. योग-विद्या में निपुण हो, 10. जिसमें शिष्य के पाप-नाश की शक्ति हो, 11. जो भगवान का भक्त हो, 12. स्त्रियों के प्रति जो अनासक्त हो, 13. क्षमावान हो, 14. धैर्यशाली हो, 15. चतुर हो, 16. अव्यसनी हो, 17. प्रियभाषी हो, 18. निष्कपट हो, 19. निर्भय हो, 20. पापों से असम्पृक्त हो, 21. सदाचारी हो, 22. सादगी से जीवन व्यतीत करता हो, 23. धर्मप्रेमी हो, 24. जीवनमात्र का सुहृद हो, 25. अपने शिष्य को पुत्र से बढ़कर प्यार करता हो।

ऐसे महत् गुणों से विभूषित गुरु-तत्व की साधना अत्यन्त दुस्तर है। गुरु-तत्व का आसन सहस्रार-कमल में माना गया है। इस गुरु-तत्व को **'हंस-मंत्र'** से जागृत किया जाता है और यही मोक्ष का द्वार है। **'अनंत फल-तंत्र'** के अनुसार-

हंसात्मिकां भगवती जीवो जपति सर्वदा।
हंकारेण बहिर्याति सकारेण विशेत् पुनः।।
अस्याः सम्बोधमात्रेण जीवन्मुक्तो भवेन्नरः।

सिद्धान्त तो यही है कि गुरु-तत्व का जीव निरन्तर जप करता है। यह **'हंस-मंत्र'** ही जीवन धारण का रहस्य है।

सच्चा गुरु इस रहस्य को ही अनावृत्त करता है और शिष्य के दिव्य-जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है। दीक्षा के क्षेत्र में जो लोग विशेषज्ञ हैं, वे जानते हैं, गुरु के स्पर्श, नेत्र-विक्षेप, स्वप्न में अवतरण, मंत्र-निर्देश आदि से शिष्य में एक विलक्षण शक्ति का संचार होता है। इसे भी **'शक्तिपात'** की दीक्षा-पद्धति के नाम से जाना जाता है।

'शक्तिपात' दीक्षा-पद्धति का मूलाधार है - कुंडलिनी जागरण। योगियों के अनुभवों ने संसार को एक ऐसी रहस्यमय शक्ति का पता दिया है, जो ऊर्जा के रूप में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। मनुष्य देह में वही कुंडलिनी है, योगियों ने अपने अनुभवों से व्याख्या की है, कि कुण्डलिनी की धारा विद्युत की तरह सुषुम्ना नाड़ी में दौड़ती रहती है, किन्तु यह क्रिया तभी होती है, जब कुण्डलिनी मूलाधार चक्र से जाग्रत होकर चैतन्य होती है और ऊर्ध्वगामी होती है। पुराणों में जो शेषनाग की कल्पना मिलती है, वह कुंडलिनी की ब्रह्मांड-व्याप्ति का ही पर्याय है। मानव-शरीर में स्थित **'व्यष्टि कुंडलिनी'** जीवन की दिव्यता का प्रमाण है। यह कुंडलिनी यदि जागृत होकर षट्चक्रों का भेदन कर सहस्रार में प्रवेश कर जाये तो मानव को अमृत की प्राप्ति हो जाती है। यह भौतिक शरीर ही तब दिव्य हो जाता है और अनेक चमत्कार सहज ही सिद्ध हो जाते हैं।

विज्ञान चमत्कारों को संदेह की दृष्टि से देखता है, किन्तु कभी वह दिन आ सकता है, जब वैज्ञानिक आत्मा, सूक्ष्म-शरीर और कुंडलिनी जैसे तत्वों पर व्यापक अन्वेषण करें। इन पंक्तियों के लेखकों का मत है कि **'व्यष्टि शरीर'** में यदि कुंडलिनी शक्ति का अजस्त्र स्त्रोत है तो **'समष्टि शरीर'** में वह सतत् जाग्रत रहकर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को संचालित करने वाली महाशक्ति है। प्राणि-जगत में वही जीवन है, वही विद्युत की प्रभा है, धरती के गर्भ में ज्वालामुखी, समुद्रों के भीतर वड्वाग्नि है, वनस्पति जगत में वही रस है। सम्पूर्ण अंतरिक्ष उसी के आकर्षण में बंधा है, यह

धीरे धीरे रे मना

धर्म और अध्यात्म का विषय मानव और मानव से भी अधिक मानव मन से ही होता है। मनुष्य के जीवन में श्रेयता लाना – यही धर्म का सार है, चाहे वह किसी भी रूप से आए। यह श्रेयता न केवल एक समुदाय में आये अपितु यह सभी में आये, यही वास्तविक अध्यात्म है। इसे और भी अधिक स्पष्टता से कहा जाए, तो एक प्रकार की आह्लाद सभी के मन में विकसित हो, यही सारभूत तथ्य है।

जो धरती तप रही होती है, उस पर पानी की यदि एक-दो बूँदें पड़ भी जाए, तो उस धरती की तपिश कम नहीं होती अपितु भाप का एक झोंका उठकर उमस और बढ़ा देता है। तब क्या प्रकृति एक-दो बूँदे देकर ही अपना कार्य समाप्त कर देती हैं?

नहीं! वह एक के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी . . .यह क्रम तब तक जारी रखती है, जब तक कि धरती भींग न जाए और उसकी तृप्ति, सोंधी महक बनकर फूट न उठे।

यह मानव मन भी एक प्रकार की धरती ही तो है। जब इसे स्नेह और प्रेम का जल नहीं मिलता, तो शुष्क हो जाता है, अनुपजाऊ हो जाता है और जिस प्रकार सूखी, वर्षा जल को आतुर धरती में गहरी दरारें पड़ जाती हैं, ठीक उसी तरह इसमें भी कुंठाओं, नीरसताओं और विषमताओं की गहरी दरारें पड़ जाती हैं।

बीज के अंकुरित होने से लेकर वृक्ष के बनने के मध्य में निरंतर सुरक्षा की आवश्यकता होती है, पोषण की आवश्यकता होती है।

साधक का पोषण होता है 'ध्यान' से और यह सुरक्षा मिलती है
उस 'मंत्र-जप' से,
जिसका उपदेश सद्गुरुदेव के श्रीमुख से प्राप्त होता है।

तब क्या व्यक्ति के आसपास के लोग उसके इस अभाव की पूर्ति नहीं कर सकते? क्या उसकी पत्नी, पुत्र-पुत्री, माँ-बाप, भाई-भगिनी इत्यादि प्रेम का जल देकर उसे बचा नहीं सकते? आखिर वह इन्हीं के साथ अपने अस्तित्व को जोड़कर तो अपने जीवन का ढांचा खड़ा करता है, अपनी पहचान बनाता है। शायद नहीं। क्योंकि इन सभी संबंधों के पास वह अक्षय स्रोत है ही नहीं, जिससे प्रेम की अविरल धारा बह सके। इन सभी के पास देने के लिए प्रेम की केवल कुछ बूँदे ही होती हैं, जो तपते हुए तवे पर पड़ी एक बूँद के समान 'छन' की आवाज के साथ विलुप्त हो जाती है। साथ ही ये संबंध जिन प्रेम की बूँदों को देते भी हैं, उसके साथ उनका अपना हित जुड़ा होता है, वे प्रत्येक बूँद का हिसाब रखते हैं और समय आने पर उसका हिसाब भी परोक्ष-अपरोक्ष रूप से माँग भी लेते हैं।

इसी कारणवश लौकिक प्रेम में स्निग्धता नहीं होती, पूर्णता का आभास और तृप्ति नहीं होती। हम अपनी बाह्य चेतना के साथ तो छलावा कर सकते हैं, किन्तु अंतर्मन सब कुछ खुली आँखों से देखता-परखता रहता ही है और इसी दोहरी मानसिकता में जीते हुए व्यक्ति असमय तनाव व व्याधियों का ग्रास बन जाता है। यदि यही सत्य न होता, तो यह युग अनेक बीमारियों और समस्याओं पर विज्ञान की सहायता से विजय प्राप्त करने के बाद मानसिक व्याधियों की चपेट में न होता। जिसे जिजिविषा या Vitality कहते हैं, वह दिन-प्रतिदिन समाप्त प्राय न हो रही होती।

धर्म और अध्यात्म का विषय मानव और मानव से भी अधिक मानव मन ही होता है। धर्म या अध्यात्म कुछ कर्मकाण्ड या व्याकरण मात्र नहीं है। अंततोगत्वा मनुष्य के जीवन में श्रेयता लाना - यही धर्म का सार है, चाहे वह किसी भी रूप से आए। यह श्रेयता न केवल एक समुदाय में आये अपितु यह सभी में आये, यही वास्तविक अध्यात्म है। इसे और भी अधिक स्पष्टता से कहा जाए, तो एक प्रकार का आह्लाद सभी के मन में विकसित हो, यही सारभूत तथ्य है।

गुरु का कार्य ठीक एक माली की ही तरह है।
शिष्य को जितनी चिंता अपने विकास की होती है,
गुरुदेव को उससे कहीं अधिक होती है।

यह सारभूत तथ्य तभी विकसित हो सकता है, जब प्रेम की कुछ बूँदे नहीं, कोई एक झोंका नहीं, अपितु एक के बाद एक लहर आती रहे। यह कार्य केवल ईश्वर ही सम्पन्न कर सकते हैं और मूर्त रूप में इसी कार्य को वे गुरु रूप में सम्पन्न करते रहते हैं। केवल ऐसे ईश्वर रूपी गुरुदेव का ही धैर्य असीम हो सकता है और वे ही अक्षय प्रेम जल के स्वामी हो सकते हैं।

केवल वे ही जानते हैं, कि प्रारंभ में जो बूँदे विलीन हो गई हैं, वे वास्तव में विलीन नहीं हुई हैं, अपितु एक विशिष्ट प्रक्रिया का अंग बन गई हैं। कभी न कभी तो ऐसा होगा ही, कि इसका मन संतृप्त हो जाएगा और इसके मन में जो बीज पड़े हैं - सुन्दर, सुदृढ़ वृक्षों के, वे अंकुरित

बीज विकसित होकर पूर्णता प्राप्त करेंगे।

ये बीज होते हैं गुरुदेव द्वारा प्रदत्त दीक्षाओं के बीज, जिनमें जीवन की अपार संभावनाएं छिपी होती हैं। अब तो विज्ञान भी इस तथ्य को स्वीकार करने लगा है, कि इस मानव जीवन में अपार संभावनाएं हैं और यह भी स्वीकार करने लग गया है कि प्रत्येक स्थिति को तर्क की कसौटी पर परखना ही वैज्ञानिकता की आधारभूमि नहीं हो सकती।

गुरु का कार्य ठीक एक माली की ही तरह है। शिष्य को जितनी चिंता अपने विकास की होती है, गुरुदेव को उससे कहीं अधिक होती है। उन्हें प्रतिपल यह उद्वेलित रखती है, कि जो बीज मेरे शिष्य के अंदर पड़े हैं – ज्ञान के, चेतना के, सुसंस्कारों के – वे व्यर्थ न चले जाएं और वे ही इसके अंकुरण के प्रयास भी करते हैं। केवल अंकुरण ही नहीं, पूर्ण सघन वृक्ष बनाने की सीमा तक वे चेष्टारत रहते हैं।

जिस प्रकार माली एक-एक वृक्ष से अनोखी आत्मीयता विकसित कर लेता है, वही क्रिया गुरुदेव की भी होती है। माली जब बगीचे में जाता है, तो वह एक-एक वृक्ष को सहलाता है, पुचकारता है, खाद और पानी की व्यवस्था को तो देखता ही है, साथ ही यह भी ध्यान रखता है, कि यदि किसी वृक्ष में समय से पहले ही फल-फूल आने लग गए हों, तो उन्हें काट-छांट दे, क्योंकि छोटा पौधा बोझ नहीं सह सकता।

ठीक इसी तरह गुरुदेव भी सतत् देखते रहते हैं, कि क्या कोई पौधा (शिष्य) समय से पूर्व परिपक्व तो नहीं होने लग गया?

यह एक अत्यंत लम्बी प्रक्रिया है और निरंतर धैर्य का अवलम्ब लिये रहना पड़ता है। केवल कई घड़े पानी उलट देने से पौधा शीघ्र विकसित नहीं हो जाता। वह अपनी प्राकृतिक क्रिया और नियमों के अधीन ही होता है –

धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ-सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।।

ऋतु आने से पहले यदि संयोगवश कोई फल लग भी जाए, तो वह बेस्वाद और फीका ही होता है। ऋतु आने पर पका फल ही पुष्ट एवं सुगंधित होता है।

पौधा न तो असमय विकसित हो सकता है न ही होना चाहिए, केवल इस मध्यवर्ती काल में अर्थात् अंकुरित होने से लेकर वृक्ष के बनने के मध्य में निरंतर सुरक्षा की आवश्यकता होती है, पोषण की आवश्यकता होती है। यह पोषण होता है ध्यान से और यह सुरक्षा मिलती है उस मंत्र जप से, जिसका उपदेश सद्गुरुदेव के श्रीमुख से प्राप्त होता है।
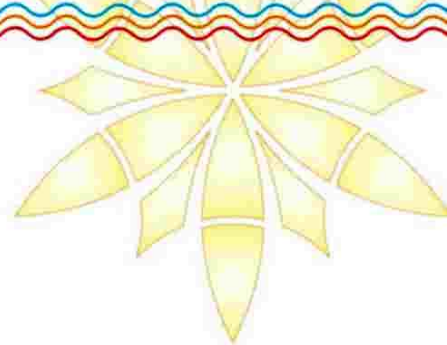
कई ऋतुएं आती हैं और जाती हैं और शनैः शनैः पौधा गर्मी, बरसात, सर्दी सभी कुछ सहने की आदत डाल लेता है और तब वह प्रकृति का एक दृष्टा या उसके आघात सहन करने वाला क्षुद्र प्राणी नहीं होता, अपितु उसका अंग ही बन जाता है। प्रकृति फिर उसी से परिभाषित होती है और ऐसे दृढ़ पौधे अर्थात् वृक्ष का सौन्दर्य ही अद्भुत होता है। उसमें वह रंग और उछाल होती है, जो शीशे के घरों में उगाये जाने वाले दिलकश पौधों में नहीं होती।

प्रश्न यह उठता है, कि इस सारी प्रक्रिया में, इस कष्टदायक यात्रा में वृक्ष को क्या प्राप्त होता है? इसका अत्यंत सहज उत्तर है, कि वह जो किसी को छाया देने का माध्यम बने, क्या खुद ही एक अनोखी मस्ती में नहीं डूब जाता। इसी को तो शास्त्रों में निर्विचार मन, ध्यानातीत अवस्था, आनन्द जैसे विश्लेषणों से व्यक्त करने का प्रयास किया गया है। मन के तराजू पर तौल कर देख लीजिए, कि क्या इस उन्मुक्तता के बिना किसी भौतिक सुख का कोई अर्थ है?

शिष्य धर्म

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मृ़ल मपरं महितां विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

शिष्य क्या है? क्या केवल मुंह से जय गुरुदेव कहने से या फूल माला चढ़ाने से या चरण स्पर्श करने से व्यक्ति शिष्य हो जाता है? सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी के अनुसार ये तो मात्र गुरु भक्ति की अभिव्यक्ति के साधन मात्र हैं। शिष्य तो व्यक्ति तब होता है, जब उसमें कुछ विशेष गुण उत्पन्न होते हैं। क्या हैं वे गुण? आइए जानें।

- शिष्य और अनुयायी में बहुत अंतर होता है। अनुयायी केवल गुरू की क्रियाओं को दोहराना अपना कर्तव्य समझता है जबकि शिष्य केवल गुरू की क्रियाओं को दोहराता नहीं, वह गुरू से ज्ञान प्राप्त करता है तथा अपने ही मार्ग पर आगे बढ़ता है। इस चिंतन के साथ कि गुरू की शक्ति उसे प्रेरित कर रही है।
- शिष्य किन्हीं धर्म के नियमों या किसी पंथ या सम्प्रदाय से बंधा नहीं होता। वह जीवन में बढ़ता है या कुछ करता है तो अपनी चेतना से प्रेरित होकर।
- शिष्य को निरन्तर यह एहसास होता है कि उसे घिसे-पिटे रास्तों पर नहीं चलना है, उसे जीवन में कुछ अद्वितीय बनना है और वह भी जानता है कि अद्वितीयता की कुंजी है गुरू द्वारा प्रदत्त चेतना तथा वह निरन्तर उसे प्राप्त करने की ओर अग्रसर होता रहता है।
- शिष्य के लिए गुरू की ओर से श्रेष्ठ उपहार कोई बड़ाई के दो शब्द नहीं, प्रशंसा नहीं, कोई पुरस्कार या कीमती वस्तु नहीं। उसके लिए तो श्रेष्ठ उपहार होता है गुरू का आशीर्वाद जो कि गुरू के मुख से तब प्रस्फुटित होता है जब गुरू देख-परख लेता है कि शिष्य चेतना प्राप्त करने के योग्य हो गया है।
- शिष्य का धर्म कोई गुरू पद तक पहुंचना नहीं है। वह तो एक सतत क्रिया है। जब चेतना का बीज शिष्य में अंकुरित होता है, तथा वृक्ष बनता है तो स्वयं गुरूत्व का प्रादुर्भाव हो उठता है। उसके लिए उसे कोई घोषणा नहीं करनी पड़ती और न ही गुरू होने का आडंबर ही करना पड़ता है। यह गुरूत्व तो स्वयं अन्य लोगों को फिर अपनी ओर आकृष्ट करने लगता है।
- मनुष्य एक भूमि मात्र है जिस पर यदि सही परिस्थितियां हो तो शिष्यत्व को बीजरोपित किया जा सकता है और वही बीज एक दिन गुरूत्व रूपी वृक्ष बन जाता है। परंतु तभी बनता है जब उस भूमि पर श्रद्धा, समर्पण, विश्वास की खाद डाली जाए, जब उसे प्रेम रूपी जल से सींचा जाए। अगर उस भूमि में इन सबका अभाव रहता है तो वह मरूभूमि मात्र होकर रह जाती है जहां गुलाब के सुगंधित पुष्प नहीं केवल कंटीली झाड़ियां ही उग पाती हैं।

- जो भी मंत्र या साधना मैं तुम्हें देता हूं वह एक पूंजी है और संग्रहणीय रहे, आने वाली पीढ़ियों के लिए। उनको ये मंत्र, ये साधना कोई नहीं दे पाएगा। इसलिए धरोहर के रूप में तुम्हारे पास रहे तो एक महत्वपूर्ण कार्य हो पाएगा।
- और यदि आप साधना करते भी हैं तो उसमें यंत्र, माला या साधना की सामग्री की आवश्यकता है ही। जैसे यह सामग्री है वैसे ही तुम्हारे आँख हैं, नाक हैं, कान हैं, हाथ हैं, पांव हैं। यदि उनकी तुम्हारे जीवन में अनिवार्यता है तो साधना सामग्री की भी तुम्हारे जीवन में अनिवार्यता है।
- बाकी अन्य सामग्री जैसे जलपात्र, कुंकुम, अक्षत की अनिवार्यता नहीं है, हो तो उसका उपयोग करें और नहीं है तो ये सब वस्तुएं प्रकृति में है और उस प्रकृति से लेकर के हम मानसिक पूजन सम्पन्न कर सकते हैं।
- यदि आप हिमालय में साधना करेंगे तो वहां कुंकुम, अक्षत, धूप, दीप, पुष्प, नैवेद्य मिलेगा नहीं और अनिवार्य भी नहीं है। उससे बस तुमको एक विश्वास होता है कि मैंने कुंकुम लगाया भगवान को और भगवान खुश हो जाए। मैंने कुछ भगवान को दिया, यह अहं भी खड़ा हो जाता है। तुम्हारा यह अहं हटेगा, तुम्हारा अंह टूटेगा तभी तुम सही आध्यात्मिक धरातल पर खड़े होंगे।
- गुरू बनना कोई मामूली क्रिया नहीं होती। गुरू का अर्थ है जो शिवत्व प्राप्त व्यक्तित्व हो, जो शिव के समान समाज के जहर को पीता हुआ, शिष्यों के जीवन में अमृत का संचार करे, जो शिष्यों के पापों, विकारों और कमियों को अपने ऊपर ओढ़ता हुआ उनको उच्चता प्रदान कर सके।
- गुरू को सब कुछ समर्पित कर देने का अर्थ यह नहीं कि अपना धन, अपना घर, अपनी संपत्ति गुरू के नाम कर दें। अगर गुरू यह सब चाहता है तो वह गुरू नहीं हो सकता। वह तो एक भिखारी है और जो स्वयं भिखारी है वह भला तुम्हें दे भी क्या सकता है। गुरू को सब कुछ समर्पित करने का अर्थ है अपने दोष, अपना अविश्वास, अपना अहंकार उनके चरणों में समर्पित कर देना।
- सीस उतारे भू धरे तो पयसे घर माहि, जो अपना सिर उतार कर यानी अपने तर्क, विचार, छोड़कर गुरू के चरणों में झुक जाता है, वह साधनाओं में और जीवन में श्रेष्ठता प्राप्त कर सकता है। केवल चरण स्पर्श करने से श्रद्धा और विश्वास नहीं होता। वह तो होता है जब शिष्य अपने तर्क और अपने स्वयं के विचारों को छोड़कर गुरू के प्रति नमन होता है।
- केवल हाथ का स्पर्श करने से दीक्षा या शक्तिपात नहीं हो जाता। यह तो केवल एक बाहरी क्रिया है। शक्तिपात का अर्थ है कि गुरू भीतर से एक चेतना का प्रवाह करें जो उंगलियों या नेत्रों के माध्यम से शिष्य के शरीर में प्रवेश कर उसकी आत्मशक्ति को जाग्रत करे। कोई भी अपने को गुरू कहकर या हाथ का स्पर्श कर शक्तिपात नहीं कर सकता। जो स्वयं चेतना हीन है जो स्वयं अपनी आत्मशक्ति की अनुभूति नहीं कर सका है वह कैसे शक्तिपात कर सकता है ? जिसको शक्तिपात का अर्थ ही न पता हो वह कैसे शक्ति का प्रवाह कर सकता है।

श्रावण मास में पूर्ण मनोकामना सिद्धि

निश्चित मनोकामना पूर्ण सिद्धि

भिक्षावृत्तिं चर पितृवने भूतसंगर्भभेदं
विज्ञातं ते चरितमखिलं विप्रलिप्सोः कमालिन्
(अप्पय)

हे भगवान शिव ! हे स्वामी! आप चाहे भिक्षावृत्ति का आश्रय लेकर एक अभिनय करें अथवा भूत-प्रेत, पिशाचों के संग श्मशानों में वास करें किन्तु हे कपालिन ! मेरी दृष्टि में आपका ऐश्वर्य अब छुपा नहीं रह गया है। मैं यह जान चुका हूं कि त्रिमूर्ति सहित इस समस्त जगत के स्वामी आप ही हैं

भगवान शिव योगी रूप में ही प्रकट हुए हैं किन्तु उनका स्वरूप पूर्णता का प्रतीक हैं।

**स्वर्णिम लहराती जटा उनकी व्यापकता का सूचक है,
जटा में स्थित गंगा कलुषता नाश की तथा चन्द्रमा अमृत का देवता है।**

गले में लिपटा सर्प काल स्वरुप है अर्थात् काल पर वश करने के कारण ही वे मृत्युंजय हैं, त्रिशूल तीन प्रकार के कष्टों दैहिक, दैविक, भौतिक के विनाश का सूचक है। व्याघ्र चर्म मन की चंचलता के दमन का सूचक है, नन्दी रुपी धर्म पर वे आरुढ़ होने के कारण ही धर्मेश्वर हैं और शरीर पर भस्म लपेटे हुए पूर्ण निर्लिप्तता के प्रतीक हैं ऐसे ही सम्पूर्ण देव की आराधना कर साधक अपने जीवन को संवार सकता है।

भगवान शिव जहां ऐश्वर्य देने में समर्थ हैं

मां भगवती पार्वती की कृपा से

श्रेष्ठ गृहस्थ जीवन, योग्य वर की प्राप्ति, अखण्ड सौभाग्य जैसे फल प्राप्त होते हैं।

सर्वथा निर्लिप्त और निराकार भगवान शिव पूर्ण रूप से विरक्त होते हुए भी सम्पूर्ण अर्थों में गृहस्थ का प्रतिनिधित्व करते हैं और इसी कारणवश जहां वे योगियों के अधीश्वर हैं वहीं गृहस्थों के भी जीवन के आधार हैं केवल अपने वरदायक स्वरूप के साथ ही नहीं वरन साथ में मां भगवती पार्वती, कार्तिकेय एवं गणपति सभी तो वरदायक ही हैं इसी से भगवान शिव की साधना सम्पूर्ण अर्थों में गृहस्थ की साधना है क्योंकि एक शिव साधना से ही चार साधनाओं का संयुक्त फल प्राप्त हो जाता है। भगवान शिव जहां ऐश्वर्य देने में समर्थ हैं मां भगवती पार्वती की कृपा से श्रेष्ठ गृहस्थ जीवन, योग्य वर की प्राप्ति, अखण्ड सौभाग्य जैसे फल प्राप्त होते हैं, वहीं भगवान गणपति की विघ्न विनाशकता है और वहीं भगवान कार्तिकेय का वह अद्भुत तेज और बल जिससे किसी भी पुरुष के जीवन में अद्वितीय सौन्दर्य, वीरत्व समाहित हो सकता है।

श्रावण का महीना प्रत्येक साधक के लिए अत्यन्त प्रिय और महत्वपूर्ण माना गया है, जो सही अर्थों में साधक हैं, वे तो पूरे वर्ष भर इस माह का इन्तजार करते रहते हैं और जो अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति चाहते हैं, वे पहले से ही तैयारी कर लेते हैं, जिससे कि इस माह में सम्पन्न होने वाली साधना का पूरा-पूरा लाभ उठा सके।

जीवन में अनेक प्रकार की समस्याएं होती हैं समाज के अलग-अलग वर्ग की अलग-अलग आवश्यकताएं होती हैं किन्तु जिस प्रकार से शिव का परिवार सभी विरोधाभाषों को समेटे एक सम्पूर्णता का प्रतीक है उसी प्रकार श्रावण मास की यह साधना जीवन की विभिन्न विरोधाभाषी स्थितियों का निदान करने में समर्थ है। उदाहरण के लिए परिवार का मुखिया विभिन्न जिम्मेदारियों के साथ आय प्राप्ति के लिए चिन्तित रहता है। पत्नी अपने अक्षुण्ण सौभाग्य की कामना करती है, किशोर आयु वर्ग के बालक-बालिकाओं को विद्या प्राप्ति की समस्या होती है, वहीं युवा वर्ग के साथ विवाह की, सुखद गृहस्थ जीवन, शत्रु नाश, राज्य सम्मान इत्यादि स्थितियों का समाधान भी इसी साधना से प्राप्त होता है।

भगवान शिव का स्वरूप शक्ति युक्त होने के कारण सर्वाधिक प्रभावशाली और साधक की मनोवांछा पूर्ण करने वाला है। इसी से जहां छोटे से छोटे ग्राम में शिवालय की स्थापना मिलती है वहां कोई भी स्त्री गौरा-पार्वती के आराधना के बिना अपने जीवन को सम्पूर्ण मानती ही नहीं। **पुरुष यदि कामना करता है कि उसका पुत्र भगवान श्री गणपति के समान बल, बुद्धि से युक्त हो तो वहीं स्त्री की कामना रहती है कि उसका पुत्र कार्तिकेय जैसा सौन्दर्यवान और वीर हो।** ये प्रमाण है किस प्रकार सम्पूर्ण शिव परिवार जनमानस में पैठा हुआ है। जिस प्रकार जहां शिव है वहीं शक्ति हैं ठीक उसी प्रकार जहां श्री गणपति हैं वहीं लक्ष्मी हैं, जहां श्री कार्तिकेय हैं वहीं भगवती सरस्वती हैं इसी से इस साधना को सम्पूर्ण साधना कहा गया है।

साधना सामग्री-

श्रावण मास में सम्बन्धित साधना करने के लिए निम्न सामग्री की आवश्यकता होती है, जो कि मंत्र सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठा युक्त है, वास्तव में ही यह सामग्री अपने-आप में दुर्लभ और महत्वपूर्ण है।

1. मनोकामना पूर्ति - **शिव सिद्धि यंत्र**।
2. **लक्ष्मी वर वरद**।
3. शत्रु संहारक **महाकाल गुटिका**।
4. **सर्व कार्य सिद्धि गुटिका**।
5. **रुद्राक्ष माला**।
6. कायाकल्प **गोमती चक्र**

मुहूर्त-

श्रावण मास अपने-आप में सिद्धि मास माना जाता है, इसलिए इस महीने में समय या मुहूर्त आदि की आवश्यकता नहीं होती, दिन या रात में किसी भी समय में साधना प्रारम्भ की जा सकती है और सफलता पाई जा सकती है।

भगवान शिव का स्वरूप शक्ति युक्त होने के कारण सर्वाधिक प्रभावशाली और साधक की मनोवांछा पूर्ण करने वाला है। इसी से जहां छोटे से छोटे ग्राम में शिवालय की स्थापना मिलती है वहां कोई भी स्त्री गौरा-पार्वती के आराधना के बिना अपने जीवन को सम्पूर्ण मानती ही नहीं।

साधना कौन करे-

इस साधना को पुरुष या स्त्री, बालक या बालिका कोई भी कर सकता है, इसके लिए किसी भी प्रकार का कोई प्रतिबन्ध नहीं है।

अन्य सामग्री-

उपरोक्त पैकेट के अलावा कुछ अन्य सामग्री की आवश्यकता होती है, जिसकी पहले से ही व्यवस्था कर लेनी चाहिए-

1. आसन, कोई भी रंग का हो, 2. जल पात्र, 3. गंगाजल, यदि हो तो, 4. चांदी या स्टील की प्लेट, 5. कुंकुम (रोली), 6. चावल, 7. केशर, 8. पुष्प, 9. बिल्व पत्र, 10. पुष्प माला, 11. दूध, दही, घी, चीनी, शहद अनुमान से, 12. नारियल, 13. मौली अथवा कलावा, 14. यज्ञोपवीत, 15. अबीर -गुलाल, 16. अगरबत्ती, 17. कपूर, 18. घी का दीपक, 19. नैवेद्य हेतु दूध का प्रसाद, 20. पांच फल, 21. इलायची।

इसके अलावा यदि घर में पंचपात्र, अर्घ्यपात्र, घण्टी, शंख, अगरबत्ती स्टैण्ड आदि हो तो उसकी भी व्यवस्था कर लें।

साधना प्रयोग-

सर्वप्रथम स्नान कर शुद्ध सफेद धोती पहन कर पूर्व की ओर मुंह कर आसन पर बैठ जाएं, यदि सम्भव हो तो अपनी पत्नी को भी अपने दाहिने हाथ की ओर आसन पर बिठा दें, फिर अपनी चोटी को गांठ लगावें और बाएं हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से अपने पूरे शरीर पर निम्न प्रोक्षण पढ़ते हुए जल छिड़कें जिससे कि शरीर पवित्र हो-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

फिर सामने जल का कलश चावल की ढेरी बना कर उस पर रख दें और उसके चारों तरफ कुंकुम या केशर की चार बिन्दियां लगा लें और उसमें निम्न मंत्र पढ़ते हुए जल भरे-

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जले स्मिन सन्निधं कुरु।।
पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्यास्सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि पूजाकाले सदा मम।।

फिर उस कलश में से जल लेकर संकल्प करें-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु श्रीमद्भागवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणः द्वितीय परार्द्धेश्वेतवाराह कल्पे वैवस्तमन्वन्तरे अष्टविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे (अपने शहर का नाम लें) **नगरे श्रावण मासे सोमवासरे मम** (अपना नाम व कामनाओं या इच्छाओं का नाम लें) **अमुक कामना सिद्धयर्थं साधना करिष्ये।**

इसमें जिन-जिन कार्यों की पूर्ति का विवरण दिया है या आपकी जो भी इच्छा है, उसका उच्चारण कर सकते हैं या मन में बोल सकते हैं।।

गणेश पूजन-

फिर सामने स्टील या चांदी की प्लेट में कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर गणपति को स्थापित करें, यदि गणपति नहीं हो तो एक सुपारी रखकर उसे गणपति मानकर उस पर जल चढ़ाकर पोंछकर, केशर लगाकर सामने नैवेद्य एवं फल रख दें, पुष्प चढ़ायें और फिर हाथ जोड़कर बोलें-

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।

फिर गणपति को किसी अलग स्थान पर स्थापित कर दें और सामने पात्र में **'मनोवांछित कामना सिद्धि'** पैकेट में से **'मनोवांछित कामना सिद्धि यंत्र'** को स्थापित करें, इससे पहले ही भगवान शिव के प्रामाणिक चित्र को फ्रेम में मंढ़वाकर रख देना चाहिए और उसे जल से धो कर पोंछ कर, केशर लगाकर, पुष्प माला पहना देनी

जहां शिव है वहीं शक्ति हैं ठीक उसी प्रकार जहां श्री गणपति हैं वहीं लक्ष्मी हैं, जहां श्री कार्तिकेय हैं वहीं भगवती सरस्वती हैं इसी से इस साधना को सम्पूर्ण साधना कहा गया है।

चाहिए।

पात्र में **मनोवांछित कामना पूर्ति शिव सिद्धि यंत्र** के साथ-साथ **लक्ष्मी वर वरद,** शत्रु संहारक **महाकाल गुटिका, सर्व कार्य सिद्धि गुटिका, रुद्राक्ष माला,** कायाकल्प **गोमती चक्र** को भी रख देना चाहिए।

फिर शुद्ध जल में थोड़ा सा कच्चा दूध गंगाजल मिलाकर 'नम: शिवाय' मंत्र का उच्चारण करते हुए इन सब पर जल चढ़ाएं, पतली धार से लगभग पांच मिनट तक चढ़ाते रहें, साथ ही दूध, दही, घी, शहद, शक्कर मिलाकर पंचामृत से भी स्नान करावें फिर शुद्ध जल से धो लें, फिर इन सभी विग्रहों को बाहर निकाल कर शुद्ध वस्त्र से पोंछ लें और अलग पात्र में स्थापित कर लें, तत्पश्चात् इन सभी विग्रहों पर निम्न मंत्र पढ़ते हुए केशर और कुंकुम लगावें।

नमस्सुगन्धदेहाय ह्यवन्ध्यफलदायिने।
तुभ्यं गन्धं प्रदास्यामि चान्धकासुरभन्जन।।

इसके पश्चात् भगवान शिव पर और इन सभी यंत्रों पर अबीर, गुलाल और अक्षत चढ़ावें तथा उन्हें पुष्प और पुष्पमाला समर्पित करें।

तत्पश्चात् सामने अगरबत्ती व दीपक जलाकर नैवेद्य रखें तथा फल भी समर्पित करें। इसके बाद श्रद्धायुक्त दोनों हाथ जोड़कर निम्न स्तुति का पाठ करें।

वन्दे देवउमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशुनापतिम्।।
वन्दे सूर्यशशांक वह्नि नयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।

इसके बाद **रुद्राक्ष माला** से मंत्र जप करें। इसमें रुद्राक्ष माला का सर्वाधिक महत्व है, इसमें ग्यारह माला जप इन यंत्रों के सामने करना आवश्यक है।

ऊपर जो पूजन क्रम समझाया हुआ है, इन चारों सोमवारों में पूजा-विधान तो समान ही है जो ऊपर दिया गया है, पर इन चारों सोमवारों के लिए मंत्र अलग-अलग हैं जो कि निम्न प्रकार से है-

- **26.07.21** **प्रथम सोमवार** को सम्पन्न किया जाने वाला मंत्र जप

।। ॐ महाशिवाय वरदाय ह्रीं ऐं काम्य सिद्धि रुद्राय नम:।।

- **02.08.21** **द्वितीय सोमवार** को सम्पन्न किया जाने वाला मंत्र जप

।। ॐ लक्ष्मी प्रदाय ह्रीं ऋण मोचने श्रीं सर्व सिद्धिं देहि देहि शिवाय नम:।।

- **09.08.21** **तृतीय सोमवार** को सम्पन्न किया जाने वाला मंत्र जप

।। ॐ रुद्राय शत्रु संहारय क्लीं कार्य सिद्धाय महादेवाय फट्।।

- **16.08.21** **चतुर्थ सोमवार** को सम्पन्न किया जाने वाला मंत्र जप

।। ॐ भवायदेवदेवाय सर्वकार्य सिद्धिं देहि देहि कामेश्वराय नम:।।

ये सभी मंत्र अद्वितीय और महत्वपूर्ण हैं। यह हम लोगों का सौभाग्य है कि हमारे जीवनकाल में ऐसा महत्वपूर्ण अवसर उपस्थिति हुआ है जिसका हम पूरा-पूरा लाभ उठा सकते हैं।

प्रत्येक सोमवार को मंत्र जप करने के बाद इन सभी यंत्रों को अलग पात्र में रख देना चाहिए और नित्य इनके सामने सुबह-शाम अगरबत्ती व दीपक लगाकर दिन में एक बार **'ॐ नम: शिवाय'** मंत्र की एक माला अवश्य फेरनी चाहिए।

22.08.21 को श्रावण पूर्णिमा है, अत: इस दिन इस सिद्धि किए हुए यंत्रों को या तो पूजा स्थान में ही लाल वस्त्र बिछाकर स्थापित कर देना चाहिए या घर में किसी स्थान पर रख देना चाहिए। यदि सम्भव न हो तो समुद्र या नदी में विसर्जित किया जा सकता है, पर ज्यादा अच्छा यही होगा कि इन्हें अपने पूजा स्थान में रख दें या घर में किसी पवित्र स्थान पर स्थापित कर दें।

भगवान शिव तो सर्वाधिक दयालु और तुरन्त वरदान देने वाले महादेव हैं, अत: इन प्रयोगों एवं साधनाओं का फल तुरन्त प्राप्त होता है और साधक शीघ्र ही मनोवांछित सफलता प्राप्त करने में सफल हो पाता है।

इस प्रकार के प्रयोग के लिए **रुद्राक्ष माला** का सर्वाधिक महत्व है।

साधना सामग्री- 660/-

शत्रु बाधा निवारण एवं वशीकरण सिद्धि प्रदायक

प्रत्यंगिरा साधना

भगवती दुर्गा के विभिन्न स्वरूपों में प्रत्यंगिरा का विशिष्ट महत्व है, 'शक्ति मीमांसा' महा ग्रन्थ में स्पष्ट है, कि प्रत्येक साधक को अपने जीवन में इस विशिष्ट साधना को अवश्य सम्पन्न करना चाहिए, जिससे उनके जीवन में शत्रु बाधा, राजकीय बाधा, भय समाप्त हो सके और दूसरों को वशीभूत करने की शक्ति प्राप्त हो सके।

इस साधना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह 'वशीकरण सिद्धि प्रदायक साधना है' महा ग्रन्थों में इस साधना के सम्बन्ध में बहुत कम विवरण आया है, इस साधना के संबंध में साधक अपने मन में अपने शत्रुओं के निवारण संबंधी जो इच्छा धारण करता है साधना समाप्ति के कुछ समय बाद ही उसका कार्य सफल हो जाता है।

इस वर्ष 26.07.21 को वज्रेश्वरी दिवस है, उस दिन इस साधना को सम्पन्न कर साधक विशिष्टता प्राप्त कर सकता है।

शास्त्रों में भगवती दुर्गा के अनेक स्वरूपों का उल्लेख मिलता है, जिसमें भय, बाधा शत्रु बाधा निवारण हेतु प्रत्यंगिरा साधना का अत्यन्त महत्व है।

प्रातर्नमामि महिषासुरचण्डमुण्ड-शुम्भासुर प्रमुखदैत्य विनाशदक्षाम् ।
ब्रह्मेन्द्र रुद्रमुनिमोहन शीललीलां चण्डीं समस्तसुरमूर्तिमनेक रूपाम्।।

अर्थात् जो महिषासुर चण्ड, मुण्ड, शुम्भासुर आदि दैत्यों का विनाश करने में निपुण है। लीलापूर्वक ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र और मुनियों को मोहित करने वाली है। समस्त देवताओं की मूर्तिस्वरूपा है तथा अनेक रूपों वाली है। शत्रुओं का नाश करने वाली है। उन माँ चण्डी को मैं नमस्कार करता हूँ।

वर्तमान युग में प्रत्येक व्यक्ति अपने शत्रुओं से किसी न किसी रूप में परेशान अवश्य रहता है और जीवन में राजकीय बाधाओं का भी सामना करना पड़ता है, जिससे उसके कार्यों में निरन्तर रुकावट आती रहती है और उसकी उन्नति उस गति से नहीं हो पाती जिस गति से वह कार्य करता है, प्रत्येक कार्य में किसी न किसी प्रकार की बाधा का सामना करना पड़ता है।

तांत्रिक ग्रन्थों में यह स्वीकार किया गया है कि कलियुग में प्रत्यंगिरा साधना तुरन्त प्रभाव युक्त है, कई बार तो साधक को साधना पूर्णता से पहले ही उसके मन के अनुकूल समाचार प्राप्त होने लगते हैं।

'शक्ति मीमांसा' ग्रन्थ में कहा गया है कि जो साधक प्रत्यंगिरा साधना सम्पन्न कर लेता है उसे जीवन में कभी भी शत्रु बाधा का सामना नहीं करना पड़ता, उसके शत्रुओं की शक्ति उसके सामने निरन्तर कम होती रहती है तथा राजकीय बाधाओं का भी उसे सामना नहीं करना पड़ता है, वह व्यक्ति जिस कार्य को करने की सोच लेता है, उसके वह कार्य बिना किसी बाधा के सम्पन्न होते रहते हैं और व्यक्तित्व में भी एक विशिष्ट चमक आ जाती है, ग्रन्थों में यह विवेचन है कि इस साधना को पूर्ण एकाग्रता से निष्ठापूर्वक सम्पन्न करना चाहिए और साधना प्रारम्भ करने के पश्चात उसे नियमित रूप से मंत्र जप अवश्य करना चाहिए।

मेरे अनुभव में यह आया है कि यदि साधक को किसी प्रकार की बाधा परेशानी अथवा अड़चन हो, सरकारी कार्य रुके हों, या कार्य सिद्धि नहीं हो रही हो, या प्रयत्न करने पर भी हम जिस प्रकार से कार्य सम्पन्न करना चाहते हैं, उस प्रकार से सफल नहीं हो रहा हो तो यह साधना अपने आप में अद्भुत, सिद्धिदायक और तत्क्षण सफलतादायक है, वास्तव में ही जब-जब मेरे जीवन में अत्यन्त बाधाकारक समय आया तो मैंने प्रत्यंगिरा साधना का ही सहारा लिया और मुझे अत्यन्त अनुकूल परिणाम प्राप्त हुए, राज्य संकट, राज्य बाधा, शत्रुओं पर विजय और मनोवांछित कार्य सिद्धि के लिए यह साधना सर्वाधिक उपयुक्त है।

साधना समय

यों तो भगवती दुर्गा के इस विशिष्ट संहारक स्वरूप प्रत्यंगिरा साधना को कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है, परन्तु यदि इस विशेष दिवस को यह साधना सम्पन्न की जाय तो सर्वाधिक उपयुक्त रहता है।

साधना सामग्री

शास्त्रों के अनुसार साधना स्थल गंगा जल से या शुद्ध पानी से पवित्र कर लेना चाहिए, फिर साधना स्थल पर ही लकड़ी का बाजोट रखना चाहिए और उस पर लाल वस्त्र बिछा कर उसके मध्य में लाल चावलों की ढेरी पर एक दीपक लगाना चाहिए, यह दीपक इस प्रकार का हो जिसमें आठ बत्तियाँ हों जो कि अष्टदुर्गा का प्रतीक है, पूरा मंत्र जप इसी दीपक पर ध्यान केन्द्रित करके करना है।

उस बाजोट पर बीच में यह दीपक स्थापित हो और बाजोट के चारों कोनों पर चार चावल की ढेरियाँ बना कर प्रत्येक ढेरी पर एक-एक सुपारी रखें, ये सभी महावीर हैं जो कि कार्यसिद्धि में पूर्ण सहायक हैं, दीपक के दाहिनी ओर गणेश और बांई ओर क्षेत्रपाल को स्थापित करना चाहिए और इनकी स्थापना भी चावलों की ढेरी बना कर उस पर सुपारी रख कर गणेश तथा क्षेत्रपाल की भावना रखते हुए स्थापित करनी चाहिए।

इसके बाद दीपक और साधक के बीच लकड़ी के बाजोट पर ही एक पात्र में 'प्रत्यंगिरा यंत्र' की स्थापना करें, इसके अलावा जल पात्र, केशर, कुंकुम, चावल, नारियल, पुष्प, फल, प्रसाद, सरसों तथा काले तिल पहले से ही ला कर रख देने चाहिए, दीपक में सरसों के तेल का प्रयोग करना चाहिए।

साधना प्रयोग

साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय और फिर सर्वप्रथम कुंकुम तथा केसर को मिलाकर दीपक की पूजा करें।

ॐ नमो भगवति प्रत्यंगिरा दीप ज्योति त्रिकोण संस्थे अखण्ड ज्योति, अखण्ड त्रिशत्कोटि देवता मालिनी-निर्मल, अर्ध-रात्रि, निगमस्तुते, ज्वाला मालिनि दीप ज्योति, सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु नमः।

उसके पश्चात करन्यास तथा अंगन्यास करें-

ॐ ऐं श्री ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः   **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः**

ॐ ऐं श्री ह्रीं मध्यमाभ्या नमः   **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः**

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः   **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः**

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं हृदयाय नमः   **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं शिरसे स्वाहा**

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं शिखायै वषट्   **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्**

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं अस्त्राय फट्

इसके पश्चात् 'प्रत्यंगिरा यंत्र राज' को कुंकुम से भिगोकर लाल गुलाब की 21 पंखुड़ियां निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए समर्पित करें, जिससे कि यंत्र आपके लिए पूर्ण प्रभावशाली हो सके।

मंत्र

ॐ नमो प्रत्यंगिरा सर्वकामना सिद्धिं ह्रां ह्रीं नमः।

इसके पश्चात साधक अपने गुरु के चित्र को स्थापित कर उसका संक्षिप्त पूजन करें, और गुरु चरणों का ध्यान कर यह इच्छा प्रगट करें, कि उसे प्रत्यंगिरा साधना में सिद्धि प्राप्त हो।

इसके बाद सामने जो दीपक रखा हुआ है, उस दीपक के सामने वाली ज्योति पर प्रत्यंगिरा देवी का ध्यान निम्नलिखित विशिष्ट मंत्र से करें, उस समय शरीर की सारी शक्तियाँ केन्द्रित कर पूर्ण ध्यान से यह मंत्र जप करना चाहिए, मंत्र के समय अपना ध्यान विचलित न करें।

ध्यान

ॐ ह्रीं हूं ह: ह्रीं प्रत्यंगिरायै नम: कृष्ण वाससेक्ष्मै सहस्रलक्ष कोटि सिंहवासने प्रिं सहस्रवदने महावले अष्टादशभुजे ह: अपराजितै हैं परसैन्य कर्मविध्वंसिनीहंस: पर-मंत्रोच्छेदनिय: सर्वशत्रुच्चाटिनी ष्मै सर्वभूतद्मनी ठ: ठ: सर्वदेवान् बंध बंध हुं फट् सर्वविघ्नानि छिंदि छिंदि सर्वानर्थान् निकृंति निकृंतिय सर्वदुष्टान् भक्ष: भक्ष: प्रें ज्वाला जिहवे हौं करालवक्त्रे हंस: परयंत्राणि स्फट्य: सर्वशृखलां त्रोटय त्रोटय असुरमुद्रां द्रावय द्रावय उं रौद्रमूर्त्तिय ह्रीं प्रत्यंगिरे महाविद्य मम मंत्रार्थं कुरू कुरू नमोस्तुतो ह: हूं ह्रीं ॐ नम:।।

कई बार सामान्य साधकों को इस विशेष ध्यान के उच्चारण के समय मेरूदण्ड में एक अजीब सी हलचल और सिहरन प्रारम्भ हो जाती है, और मस्तिष्क में रक्त का प्रवाह तीव्र होता हुआ अनुभव होता है, यह स्थिति आने पर साधक को किसी भी प्रकार घबराना नहीं चाहिए और 21 बार अथवा 51 बार इस विशेष ध्यान मंत्र का जप करना चाहिए, जप की पूर्णता होते-होते ऐसा आभास होता है कि विशेष शक्ति प्रवाहित हो गई है। तत्पश्चात् निम्न मूल मंत्र का जप काली हकीक माला से 5 माला करें। इस से साधना हेतु जो माला प्रयोग में ली जाय उस माला को किसी दूसरी साधना में प्रयोग में नहीं लिया जा सकता।

मूल मंत्र

।। ॐ ह्रीं श्रीं हंस्क्रैं हंस: प्रत्यंगिरो नम:।।

इसके बाद प्रत्यांगिरा कवच का 11 पाठ करें। इस प्रकार यह साधना सम्पन्न होती है।

इस विशिष्ट साधना को करने के पश्चात यदि शत्रु बाधा अत्यन्त गम्भीर हो तो थोड़ी सी अग्नि किसी पात्र में स्थापित कर पीली सरसों की 11 आहुतियाँ इस विशिष्ट प्रत्यांगिरा कवच का जप करते हुए देनी चाहिए, अग्नि में सरसों की आहुति देते समय साधक को 'शत्रु क्षय' उच्चारण दूसरी ओर मुंह करके करना चाहिए, और सरसों की आहुति दे देनी चाहिए, ऐसा करने से शत्रु का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

यदि किसी को भूत-प्रेत उपद्रव हो तो तांबे के पात्र में थोड़ा-सा जल लेकर इस कवच का एक बार उच्चारण कर वह जल उस पर छिड़क दें, तो तुरन्त भूत प्रेत उपद्रव से शान्ति मिल जाती है।

यदि किसी को अपने अनुकूल बनाना हो तो उस व्यक्ति का ध्यान कर हाथ में जल लें तथा मूल मन्त्र का 21 बार जप करें, प्रत्येक मन्त्र के जप के समय उस व्यक्ति का नाम ले कर मन्त्र जप करें, और इस प्रयोग हेतु काले तिल की 21 आहुतियाँ निम्न मंत्र से दें–

''ऐं क्लीं हंसौं प्रत्यंगिरा मम वश्यं कुरु ह्रीं संवौषट स्वाहा।''

यदि एक बार के प्रयोग में सफलता न मिले तो दूसरी, तीसरी बार भी यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है।

इस साधना की सिद्धि पूर्ण रूप से प्राप्त करने हेतु नियमित रूप से इसके मूल मंत्र का जप करते रहें।

उच्च कोटि के तांत्रिक ग्रन्थों में इस विशिष्ट कवच के सम्बन्ध में अत्यन्त प्रशंसा की गयी है, प्रतिदिन प्रात: प्रत्यंगिरा स्तोत्र का जप नियमित रूप से करने से मानसिक श्रेष्ठता प्राप्त होती है, व्यक्तित्व में विशिष्टता प्राप्त होने के साथ ही शत्रु हानि का भय नहीं रहता है, और निरन्तर एक विशिष्ट शक्ति शरीर में प्रवाहित होती रहती है।

प्राचीन ग्रन्थों से तथा अपने गुरु से प्राप्त इस प्रत्यंगिरा स्तोत्र को अपने मूल रूप से प्रथम बार साधकों के समक्ष दे रहा हूँ।

त्रैलोक्य विजय प्रत्यंगिरा कवच (मूल)

जयघूम्रभीमाकारा सहस्रवदनाश्रिता।
जलपिंगल लोलाक्षीज्वाला जिह्वा च नित्यश:।।
निष्ठुरान् बंधयेद्देवी तत्क्षणं नागपाशकै:।
भ्रकुटी भीषणान् वत्स्यात् घत्ते पाद् प्रहारत:।।
वामेरी मर्दनो दंडो दक्षिणो वज्र भीषणो।
प्रेत शिर करोरूद्र ध्यानोदामर मारकं।।
अनंत तक्षकौ देव्या कंकणं च विराजते।
वासुकि कंठहारश्च कर्काटि कटिमेखला।।
श्लिष्टो पद्मम् महापद्मौ पाद्यो कृत नूपुरौ।
रूंडमाल करे भूषा गौणशौ कर्णमंडले।।
गृहा भेत्रपटेघृत्वा जातान् दानव घातिनी।
स्वयं सैन्याभयदादेवी परसैन्य भयंकरी।।
नो यक्षै: रखिलनराक्षसगणै नो शाकिनी शंवयै।
नो वा चेटक खेटकैर्नव महाभूतै प्रभूतैरपि।।
नापि व्यंतर मुद्गरे पलगणैर्नो मंत्रयंत्रै परै।
देवीत्वं चरणाचंतां परिभव: प्रत्यंगिरे शक्यते।।

यदि इस कवच का पाठ करता हुआ जो साधक एक पुरश्चरण सम्पन्न कर लेता है (इस कवच का एक हजार बार पाठ करने से एक पुरश्चरण सम्पन्न होता है), तो प्रत्यंगिरा उसके वशीभूत होकर मनोवांछित फल प्रदान करती है, पुरश्चरण सम्पन्न कर इस कवच को यदि भोजपत्र पर लिख कर और उसे ताबीज में भर कर अपने गले या दाहिनी भुजा पर बांधने से भी मनोनुकूल फल प्राप्त होता है।

साधना सामग्री : प्रत्यंगिरा यंत्र + काली हकीक माला - 450/-

तुम मेरी नजर में हो

सुबह-सुबह दरवाजे की घंटी बजी। जैसे ही मैंने दरवाजा खोला तो देखा एक आकर्षक व्यक्ति चेहरे पर प्यारी-सी मनमोहक मुस्कान लिए खड़ा है। मैंने कहा, 'जी कहिए।'

उसने कहा, 'अच्छा जी, पहचाना नहीं ! आप तो प्रतिदिन प्रातः मुझे याद करते हैं।'

मैंने कहा, 'माफ कीजिएगा, मैंने आपको पहचाना नहीं।'

तो उन्होंने कहा, 'अरे ! मैं वह हूँ, जिन्हें आप प्रतिदिन पूजन के समय पुकारते हैं, प्रतिदिन ढेर सारी समस्यायें कहते हैं और हमेशा उलाहना देते हैं कि आप मेरी पुकार सुनते क्यों नहीं। मेरी हृदय में बसे हो लेकिन नजर क्यों नहीं आते और मैं आज तुम्हारी पुकार सुनकर आ ही गया और आज पूरे दिन मैं तुम्हारे साथ ही रहूँगा।'

मैंने चिढ़ते हुए कहा, 'क्यूं मजाक कर रहे हो ? कौन हैं आप ?'

'अरे ! मजाक नहीं कर रहा, ये सच है। मैं सिर्फ तुम्हें ही दिखाई दूंगा और कोई भी मुझे देख नहीं सकेगा।'

मैं विस्मय भरी नजर से उन्हें देख रहा था। मैं कुछ जवाब देता इसके पहले ही माँ आ गई और मेरी तरफ देखकर बोली, 'अकेला खड़ा-खड़ा क्या कर रहा है, यहाँ दरवाजे पर, चल चाय तैयार है।'

माँ के ऐसा कहने पर कि अकेला क्यों खड़ा है, मुझे भी थोड़ा यकीन होने लगा, क्या माँ को यहाँ कोई नहीं दिख रहा और मन में थोड़ा-सा डर भी आया। फिर मैं आकर सोफे पर बैठ गया और देखा कि साथ में मेरे वे भी आकर बैठ गये। इतने में चाय का पहला घूंट पीते ही मैं गुस्से से चिल्लाया, 'अरे मां ! ये हर रोज इतनी चीनी ?'

इतना कहते ही एकदम से ध्यान आया कि सचमुच में ही ये ईश्वर हैं तो इन्हें बिल्कुल भी पसंद नहीं आयेगा कि कोई अपनी माँ पर गुस्सा करे और मैंने अपने आप को तुरंत शांत कर लिया और अपने आपको समझा भी दिया, 'भई ! आज पूरा दिन तुम ईश्वर की नजर में हो..... जरा ध्यान से !'

बस फिर मैं जहाँ-जहाँ भी जाता वह पूरे घर में मेरे साथ ही होते परन्तु कोई उन्हें देख नहीं सकता था। मैं आश्चर्य के साथ-साथ खुशी भी अनुभव कर रहा था।

फिर मैं स्नान आदि से निवृत्त होकर पूजाघर में गया और यकीनन पूरी तन्मयता से प्रभु की पूजा-वंदना की क्योंकि साक्षात् ईश्वर की नजर में था, पूरी ईमानदारी जो साबित करनी थी।

फिर तैयार होकर ऑफिस जाने के लिए अपनी कार में बैठा तो देखा कि वे पहले से ही बगल की सीट पर बैठे हुए हैं। मैंने कार स्टार्ट की और ऑफिस के लिए निकल पड़ा। तभी रास्ते में मेरे फोन की घंटी बजी। मैं चलती कार में फोन उठाने ही वाला था कि मन ने सचेत किया कि तुम ईश्वर की नजर में हो और मैंने कार को रोड की साइड में रोका और फोन पर बात की, बातें करते-करते कहने ही वाला था कि इस काम के लिए ऊपर से पैसे लगेंगे...लेकिन तुरन्त अन्दर से आवाज आई ये तो गलत है.... पाप है और साथ में ईश्वर बैठे हैं, उनके सामने कैसे ऊपर के पैसे मांगू और मुंह से शब्द निकले आप आ जाइयेगा, आपका काम हो जायेगा।

फिर उस दिन ऑफिस में न किसी स्टाफ सदस्य पर गुस्सा किया, न किसी कर्मचारी से बहस ही की जबकि अन्य दिनों में तो अनावश्यक गालियाँ भी मुँह से निकल ही जाती थी, जबकि उस दिन किसी से गलती होने पर भी मैंने मुस्कुरा कर कहा, 'कोई बात नहीं, ध्यान से काम करें। भविष्य में गलतियाँ न हों ऐसा प्रयास करें' जैसे शब्दों का प्रयोग किया। जीवन में पहला दिन था, जब क्रोध, घमंड, झूठ, किसी की बुराई, लालच, बेईमानी ये सब मेरी दिनचर्या का हिस्सा नहीं बने।

शाम को जब ऑफिस से निकला तो सभी को मैंने प्रेमपूर्वक स्वयं ही नमस्कार किया। यह सब देखकर ईश्वर के चेहरे पर संतोष भरी मुस्कान थी।

घर पहुँच कर रात्रि भोजन जब परोसा गया, तब शायद पहली बार मेरे मुख से निकला,

'प्रभु, पहले आप ग्रहण कीजिए।'

भोजन करने के बाद माँ विस्मय से मुस्कुराते हुए बोली, 'बेटा पहली बार तूने खाने में कोई कमी नहीं निकाली, क्या बात है सूरज पश्चिम से निकला है आज ?'

मैने कहा, 'माँ आज सूर्योदय हृदय में हुआ है और अन्दर का अन्धकार हट गया है। रोज मैं सिर्फ खाना खाता था लेकिन आज तो प्रसाद ग्रहण किया है और प्रसाद में कोई कमी नहीं होती। थोड़ी देर टहलने के बाद अपने कमरे में आया, आज मन एकदम शांत था। कोई विचार, कोई परेशानी, किसी के लिए कोई द्वेष की भावना में नहीं थी। शांत एवं निर्मल मन से ईश्वर की ओर एक बच्चे की भांति देखा और लेट गया। ईश्वर ने प्यार से सिर पर हाथ रखा और कहा, 'आज तुम्हें नींद के लिए किसी संगीत, किसी दवा, किसी किताब या किसी टी.वी. सीरियल की आवश्यकता नहीं है। इसी तरह जीवन सुखद बनाना है। मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ। हर पल ऐसा ही अहसास करो।'

अचानक मेरे गालों पर थपकी देती माँ की आवाज गूंजी... उठ जा बेटा, अब तो.... कब तक सोयेगा। माँ आवाज दे रही थी और मैं चौंककर उठ गया.... शायद सपना था....हाँ ! सपना ही था परन्तु नींद से जगाकर एक सुखद अहसास से परिचय करा गया।

और आत्मा तक उनकी यह आवाज गूंज रही थी, 'तुम मेरी नजर में हो हमेशा।'

और मैं उनकी कृपा से द्रवित होकर भावों में डूबा, स्वप्न की एक-एक बात को सोचता हुआ आज के पूर्व बिताये गये जीवन को कुछ क्षणों में ही तौलकर अब ईश्वर के साथ का अहसास कर पा रहा था और समझ रहा था कि वो हमेशा हमें देख रहा है।

इस द्रष्टांत का सन्देश यही है कि हम, हमेशा प्रत्येक पल यह अहसास करें कि सद्गुरुदेव हमेशा हमारे साथ है चाहे हम घर में हो, ऑफिस में हो, यात्रा पर हो, साधना काल में हो, गृहस्थ के दायित्व या सामाजिक दायित्वों का निर्वहन कर रहे हो, चाहे गुरु द्वारा सौंपा कोई कार्य कर रहे हो। यदि यह अहसास रहेगा कि हम पर हमेशा सद्गुदेव की नजर है, वे हमेशा हमारे साथ हैं तो हम हमेशा सचेत रहेंगे। कोई भी ऐसा कार्य नहीं होगा, जो गलत हो।

ऐसा प्रयत्न करते रहने से हमारे मन की एकाग्रता एवं पवित्रता बढ़ेगी और धीरे-धीरे हम विकारों से मुक्त होते जायेंगे और तब साधनाकाल में सद्गुरुदेव का अहसास, उनकी उपस्थिति और उनका आशीर्वाद हमें अवश्य प्राप्त होगा।

▪ राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष-सप्ताह के प्रारम्भ में शुभ समय नहीं है। दूसरों की भलाई भी बदनामी दिला सकती है। नया सामान खरीदने से बचें। लेन-देन में सावधानी बरतें। जरूरत होने पर ही यात्रा करें। नौकरी एवं व्यवसाय में उन्नति होगी। जीवन सुखमय रहेगा। किसी को किये गये वादे पूरे कर सकेंगे। कोई अप्रिय समाचार मिलेगा। परिवार में खटपट हो सकती है। सरकारी कर्मचारियों का ट्रांसफर मन चाही जगह पर सम्भव है। रुके हुए रुपयों की वसूली होगी। पुत्र का सहयोग मिलेगा। आप गलत तरीके से धन अर्जित करने से बचें। परिवार में मधुर सम्बन्ध रहेंगे। आप अपने महत्वपूर्ण कार्य स्वयं करना पसंद करेंगे। आखिरी सप्ताह में धन प्राप्ति के योग हैं। कोर्ट केस में अनुकूलता मिलेगी, शत्रुओं को परास्त कर सकेंगे। किसी भी प्रकार के गलत कार्यों से बचें। अन्यथा भाग्य में दिक्कतें आयेंगी। गृहस्थ में अनुकूलता रहेगी। भाग्योदय दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-6, 7, 8, 15, 16, 17, 24, 25

वृष-प्रारम्भ सफलतादायक है। सच्चाई के रास्ते पर चलते हुए जीत हासिल करेंगे। अदालतों के चक्कर काटने से छुटकारा मिलेगा। मुसीबत में फंसकर मानसिक चिंता में घिरेंगे, किसी और की गलतियां आप पर थोपी जा सकती हैं। कोई भी कदम फूंक-फूंक कर रखें। कोई अतिविश्वासी धोखा भी दे सकता है। माह के मध्य में उतार-चढाव की स्थिति रहेगी, जिससे आत्मविश्वास कमजोर होगा। सरकारी कर्मचारियों की उन्नति का अवसर है। नये मित्रों से मुलाकात होगी। आप अपने कार्य को किसी और के लिए छोड़ना पसन्द नहीं करेंगे। पार्टनरशिप में लाभ रहेगा। संतानपक्ष आपके कहने में रहेगी। जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा, विदेश यात्रा हो सकती है। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप इस माह भैरव दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ- 8, 9, 10, 17, 18, 19, 26, 27

मिथुन-माह का प्रारम्भ शुभ है। सोचे गये कार्य पूरे होंगे, आत्मविश्वास से सफलता मिलेगी। बुद्धि बल से उचित समय पर सही निर्णय ले सकेंगे। जमीन-जायदाद को लेकर टेंशन हो सकती है। पुत्र व्यापार में पूर्ण सहयोग करेगा, जिससे आप फ्री महसूस करेंगे। घूमने का प्रोग्राम बनेगा। बेटी का रिश्ता आ सकता है। कोई ऐसा कार्य न करें, जिससे शक के दायरे में आयें। किसी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। नौकर की वजह से आर्थिक नुकसान हो सकता है। कोई विश्वासी व्यक्ति धोखा दे सकता है। दाम्पत्य जीवन में तनाव रहेगा, व्यापार में कई रास्ते खुलेंगे। फालतू के झंझटों से दूर ही रहेंगे घर में कोई मांगलिक कार्य हो सकता है, आप गुरु हृदय धारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-1, 2, 11, 12, 13, 20, 21, 22, 30, 31

कर्क-प्रथम सप्ताह लाभप्रद है। यशकीर्ति फैलेगी, विदेशी यात्रा का योग है। आर्थिक निवेश करेंगे, जो आगे चलकर लाभकारी होगा। मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी, दूसरे सप्ताह में कोई अशुभ समाचार मिलेगा, विरोधी नुकसान पहुंचायेंगे, खर्च बढ़ेगा। बेकार की चिंताएं सामने आयेंगी। आत्मविश्वास जागेगा, सफलता हासिल करेंगे, भाग्योदय होगा। माह के मध्य में अनुकूल समय है। बड़ों के आशीर्वाद से मुसीबतें टल जायेंगी। मित्रों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। कर्मचारी से वाद-विवाद होने पर प्रतिष्ठा पर आँच आ सकती है। संयमपूर्वक रहें। किसी पुराने मित्र से मुलाकात होगी। रोजगार के नये अवसर आयेंगे। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय अच्छा है। व्यापार में बढ़ोतरी होगी। आप बगलामुखी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-3, 4, 5, 13, 14, 15, 22, 23, 30, 31

सिंह-माह के प्रारम्भ के दो-तीन दिन अनुकूल नहीं हैं। खर्च की अधिकता रहेगी। परिवार के विषय में चिंतित रहेंगे। जहाँ प्रयास करेंगे, असफल रहेंगे। विद्यार्थी वर्ग को ज्ञानप्राप्ति का समय है। धन लाभ होगा। जमीन-जायदाद का मामला सुलझेगा, समय अनुकूलता लायेगा। प्लानिंग सफल होगी। अविवाहितों का विवाह सम्भव है। रुके हुये रुपये प्राप्त होंगे। हालात अच्छे होंगे। तीसरे सप्ताह में खर्च से बचें, स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान दें, व्यर्थ की यात्रा न करें, परिवार से अनबन रहेगी। शत्रु वर्ग से सावधान रहें। बाधायें परेशान करेंगी। आखिरी सप्ताह में आवश्यक कार्य पूरे होंगे। सरकारी कर्मचारी वर्ग का प्रमोशन सम्भव है। सट्टे आदि से दूर रहें। इस समय योजनायें सफल नहीं होंगी। आर्थिक नुकसान हो सकता है। फालतू के कार्यों में समय खराब न करें। संयमपूर्ण भाषा का इस्तेमाल करें। महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मित्रता होगी, आप सर्व बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-6, 7, 8, 15, 16, 17, 24, 25

कन्या-माह का प्रारम्भ मध्यम है। कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकेंगे। बहुत सी बातें सीखने को मिलेंगी। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखने की जरूरत है। शत्रु हावी रहेंगे। वाणी पर संयम रखें। रुके रुपये प्राप्त होंगे।

आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। कर्मचारी वर्ग की उन्नति के अवसर हैं। किसी छोटी सी बात पर वाद-विवाद हो सकता है। माह का मध्य थोड़ा कठिन एवं टेंशन से भरा रहेगा। अपने ही नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। हालात में सुधार होगा। पैसे की आवक सामान्य रहेगी। व्यर्थ की यात्राओं से बचें। वाणी पर नियंत्रण रखें। इस समय आप साधनात्मक क्षेत्र में सक्रिय रहेंगे। आप के सोचे गये सपने पूर्ण होते दिखाई देंगे, आप दूसरों की मदद करेंगे। माह के अंत में नुकसान उठाना पड़ सकता है। आप **बगलामुखी दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-8, 9, 10, 17, 18, 19, 26, 27

तुला-माह का प्रारम्भ सकारात्मक परिणाम लायेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा, जीवनसाथी के साथ प्रेम का व्यवहार रहेगा। नौकरीपेशा लोगों को अपने अधिकार वर्ग से संयम का व्यवहार करना चाहिए अन्यथा परेशानी हो सकती है। बाधा आ सकती है। परिवार के सदस्य किसी योजना में सहयोग करेंगे। विद्यार्थी वर्ग को अपने अध्ययन पर ध्यान देना चाहिए। माहके मध्य में कोई छोटी सी बात तनाव का कारण बन सकती है। घर के वातावरण में भी तनाव हो सकता है। आप साधनात्मक ज्ञान में रुचि से लगे रहेंगे। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। तीसरे सप्ताह में प्रतिकूलताएं आयेंगी, सोच-समझकर निर्णय लें। वाणी पर संयम रखें, मित्रों का सहयोग मिलेगा, रुके हुये कार्य पूर्ण होंगे। धार्मिक पठन-पाठन में रुचि रहेगी। आप **सिद्धाश्रम प्राप्ति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-1, 2,, 11, 12, 19, 20, 21, 28, 29, 30

वृश्चिक-माह का प्रथम सप्ताह उत्तम है। कैरियर की चिंता दूर होगी। व्यापार वृद्धि के योग हैं, आय के स्रोत बढ़ेंगे। किसी से मुलाकात होगी, जो सहयोग देगा। आपकी मेहनत का फल मिलेगा। वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा। कोर्ट-कचहरी से छुटकारा मिलेगा। प्रयास सफल होंगे। दूसरे सप्ताह में सचेत रहें, अपने ही हानि पहुंचा सकते हैं। उन्नति में बाधाएं आयेंगी, निर्णय लेने में दुविधा रहेगी। परिश्रम से ही कार्य सफल होंगे। अविवाहितों के विवाह के अवसर हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति हो सकती है। नौकरीपेशा की पदोन्नति की सम्भावना है। आप की स्थिति कमजोर होगी, अशांति रहेगी। पुराने मित्र से मुलाकात होगी। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में रुचि लेगा। अन्तिम सप्ताह में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य बिना सोचे-समझे किसी अन्य को न सौंपे वरना परेशानी हो सकती है। शत्रु हावी हो सकते हैं, कार्य के लिए यात्रा सफल होगी। **गणपति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ- 3, 4, 5, 13, 14, 15, 22, 23, 30, 31

धनु-प्रथम सप्ताह में प्रतिकूल परिस्थितियां हैं। छोटी सी बात से लड़ाई-झगड़े की स्थिति बन सकती है। चरित्र पर कीचड़ उछाला जा सकता है। सतर्क रहें। आप गरीबों की सहायता करेंगे। दूसरे सप्ताह में किसी मुसीबत में भी फंस सकते हैं, शक के दायरे में आ सकते हैं। सरकारी कर्मचारियों की पदोन्नति के अवसर हैं। मित्र के सहयोग से अधूरे कार्य पूर्ण होंगे। वांछित सफलता मिलेगी, अचानक कोई शुभ समाचार मिल सकता है। शत्रुओं को शांत रख सकेंगे। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। खर्च की अधिकता रहेगी, इस समय चिंताग्रस्त रहेंगे। परिवार में सभी सदस्य सहयोग करेंगे। परिश्रम का फल मिलेगा। फालतू की बातों में न पड़कर महत्वपूर्ण कार्यों पर ध्यान दें, कामयाबी मिलेगी। आप **नवग्रह मुद्रिका** धारण करें।

शुभ तिथियाँ-6, 7, 8, 15, 16, 17, 26, 25

मकर-सप्ताह का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। चित्त प्रसन्न रहेगा, पुराने दोस्तों से मुलाकात होगी। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। बेरोजगारों को ताने सुनने पड़ेंगे। सतर्क रहें, गलत राह पर अग्रसर न हों। अच्छे अवसर

सर्वार्थ सिद्धि योग -	जुलाई-4, 6, 7, 11, 30
अमृत सिद्धि योग-	जुलाई-2, 30
रवि योग -	जुलाई - 13, 15, 18, 19, 20, 23
रवि पुष्य योग-	जुलाई - 11 (प्रातः 5.57 से रात्रि 2.31 तक)

उपलब्ध होंगे। विद्यार्थी वर्ग वांछित सफलता पायेगा। आप कठिन समय में सफलता पा सकते हैं। चलते-फिरते किसी से उलझें नहीं, घर में अशांति रहेगी। दूसरों का भला करने पर भी आपको उसका उल्टा ही मिलेगा। मानसिक तनाव में न आयें, व्यय कम करें। ऑफिस में अधिक जिम्मेदारियाँ भी आप निभा सकने में सक्षम हैं। किसी की तबीयत खराब हो जाने से आप अशांत हो जायेंगे। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। किसी और के काम में टांग न अड़ायें। आप अपने परिश्रम से दूसरों का दिल जीत लेंगे। माह के अन्त में आय की आवक शुरू होगी। आप **महालक्ष्मी दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ- 8, 9, 10, 17, 18, 19,26, 27

कुम्भ-शुरूआत शांतिपूर्ण ढंग से होगी। दूसरों की सहायता अपना धर्म समझेंगे। बड़े लोगों से सम्पर्क बनेंगे। व्यापार में उन्नति होगी, नौकरीपेशा व्यक्ति प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। फालतू के कार्यों में ऊर्जा खराब न करें। मानसिक अशांति रहेगी। गलत कार्यों से दूर हरें। निर्णय बहुत सोच-विचार कर लें। धर्म के प्रति झुकाव रहेगा। उच्चाधिकारी वर्ग संतुष्ट रहेगा। माह के मध्य में इच्छाशक्ति कमजोर रहने से सही निर्णय लेने में असमर्थ रहेंगे। राह भटक सकती है। पैसों की तंगी आ सकती है। सावधानी से निर्णय लें। बुजुर्गों की सलाह लें। किसी अन्जान से मुलाकात होगी। कार्य के सिलसिले में की गई यात्राएं सफल होंगी। जीवनचर्या बदलेगी। गरीबों की सहायता करेंगे। अनेक लोगों को रोजगार देने की स्थिति बनेगी। **सर्व बाधा निवारण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-1, 2, 11, 12, 19, 20, 21, 28, 29, 30

मीन-प्रथम सप्ताह संतोषजनक रहेगा। पति-पत्नी में प्रेम की भावना अधिक बढ़ेगी। ऑफिस में सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। मित्रों का सहयोग मिलने से प्रगति तेज होगी। मनोकामना पूर्ति का समय है। योजनाएं भविष्य में सफल होगी। कोई अशुभ घटना हो सकती है। कोई भी कार्य सावधानीपूर्वक करें। अन्यथा उलझ सकते हैं, टेंशन में आ सकते हैं। स्वयं पर भरोसा रखें। कार्य सफल होंगे। अविवाहितों के लिए विवाह प्रस्ताव आयेंगे। अपनों से सावधान रहें, धोखा हो सकता है। निवेश में लाभ होगा। संतानपक्ष की ओर से हर्ष होगा। विद्यार्थियों के लिए अच्छा समय है। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी, पुराने मित्रों से मुलाकात सम्भव है। आखिरी सप्ताह टेंशन का समय है, वाणी का संयम रखें। आवश्यकतानुसार आमदनी बनी रहेगी। आप **गुरु मंत्र साधना** करें।

शुभ तिथियाँ- 3, 4, 5, 13, 14, 15, 22, 23, 30, 31

इस मास व्रत, पर्व एवं त्यौहार

03.07.21	शनिवार	सिद्धाश्रम जयंती
05.07.21	सोमवार	योगिनी एकादशी
10.07.21	शनिवार	शनैश्चरी अमावस्या
11.07.21	रविवार	जगन्नाथ रथ यात्रा, गुप्त नवरात्रि प्रारम्भ
18.7.21	रविवार	केतु सिद्धि दिवस
20.7.21	मंगलवार	हरिशयनी एकादशी
23.7.21	शुक्रवार	गुरु पूर्णिमा
25.7.21	रविवार	श्रावण प्रारम्भ
26.7.21	सोमवार	वज्रेश्वरी दिवस
30.7.21	शुक्रवार	शीतला सप्तमी

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (जुलाई-4, 11, 18)	दिन 06.00 से 08.24 तक 11.36 से 02.48 तक 03.36 से 04.24 तक रात 06.48 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 06.00 तक
सोमवार (जुलाई-5, 12, 19)	दिन 06.00 से 07.36 तक 09.12 से 11.36 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.48 से 03.36 तक
मंगलवार (जुलाई-6, 13, 20)	दिन 10.00 से 11.36 तक 04.30 से 06.00 तक रात 06.48 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 05.12 से 06.00 तक
बुधवार (जुलाई-7, 14, 21)	दिन 06.48 से 10.00 तक 02.48 से 05.12 तक रात 07.36 से 09.12 तक 12.24 से 02.48 तक
गुरूवार (जुलाई-1, 8, 15, 22)	दिन 06.00 से 07.36 तक 10.00 से 11.36 तक 04.24 से 06.00 तक रात 09.12 से 11.36 तक 02.00 से 04.24 तक
शुक्रवार (जुलाई-2, 9, 16, 23)	दिन 06.00 से 06.48 तक 07.36 से 10.00 तक 12.24 से 03.36 तक रात 07.36 से 09.12 तक 10.48 से 11.36 तक 01.12 से 02.48 तक
शनिवार (जुलाई-3, 10, 17, 24)	दिन 06.00 से 06.48 तक 10.30 से 12.24 तक रात 08.24 से 10.48 तक 02.48 से 03.36 तक 05.12 से 06.00 तक

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (जुलाई-25)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (जुलाई-26)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (जुलाई-27)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (जुलाई-28)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरूवार (जुलाई-29)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (जुलाई-30)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (जुलाई-31)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

जुलाई -21

11. 'ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय' इस मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं।
12. आप शिव मंदिर में 'ऊँ नमो शिवाय' बोलते हुए जल चढ़ायें।
13. हनुमान चालीसा का एक पाठ करके जाएं।
14. आज पक्षियों को दाना डालें।
15. पीपल या केले के वृक्ष में जल चढ़ायें।
16. आज निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं-
    मंत्र - ।। ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः ।।
17. पूजन के बाद नवार्ण मंत्र का 11 बार जप करके जाएं।
18. आज पत्रिका में प्रकाशित धर्मराज साधना करें।
19. इस दिन अपने वस्त्रों में सफेद रंग की प्रधानता रखें, दिन शुभ रहेगा।
20. आज हो सके तो उपवास रखें और भगवान नारायण का पूजन करें।
21. आज सद्गुरुदेव जन्मदिवस पर गुरु स्तवन के 21-30 श्लोक का पाठ करें।
22. 'सोऽहम' मंत्र का पांच मिनट जप करें।
23. आज प्रातः सद्गुरुदेव का पूजन पूर्ण विधि-विधान से करें।
24. आज गुरु मंत्र की सोलह माला मंत्र जप करके जाएं।
25. आज से श्रावण का प्रारम्भ है, शिव मन्दिर में जल चढ़ायें।
26. श्रावण के प्रथम सोमवार पर पारद शिवलिंग पर अभिषेक करें।
27. आज गणपति पूजन करके जाएं।
28. आज 'ॐ अन्नपूर्णायै नमः' मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं।
29. केसर का तिलक करके किसी कार्य हेतु जाएं।
30. प्रातः गुरु पूजन के बाद 21 बार निम्न मंत्र का उच्चारण करें-
    मंत्र - ।। ऊँ ह्रीं ऊँ ।।
31. सरसों का तेल कुछ दक्षिणा के साथ दान करें।

अगस्त-21

1. प्रातः भगवान सूर्य को अर्घ्य दें।
2. आज श्रावण सोमवार को पत्रिका में प्रकाशित साधना करें।
3. हनुमान बाहू (न्यौछावर 90/-) धारण करें, विघ्न-बाधाएं समाप्त होंगी।
4. आज कामिका एकादशी है। तुलसी के पौधे के पास घी का दीपक जलायें।
5. 11 बार ''ऊँ नमो नारायणाय नमः'' का जप करके जाएं।
6. महाकाल गुटिका (न्यौछावर 150/-) अपनी बाधा को स्मरण करके शिव मन्दिर में चढ़ायें। बाधा समाप्त होगी।
7. आज शनि मुद्रिका (न्यौछावर 150/-) धारण कर सकते हैं।
8. किसी ब्राह्मण को दाल-चावल दक्षिणा के साथ दान दें।
9. मनोकामना पूर्ति पंचमुखी रुद्राक्ष (न्यौछा. 51/-) किसी शिव मन्दिर में चढ़ायें, कामनापूर्ण होगी।
10. हनुमान मन्दिर में बेसन के लड्डू का भोग लगाकर बच्चों में बाटें।

श्रावण मास
यथा शरीरं तथा ज्ञानम् शरीरहि खलु मोक्ष साधन
जैसा शरीर वैसा ही ज्ञान, शरीर ही मोक्ष का साधन है
स्वस्थ रोग मुक्त जीवन हेतु आवश्यक
रुद्र प्रयोग

जीवन की प्रथम आवश्यकता है, मन और तन दोनों ही पूर्ण रूप से स्वस्थ हों।

स्वस्थ शरीर से ही हमारे मन की वृत्तियाँ स्वस्थ होती हैं, स्वस्थ मन से श्रेष्ठ इच्छाओं की उत्पत्ति होती है, श्रेष्ठ इच्छाओं से कार्य शक्ति प्राप्त होती है और उसी से श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है।

यह ध्रुव सत्य है कि स्वस्थ और प्रसन्न व्यक्ति के शरीर में शक्ति स्फूर्ति और बल का प्रवाह तीव्र रहता है और उसी से मन, वचन, कर्म में एकता रहती है। जब तीनों में एकता का सामंजस्य होता है, तो जीवन रोग रहित हो जाता है।

अपने प्रयास से तो मनुष्य निरन्तर प्रयत्न करता है कि उसे स्वस्थ देह और स्वस्थ मन निरन्तर प्राप्त होता रहे, लेकिन जब मनुष्य के प्रयास थक जाते हैं, तो श्रेष्ठ व्यक्ति शक्तिमान परमपिता परमेश्वर शिव से शक्तितत्व ग्रहण करते हैं। शिव का रुद्र स्वरूप जीवन में रुदन भाव समाप्त करने का शक्तिमान स्वरूप है। जब मन और शरीर में पीड़ा होती है तो एकमात्र शिव ही अपने रुद्र रूप में उन पीड़ाओं, व्याधियों को समाप्त कर रुद्रन समाप्त करते हैं, भक्त के चित्त में प्रसन्नता का संचार करते हैं।

इसीलिये रुद्र को सृजनकर्ता और संहारकर्ता कहा गया है। भगवान शिव ही रुद्र रूप में साधक के शरीर और मन की दुर्बलता दूर करते हैं, उसके जीवन के दु:खों का नाश करते हैं, और उसमें शुद्ध भावों का संचार करते हैं। इसीलिये भगवान रुद्र की प्रार्थना में कहा गया है-

सर्वो वै रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु।
पुरुषौ वै रुद्रः सन्महो नमो नमः।
विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बहुधा जातं जायमानं च यत्।
सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु।

जो रुद्र उमापति हैं, वही सब शरीरों में जीव रूप में प्रविष्ट हुए हैं, उनको हमारा प्रणाम। रुद्र ही पुरुष हैं, वह ब्रह्मलोक में ब्रह्मारूप से, प्रजापतिलोक में प्रजापति के रूप से, सूर्यमण्डल में विराट रूप में तथा देह में जीव रूप से स्थित हुए हैं। उस महान् सच्दिानन्दस्वरूप रुद्र को बारम्बार नमस्कार।

ॐ अघोरेभ्योऽय घोरभ्यो घोरघोरस्तेभ्यः
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।

जो अघोर हैं, घोर हैं, घोर से भी घोरतर हैं और जो सर्वसंहारी रुद्ररूप हैं, आपके उन सभी स्वरूपों को मेरा नमस्कार है।

केवल, और केवल महादेव ही अपने रुद्र रूप में मनुष्य के शरीर से रोग का पूर्ण नाश करने में समर्थ है। उस रुद्र की आराधना-साधना करना साधक का कर्तव्य है। यदि **श्रावण मास** में **शिव रुद्र प्रयोग** सम्पन्न कर लिया जाये तो साधक को पूरे वर्ष मन, शरीर में स्वस्थता प्राप्त होती है।

रोग नाशक रुद्र प्रयोग

1. रोगनाश एवं आयु वृद्धि के लिए भगवान रुद्र की साधना सर्वोपरि है। उसके लिए विशिष्ट सामग्री का होना आवश्यक है, जिससे कि पूर्णरूप से साधना को सम्पन्न किया जा सके। इसमें प्रयुक्त होने वाली सामग्री है -प्राण-प्रतिष्ठा एवं मंत्र-सिद्ध **'ज्योतिर्मय शिवयंत्र'**, **'रुद्राक्ष'** एवं **'रोगनाशक गुटिका'**।
2. पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठें।
3. सफेद या पीले आसन पर बैठें।

4. प्रात: 5 बजे से 8 बजे के मध्य बैठें।

5. **किसी भी सोमवार को।**

6. सबसे पहले अपने सामने बाजोट के ऊपर सफेद वस्त्र बिछाकर, किसी थाली में कुंकुम से **'स्वस्तिक'** बनाकर शिवयंत्र को स्थापित कर दें व धूप-दीप जला दें।

ध्यान

दोनों हाथ जोड़कर भगवान रुद्र से रोग नाश के लिए, सुख-सौभाग्य प्राप्ति के लिए प्रार्थना करें-

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारूचन्द्रवतंसं,
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीति हस्तं प्रसन्नं।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतिममरगणैर्व्याघ्रवृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्व वन्द्यं निखिल भवहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं।।

आह्वान

ॐ उमामहेश्वराभ्भयां नमः आवाहनं समर्पयामि।।

आसन

देवता को बिठाने के लिए आसन के रूप में पुष्प रखें-

ॐ उमामहेश्वराभ्भयां नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

स्नान

स्नान के लिए शिवयंत्र पर जल चढ़ायें

ॐ उमामहेश्वराभ्भयां नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।।

गंध

चन्दन या कुंकुम लगायें-

ॐ उमामहेश्वराभ्भयां नमः गंधं समर्पयामि।।

अक्षत

अक्षत चढ़ायें-

ॐ उमामहेश्वराभ्भयां नमः अक्षतान् समर्पयामि।।
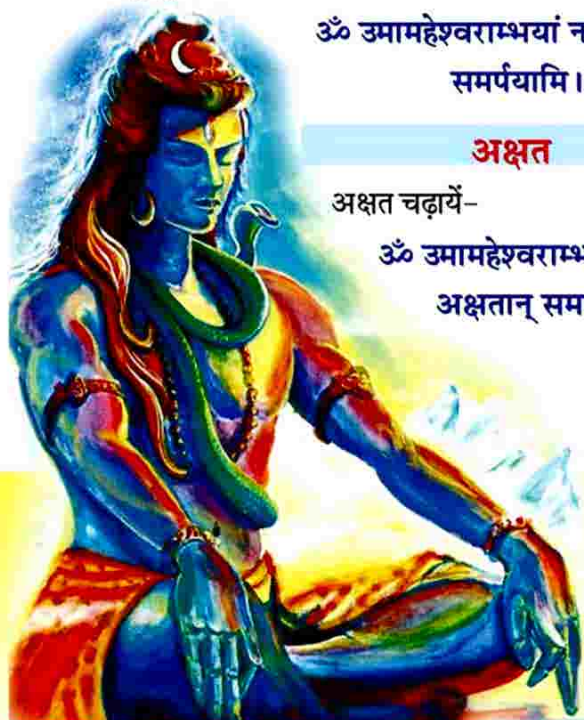
पुष्प

पुष्प चढ़ायें-

ॐ उमामहेश्वराभ्भयां नमः पुष्पाणि समर्पयामि।।

नैवेद्य

नैवेद्य के ऊपर जल घुमाते हुए रुद्र गायत्री मंत्र बोलें-

ॐ तत्परूषाय विद्महे महादेवाह धीमहि
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

भोग

इसके बाद भोग लगाये-

उमामहेश्वराभ्भयां नमः नैवेद्यं निवेदयामि
नाना ऋतुफलानि च समर्पयामि।।

क्षमायाचना

भगवान रुद्र से दोनों हाथ जोड़कर साधना में होने वाली न्यूनताओं के लिए क्षमा-प्रार्थना करें-

आह्वानं न जानामि न जानामि विसर्जनम्,
पूजां चैव न जानामि क्षमस्य परमेश्वर।
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत् पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तुमे।।

7. इसके बाद निम्न मंत्र का 51 बार उच्चारण करते हुए **शिवयंत्र** पर जल की धारा चढ़ायें-

मंत्र

।। ॐ सर्वरोगहराय रुद्राय ह्लौं क्रीं फट्।।

8. **शिवयंत्र** पर चढ़ाये हुए जल को किसी पात्र में एकत्र कर लें।

9. रुद्राक्ष को मंत्र-जप करने से पूर्व शिवयंत्र पर चढ़ा दें।

10. अगर रोगी स्वयं इस प्रयोग को सम्पन्न कर रहा है, तो रुद्राक्ष को स्वयं धारण करें अथवा जिसके लिए यह प्रयोग सम्पन्न किया जा रहा है, उसे लाल धागे में पहना दें।

11. शिव यंत्र पर चढ़े जल को जिस पात्र में एकत्र किया है, उस पात्र को रोगी के सिर पर तीन बार घुमाकर, उस जल को किसी पवित्र वृक्ष-पीपल, बरगद या बिल्व की जड़ में चढ़ा दें।

12. शिवयंत्र को अपने पूजा कक्ष में सवा माह तक स्थापित रखें, इसके पश्चात् शिवयंत्र, गुटिका एवं रुद्राक्ष को किसी शिव मंदिर में दे दें।

13. **इस प्रयोग को करने वाले, साधक को सभी प्रकार के रोग से मुक्ति प्राप्त होती है एवं इसे स्वस्थ व्यक्ति सम्पन्न करें, तो समस्त रोगों से सुरक्षा प्राप्त होती है।**

साधना सामग्री-450/-

श्रावण के किसी भी सोमवार से
या
पवित्रा एकादशी 18.08.2021
यश, प्रतिष्ठा
एवं
पुत्र प्राप्ति के लिए
श्रीकृष्ण ने
शिव साधना
सम्पन्न की
'कृष्णं वन्दे जगदगुरु'
जो कृष्ण सभी वैभव, सुख व सम्पदा प्रदान करने में पूर्ण सक्षम हैं, जिन्हें पूरे विश्व का गुरु कहा गया है, उन्होंने स्वयं अपने जीवन में उन्नति के लिए, पुत्र की प्राप्ति के लिए तथा जब भी उनके सामने कोई विकट समस्या आई, तो उसका भी निराकरण करने के लिए वे भगवान शिव की ही आराधना उपासना करते थे।

संभव है यह बात श्रीकृष्ण भक्तों को अत्यधिक आश्चर्यचकित कर दे, किन्तु उपरोक्त बात अक्षरश: सत्य है, इसकी पुष्टता 'लिंग पुराण' में वर्णित निम्न श्लोक से होती है-

पुत्रार्थं भगवास्तत्र तपसमुं परं जयाम्।
आश्रम-चोवमन्योर्वै दृष्टवांस्तत्र तं मुनिम्।।

अर्थात् भगवान श्रीकृष्ण पुत्र प्राप्ति के लिए तपस्या करने वन में उपमन्यु के आश्रम में जाते हैं।

तदाप्रभृति तं कृष्णं मुनय: शंसितव्रता:।
दिव्या: पाशुपता: सर्वे तस्तु: संपृत्य सर्वत:।।

उपमन्यु मुनि से श्री कृष्ण शिवमंत्रोपदेश प्राप्त कर शिवाराधना सम्पन्न करते हैं, जिससे भगवान शिव प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण को वर प्रदान करते हैं।

इसी कथन की पुष्टि श्री महाभारत के अनुशासनिक पर्व द्वारा भी होती है -

द्रक्ष्यसे पुण्डरीकाक्ष महादेवं न संशय:।
अचिरेणैव कालेन यथा दृष्टो मया नहा।।

श्रीकृष्ण कहते हैं कि एक दिन मेरी पत्नी जाम्बवंती मेरे पास अत्यंत व्यथित हृदय से आयी और प्रार्थना कर कहने लगी कि आपने जिस प्रकार भगवान पशुपति की आराधना करके देवी रुक्मिणी को पुत्रवती बनने का सौभाग्य प्रदान किया, उसी प्रकार मुझे भी पुत्रवती बनने का सौभागय प्रदान करिए।

मैंने अपने पुत्र साम्ब को पाने के लिए भगवान शिव की आराधना की थी और देवी जाम्बवंती की प्रार्थना पर मैं पुन: व्याघ्रपाद मुनि के पुत्र उपमन्यु के दिव्य आश्रम में गया और उनकी अभ्यर्थना की, तब उपमन्यु मुनि ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया, कि मुझे अपने ही समान, पुत्र की प्राप्ति होगी। मुनि उपमन्यु के द्वारा शिव महिमा वर्णन सुनते हुए क्षण निमेष की भांति आठ दिन व्यतीत हो गये, फिर उन्होंने मुझे पाशुपत-दीक्षा प्रदान कर शिव साधना सम्पन्न करने की विधि समझायी।

इतना ही नहीं भगवान श्रीकृष्ण अपने सर्वप्रिय भक्त अर्जुन को भी समय-समय पर शिव के विभिन्न रूपों की साधना सम्पन्न करवाते रहते थे। श्रीमद्भगवत गीता में अर्जुन को परमहित का उपदेश देते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं - ''भगवान शिव की साधना, जो कि स्वयं मेरा अनुभूत किया हुआ उपाय है, इसे सम्पन्न करना ही सभी बाधाओं पर विजय प्राप्ति का श्रेयस्कर उपाय है।'' अर्जुन को प्रत्येक विपत्ति से मुक्त कराने के लिए श्रीकृष्ण ने शिव साधना का उपदेश दिया।

कथा प्रसिद्ध है कि जब जयद्रथ ने अर्जुन पुत्र अभिमन्यु का वध कर दिया था, तब अर्जुन ने प्रतिज्ञा की थी, कि यदि सूर्यास्त के पहले जयद्रथ का मैंने वध नहीं कर दिया, तो मैं स्वयं चिता में प्रवेश कर जाऊंगा। उस समय भी श्रीकृष्ण ने अर्जुन से सम्पूर्ण रात्रि भगवान शिव की पाशुपतास्त्रेय साधना सम्पन्न करायी थी, और उस साधना के द्वारा अर्जुन को पुन: पाशुपतास्त्र प्राप्त हुआ था।

महाभारत युद्ध काल में रणक्षेत्र में जब भगवान कृष्ण से अर्जुन ने पूछा – ''मेरे रथ के आगे–आगे शत्रुओं का संहार करता हुआ यह त्रिशूलधारी कौन है? तब अर्जुन की जिज्ञासा को शांत करने के लिए श्रीकृष्ण ने बताया, कि ये भगवान शिव हैं, जिनकी आराधना तुमने की है, इन्हीं के अनुग्रह से ही तुम्हारी सर्वत्र जय होती है, क्योंकि ये सदैव तुम्हारे साथ–साथ रहते हैं।

महाभारत के ही द्रोण पर्व में वर्णन मिलता है कि द्रोणाचार्य की मृत्यु के बाद उनके पुत्र अश्वत्थामा ने अत्यंत क्रोधित होकर नारायणास्त्र का प्रयोग कर दिया, जिसके कारण पाण्डव सेना जलने लगी, चारों तरफ से अग्नि की विकराल ज्वालाएं पाण्डव सेना को अपने में विलीन करने के लिए लपकने लगीं, तब भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन, युधिष्ठर, भीम, नकुल और सहदेव सहित सभी इष्टजनों को रथ से उतर कर, अपने–अपने शस्त्र फेंक कर जमीन पर नम्र भाव से खड़े हो जाने की आज्ञा दी। इस प्रकार नारायणास्त्र के कोप से भगवान कृष्ण ने उन सभी को बचा लिया।

जब नारायणास्त्र पाण्डव सेना को जला कर लोप हो गया, तब अश्वत्थामा श्रीकृष्ण व पाण्डव को सुरक्षित देख अत्यंत आश्चर्यचकित रह गया, उसे कुछ भी समझ में नहीं आया। इसका कारण जानने के लिए वह भगवान वेदव्यास के पास गया और उन्हें प्रणाम कर निवेदन किया – हे महामुनि! कृपया आप मेरी शंका का निवारण करें। क्या मेरे पिता श्री द्रोण ने मुझे अस्त्र–शस्त्र विद्या सिखाने में न्यूनता रखी थी या कलिकाल का प्रभाव प्रारंभ हो गया है, जिससे मंत्रों के सामर्थ्य में कमी आ गई है। आप कृपा कर स्पष्ट करें, कि नारायणास्त्र का प्रयोग होने पर भी कृष्ण व पाण्डव कैसे बच गए?

यह सुनकर भगवान व्यास ने अश्वत्थामा को समझाया – तुम्हारे पिता श्री द्रोण ने तुम्हें पूर्णता के साथ अस्त्र–शस्त्र विद्या का ज्ञान दिया है, उनकी शिक्षा में किसी भी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं है और न ही कलिकाल के कारण मंत्रों में सामर्थ्यता कम हो गई है, यदि ऐसा ही होता, तो सभी को बच जाना चाहिए, सिर्फ पाण्डव व कृष्ण ही क्यों बचे? यह प्रश्न तुमने इसलिए पूछा क्योंकि तुम्हें कृष्ण के मूल स्वरूप का ज्ञान नहीं है।

आगे पुन: व्यास भगवान श्रीकृष्ण का परिचय देते हुए कहते हैं कि –

योऽसौ नाम पूर्णेसार्माप पूर्वज:।
अजायत च कर्यार्थ पुत्रो धर्मस्य विश्वकृत:।।
तस्मै वरानचिन्त्यात्मा नीलकण्ठ: पिनाकधृक।
अर्हते देवमुख्याय प्रायच्छदृषिसंस्तुत:।

अर्थात् भगवान श्रीकृष्ण के रूप में पूर्वजों के पूर्वज पद्मनयन भगवान विष्णु ही पृथ्वी पर धर्म की स्थापना के लिए अवतरित हुए हैं। इन्होंने हिमालय में निराजल, निराहार रह कर जगत्पति

भगवान के विभिन्न स्वरूपों यथा – रुद्र, षभ, जटाधर, विरुपाक्ष, ईशान आदि की अत्यंत समर्पित भाव से अति कठोर साधना सम्पन्न की है। श्रीकृष्ण की तपस्या से प्रसन्न होकर पिनाक धारी नीलकंठ भगवान शिव ने उन्हें वर व आशीर्वाद प्रदान किया है – हे नारायण! तुम प्रत्येक युग में देवताओं, गंधर्वों व मनुष्यों आदि में सर्वश्रेष्ठ तथा अप्रमेय बलवान होंगे, वही भगवान नारायण जो अपनी माया के द्वारा सम्पूर्ण विश्व को अपने वशवर्ती बना कर रखे हैं, भगवान कृष्ण हैं।

इस कथन द्वारा स्पष्ट होता हे कि व्यास भगवान ने श्रीकृष्ण को परम शिव भक्त के रूप में प्रतिपादित किया है।

महाशिवपुराण की ज्ञान संहिता में भी इस बात का प्रमाण मिलता है, कि भगवान श्रीकृष्ण ने अत्यंत भक्ति-भाव से शिवाराधना की थी और पूरे साधना काल में भगवान शिव के ज्योतिर्मय शिवलिंग पर नित्य 108 बिल्ब-पत्र निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए अर्पित करते थे –

मंत्र

।। ॐ शाम्ब शिवाय पुत्र प्रदाय शं नमः।।

उनकी इस प्रकार की भक्ति देखकर अचिन्त्य स्वरूप भगवान शम्भू ने कई वर प्रदान किए। भगवान कृष्ण के द्वारा बिल्व-पत्रों से पूजित होने के कारण उस शिवलिंग का नाम ''बिल्वेश्वर शिवलिंग'' हुआ।

स्वयं श्रीकृष्ण महाभारत के अनुशासनिक पर्व में कहते हैं –

जब मैंने ज्योतिर्मय भगवान शिवलिंग का अर्चन किया, उस समय उन्होंने प्रसन्न होकर मुझे निम्न वरदान प्रदान किए – धर्म में दृढ़ता बनी रहे, विश्व में मान, पद, प्रतिष्ठा, सुयश व कीर्ति प्राप्त हो मेरा (शिव का) सान्निध्य प्रति क्षण प्राप्त हो, उत्कृष्ट वैभव, सम्पन्नता, भोग व ऐश्वर्य प्राप्त हो, श्रेष्ठ पुत्र की प्राप्ति हो, युद्ध में विजय, प्रत्येक कार्य में क्षमता प्राप्त हो, उनके द्वारा प्रदत्त वरदान से मैं जगत में सुयश प्राप्त कर सका।

स्कन्द पुराण में श्रीकृष्ण ने कहा है – जो व्यक्ति भगवान शिव को छोड़ कर एकमात्र मेरा ही भजन श्रद्धा से करता है, उसे श्रेष्ठ भक्ति तो प्राप्त होगी ही, किन्तु मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकेगी, क्योंकि कैवल्य मुक्ति देने वाले एकमात्र भगवान शिव ही हैं।

इस प्रकार इस विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि भगवान श्रीकृष्ण परम शिवभक्त थे, यदि थोड़ा और सूक्ष्मता से विवेचन किया जाए, तो स्पष्ट होता है –

यो यद्भक्तः स एव सः

अर्थात् स्वयं भगवान शिव, श्रीकृष्ण हैं और स्वयं श्रीकृष्ण, भगवान शिव हैं। श्रीमद्भागवद के अनुसार –

अहं ब्रह्मा च सर्वश्च जगतः कारणं मरहम्
आत्मेश्वर उपद्रष्टाम स्वयं दृगविशेषणः।।

मैं ही नारायण, ब्रह्मा व शिव हूँ। मैं ही इन तीनों रूपों में जगत का कारण हूँ, सभी में, सभी रूपों में आवेष्टित होते हुए मैं ही आत्मा, उपद्रष्टा व ईश्वर हूँ।

अतः पुत्रप्राप्ति एवं यश प्रतिष्ठा प्राप्ति की कामना से जो साधक इस मंत्र का जप करता है, उसकी कामना शीघ्रताशीघ्र पूर्ण होती है।

साधना सामग्री—पारद शिवलिंग, रुद्राक्ष माला।

समय—यह साधना किसी भी सोमवार से या आने वाले श्रावण मास में प्रारम्भ की जा सकती है। यह 11 दिन की साधना है।

साधना विधि

साधक को चाहिए कि वह स्नान कर उत्तर की ओर मुंहकर सफेद आसन पर बैठें। सामने चौकी पर सफेद वस्त्र बिछायें एवं ताम्रपात्र में शिवलिंग स्थापित करें एवं साथ ही सद्गुरु चित्र स्थापित करें। फिर सद्गुरुदेव का एवं शिवलिंग का पूजन करें एवं अपनी मनोकामना व्यक्त करें और गुरु मंत्र की चार माला जप करें। फिर निम्न मंत्र बोलते हुये शिवलिंग पर 108 बिल्व पत्र चढ़ायें। यदि बिल्व पत्र उपलब्ध न हो सके तो सफेद पुष्प अर्पित करें फिर रुद्राक्ष माला से 11 माला मंत्र जप नित्य ग्यारह दिनों तक करें।

।। ॐ शाम्ब शिवाय पुत्र प्रदाय शं नमः ।।

साधना समाप्ति पर भगवान शिव के किसी मन्दिर के बाहर बैठे हुये कम से कम पाँच असहाय लोगों को भोजन करायें। इस प्रकार यह साधना सम्पन्न होती है और भगवान सदा शिव की कृपा से उसकी मनोकामना पूर्ण छोटी है।

साधना सामग्री-600/-

सर्व सिद्धि प्रयोग

यह प्रयोग मुझे एक उच्चकोटि के महात्मा से मिला था।

**इससे पूर्व मैंने कई साधनाएं सम्पन्न की थीं,
पर किसी भी साधना में पूर्ण सफलता नहीं मिल पा रही थी।
इससे मैं सर्वथा निराश और हताश हो गया था**

**और मेरे मन में यह विचार आ गया था,
कि कलियुग में ये सारे मंत्र निष्फल और प्रभावहीन हैं।**

ऐसे ही दिनों में मेरी भेंट एक संन्यासी से हो गई थी, जो केदारनाथ के मार्ग में एक गुफा में रहते थे। मैंने उनसे चर्चा की, कि प्रयत्न करने पर भी मुझे किसी भी साधना में सफलता नहीं मिल पा रही है, तो उन्होंने एक सर्वसिद्धि मंत्र दिया और कहा, कि कोई भी साधना सिद्ध करनी है, तो उससे पहले यह प्रयोग सम्पन्न कर लिया जाए, तो निश्चय ही साधना में सिद्धि प्राप्त होती है।

सबसे पहले अपने गुरू का पूजन कर गुरू मंत्र का पांच लाख जप करें और फिर इस सर्वसिद्धि मंत्र की **सर्व सिद्धि प्रदायक माला** से एक सौ एक माला मंत्र जप करें-

मंत्र

**॥ ॐ ज्वालिके ज्वल ज्वल सर्व पाप दोष
हर हर सर्व सिद्धि प्रदाय सिद्धये नमः ॥**

इसके बाद मूल साधना प्रारम्भ की जाय, तो जिस साधना या सिद्धि को आप प्राप्त करना चाहते हैं, उसमें अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है।

घर आकर मैंने इसी तरीके से **महाविद्या साधना** सिद्ध की, **छिन्नमस्ता और धूमावती** जैसी कठिन साधनाओं को भी मैंने इसी प्रयोग के द्वारा सिद्ध किया और मैंने अनुभव किया, कि वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आप में आश्चर्यजनक रूप से सफलतादायक है और चाहे कठिन से कठिन साधना या सिद्धि प्राप्त करनी हो, तो इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर अवश्य ही सफलता मिलती है।

सर्वसिद्ध प्रदायक माला - 300/-

श्री सद्गुरु स्तोत्रम्

जो अपने शिष्यों को भी परमा शक्ति साधना से सम्बद्ध कर सकते हैं, ऐसे गुरुदेव को मेरा भक्तिभाव से प्रणाम है।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुदेवो महेश्वरः।
गुरुसाक्षात परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।1।।

जीवन को पूर्णता देने वाले और मेरे मन में अध्यात्म का दीप प्रज्वलित करने वाले गुरुदेव ही हैं, वे ही ब्रह्मा हैं, वे ही विष्णु हैं और वे ही साक्षात भगवान शिव हैं, यदि सभी शास्त्रों का मंथन किया जाय तो निश्चय ही गुरु परब्रह्म हैं, ऐसे श्री सद्गुरु-देव को नमस्कार है।

अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्-पदं दर्षितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।2।।

जिन गुरुदेव की साधना और तपस्या से उन्होंने इस चल और अचल, समस्त विश्व को व्याप्त कर रखा है, जो सही अर्थों में 'परमा शक्ति' के ज्ञान से मंडित है, और जो अपने शिष्यों को भी परमा शक्ति साधना से सम्बद्ध कर सकते हैं, ऐसे गुरुदेव को मेरा भक्तिभाव से प्रणाम है।

अज्ञान-तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन-शलाकया।
चक्षु रुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः।।3।।

जो गुरुदेव अज्ञान रूपी अंधेरे से साधक और शिष्य को उजाले में ले जाने के लिए तत्पर हैं, जिन गुरुदेव की कृपा से ही आँखों में ज्ञान रूप काजल समाहित होता है, और जिससे साधक या शिष्य के ज्ञान चक्षु और दिव्य चक्षु खुल जाते हैं, जिसकी वजह से शिष्य पूरे ब्रह्माण्ड में होने वाली घटनाओं को अपनी आँखों से देखने में समर्थ हो पाता है, ऐसे सद्गुरुदेव को मेरा बार-बार प्रणाम है।

स्थावरं जङ्गमं व्याप्तं येन कृत्स्नं चराचरम्।
तत्-पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवै नमः।।4।।

जिन्होंने स्थिर रहने वाले और गतिशील अर्थात् चल और अचल समस्त विश्व को अपनी साधना से बांध रखा है, और परमा शक्ति के सहारे ब्रह्माण्ड में कुछ भी करने में समर्थ है,

गुरुदेव अज्ञान रूपी अंधेरे से साधक और शिष्य को उजाले में ले जाने के लिए तत्पर हैं, जिन गुरुदेव की कृपा से ही आँखों में ज्ञान रूप काजल समाहित होता है

उनके तो चरणों के दर्शन ही महान है, फिर यदि शिष्य को उनके चरण जल का पान करने का अवसर मिल जाय तो फिर कहना ही क्या? ऐसे गुरुदेव को मैं भक्तिभाव से प्रणाम करता हूँ।

चिद्-रूपेण परि-व्याप्तं त्रैलोक्यं स-चराचरं।
तत्-पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे-नमः।।5।।

जिनके पास परमा शक्ति है, जिसके पास चैतन्य शक्ति है, और जिनके पास चिद् शक्ति है, जिनके बल पर उन्होंने चल और अचल तीनों लोकों, पृथ्वी, स्वर्ग और पाताल को व्याप्त कर रखा है, और शिष्य के मन में परमा शक्ति को जाग्रत कर उसे पूरे ब्रह्माण्ड के दर्शन कराये हैं, ऐसे सद्गुरु को बार-बार प्रणाम है।

सर्व - श्रुति - शिरो - रत्न - समुद्भासित - मूर्तये।
वेदान्ताम्बुज-सूर्याय तस्मै श्रीगुरवे नमः।।6।।

सद्गुरु आज्ञाचक्र में स्थापित है, सभी वेदों-पुराणों और श्रुतियों में जिनको वेदान्त के ज्ञान से प्रकाशमान बताया है, जिनमें इतनी सामर्थ्य है कि वे नवीन मन्त्रों की रचना कर सके, और जो वेदान्त रूपी कमल को विकसित करने वाले सूर्य के समान हैं, उन श्री गुरु को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ।

चैतन्यः शाश्वतः शान्तो व्योमातीतो निरंजनः।
बिन्दु-नदा-कलातीतस्तस्मै श्री गुरवे नमः।।7।।

मेरे गुरुदेव सर्वोच्च हैं, जो चैत्न्य स्वरूप हैं, जो शाश्वत है, जो सनातन है, जिनसे बातचीत करते समय या जिनके पास बैठने से अत्यन्त शान्ति अनुभव होती है, जिनकी गति आकाश से भी परे है, जो बिन्दुमय, नादमय और कालातीत है, उन श्री गुरु को मैं नमस्कार करता हूँ।

ज्ञान-शक्ति-समारूढस्तत्व-माला-विभूषितः।
भुक्ति-मुक्ति-प्रदाता च तस्मै श्रीगुरवे नमः।।8।।

गुरुदेव की शक्ति सामर्थ्य और साधना की थाह नहीं ली जा सकती, जो ज्ञान की शक्ति से सम्पन्न हैं, जो तत्वबोध में पूर्ण हैं, जिन्हें हृदय में माला की तरह धारण करना चाहिए, जो इतने समर्थ हैं, कि भोग तथा मोक्ष दोनों एवं साथ देने में समर्थ हैं, जो दसों महाविद्याओं में पूर्णता प्राप्त हैं, ऐसे सद्गुरुदेव को मेरा नमस्कार है।

अनेक-जन्म सम्प्राप्त कर्मेन्धन-विदाहिने।
आत्म-ज्ञानाग्नि-दानेन तस्मे श्रीगुरवे नमः।।9।।

निश्चय ही साधक या शिष्य को पूर्वजन्मों के दोष और वर्तमान जीवन के दोषों की वजह से साधना में सफलता नहीं मिल पाती, और वह गुरु चरणों में लीन होने में असमर्थता अनुभव करता है, पर गुरुदेव ज्ञान रूपी अग्नि को प्रज्वलित कर साधक या शिष्य के अनेक जन्मों के पाप-दोष और कर्मफल रूपी ईंधन को भस्म कर देते हैं, और शुद्ध ज्ञान का दीपक जला कर उसे चैतन्य बना देते हैं, ऐसे गुरुदेव को बार-बार प्रणाम है।

शोषणं भव-सिन्धोश्च प्रापणं सार-सम्पदः।
यस्य पादोदकं सम्यक् तस्मै श्रीगुरवे नमः।।10।।

जिनके चरणों का जल अमृत के समान है, जिससे संसार के समस्त पाप समाप्त हो जाते हैं, ऐसे जल को पीने से शिष्य भवसिन्धु से पार उतर जाता है, और तत्वज्ञान की सम्पत्ति को समुचित रूप से प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है, जिनके चरणोदक से सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति संभव है, ऐसे श्री गुरुदेव को नमस्कार है।

न गुरोरधिकं तत्वं न गुरोरधिकं तपः।
तत्व-ज्ञानात् परं नास्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः।।11।।

सारे वेद पुराण शास्त्र और वेदान्त खंगालने के बाद मैं इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि गुरु से श्रेष्ठ न कोई तत्व है और न कोई तपस्या है, न कोई सिद्धि है, और न कोई साधना है, न कोई तत्व ज्ञान है, और न कोई आत्म ज्ञान। केवल गुरु की पूजा, गुरु का अर्चन और गुरु मन्त्र जाप ही सभी मन्त्रों में श्रेष्ठ और महामन्त्र है, ऐसे महिमा वाले श्री गुरुदेव को मेरा नमस्कार है।

मन्नाथः श्रीजगन्नाथो मद्-गुरु श्रीजगद्गुरुः।
मदात्मा सर्व-भूतात्मा तस्मै श्रीगुरवे नमः।।12।।

मेरे नाथ, मेरे गुरु, पूरे विश्व के नाथ हैं, मेरे गुरु सारे संसार के गुरु हैं, और इसीलिए उन्हें शास्त्रों में 'जगद्गुरु' शब्द से संबोधित किया है, जिनकी आत्मा पूरे विश्व की आत्मा है, और जो पूरे ब्रह्माण्ड में छाये हुए हैं, यदि विश्व में कहीं पर भी कुछ भी हलचल होती है, तो गुरुदेव को तत्क्षण आभास हो जाता है, ऐसे सद्गुरुदेव को मेरा नमस्कार है।
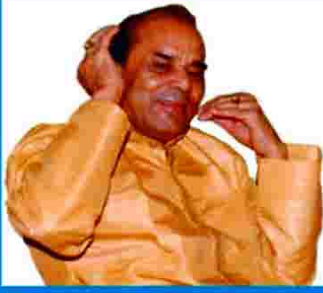
गुरु से श्रेष्ठ न कोई तत्व है और न कोई तपस्या है, न कोई सिद्धि है,
और न कोई साधना है, न कोई तत्व ज्ञान है, और न कोई आत्म ज्ञान।
केवल गुरु की पूजा, गुरु का अर्चन और गुरु मन्त्र जाप ही सभी मन्त्रों में श्रेष्ठ और महामन्त्र है,
ऐसे महिमा वाले श्री गुरुदेव को मेरा नमस्कार है।

गुरुरादिरनादिश्च गुरुः परम-दैवतम्।
गुरोः पर-तरं नास्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः।।13।।

सभी उपनिषदों में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि गुरु ही सृष्टि के आदिभूत देव हैं, और वे आदि रहित भी हैं, श्रीगुरुदेव ही सर्वश्रेष्ठ देवता हैं, और हजारों ऋषियों ने केवल गुरु मन्त्र जाप करके ही समस्त सिद्धियों को प्राप्त कर लिया था, इसीलिए तो कहा गया है कि गुरु से बढ कर न कोई साधना है, न कोई स्तुति, न कोई मन्त्र है और न कोई तन्त्र, न कोई साधना है और न उपासना, ऐसे श्री गुरुदेव को नमस्कार है।

ब्रह्मानन्दं परम-सुखदं केवलं ज्ञान-मूर्तिम्।
द्वन्द्वातीतं गगन-सदृशं तत्वमस्यादि-लक्ष्यम्।।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्व-धी-साक्षी-भूतम्।
भावातीतं त्रिगुण-रहितं सद्-गुरुं तं नमामि।।14।।

मैं पूर्ण शुद्धता के साथ सद्गुरुदेव को नमस्कार करता हूँ, जो ब्रह्मानन्द के साक्षात स्वरूप हैं, जिसको देखने से हृदय में आनन्द की अनुभूति होती है, जो सर्वोच्च सुख को प्रदान करने वाले हैं, जो गृहस्थ होते हुए भी विरक्त हैं, और ज्ञान की मूर्ति हैं, जो ज्ञान के साक्षात स्वरूप हैं, और आकाश के समान पूरे विश्व पर छाये हुये हैं, जो सुख-दुःख, लाभ-हानि, जन्म-मरण तथा द्वैत भावना से पूर्णतः परे हैं, जो गगन के समान निर्मल है, जो वेद के सारभूत 'तत्व मसि' अर्थात् पूर्ण रूपेण ब्रह्म है, और जिनके लिए हजारों-हजारों ऋषियों, मुनियों और संन्यासियों द्वारा एक ही शब्द उच्चरित हुआ है कि गुरुदेव सर्वोपरि है, वे अडिग है, वे सभी बुद्धियों के साक्षीभूत है, वे सभी भावों से परे है और वे तीनों गुणों से परे है ऐसे सद्गुरु को मेरा नमस्कार है।

।। श्री विश्वसार-तन्त्रे श्री सद्-गुरु-स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

गुरु पूर्णिमा के दिन गुरुचित्र के सम्मुख इस स्तोत्र का कम से कम 5 पाठ अवश्य करें।

सम्मान सद्गुणों का होना चाहिए...!

एक नगर में एक गरीब युवक रहता था। वह सब्जियाँ बेचकर जीवन यापन करता था। कुछ ही सालों में उसने एक किराने की दुकान खोल ली और धीरे-धीरे मेहनत एवं उसकी लगन के कारण उसकी सात दुकानें हो गईं। अब वह धनपतियों में गिना जाने लगा। कुछ ही दिन बाद वह हज की यात्रा भी कर आया जिससे उसे लोग 'हाजी साहब' कहने लगे। वह जिधर भी निकलता लोग उसे 'आदाब! हाजी साहब!' झुककर कहते।

लेकिन वह आदाब के जवाब में सिर्फ 'कह दूंगा' कहकर आगे बढ़ जाता था। लोगों को 'कह दूंगा' का अर्थ समझ में नहीं आ रहा था। आखिर इतने बड़े आदमी से पूछने की हिम्मत भी तो किसी में नहीं थी।

एक दिन हाजी साहब टहलने जा रहे थे इतने में एक युवक ने साहस करके हाजी साहब को रोककर पूछ ही लिया–'हाजी साहब आपको जब लोग आदाब करते हैं तब आप 'कह दूंगा' कहकर टाल देते हैं आखिर क्यों?' उस युवक की बात सुनकर वह मुस्करा उठे और उसे अपने साथ अपनी विशाल इमारत के तहखाने में ले गये। जहाँ हीरे, जवाहरात, सोना, चांदी भरे पड़े थे।

युवक ने पूछा–'हाजी साहब आप मेरे सवाल का जवाब देने के बजाय यह धन का अम्बार क्यों दिखा रहे हैं।' 'भाई यही तो आपके सवाल का जवाब है। मैं जब सब्जी बेचता था तब तो आदाब नहीं करते थे जब से मेरे पास यह धन का अम्बार लग गया तभी से तो आदाब करते हैं। आप यह आदाब मुझे नहीं इस धन को करते हैं इसलिए मैं इस धन को आप लोगों का आदाब कह देता हूँ। यही मेरे 'कह दूंगा' का अर्थ है।'

अर्थ यह है कि मान सम्मान धन का नहीं बल्कि व्यक्ति के सद्गुणों का होना चाहिए।

आयुर्वेद सुधा

जीवन है, तो सब कुछ है, आयु है, स्वास्थ्य है, तभी संसार में किसी अन्य वस्तु की कल्पना की जा सकती है, इसी को कहा गया है–'जान है तो जहान है'।

और इसी तथ्य को बहुत पूर्व ही ऋषियों ने अनुभव कर जड़ी–बूटियों एवं अन्य पदार्थों के औषधीय गुणों को संकलित किया और जन्म दिया एक अद्भुत शास्त्र को जिसकी तुलना वेद जैसे सर्वोच्च ग्रंथ से की गई और नाम दिया गया आयुर्वेद। इस बार भी आसानी से प्राप्त हो सकने वाली वस्तुओं के औषधीय गुणों एवं अन्य स्वास्थ्य सूत्रों का उल्लेख किया जा रहा है।

हरड़

हरड़ को संस्कृत में हरीतकी, अभया, सिद्धा, प्राणदा आदि नामों से जाना जाता है। हरड़ का पेड़ भारत के प्रत्येक भाग में पाया जाता है। हरड़ आंतरिक शक्ति को बढ़ाती है और रोगों का सामना करने की शक्ति प्रदान करती है। हरड़ से रक्त का शोधन होता है।

नेत्र रोगों में हरड़ को भूनकर खूब बारीक पीस कर लेप बनाकर आँखों के चारों ओर लगाने से हर प्रकार का रोग ठीक हो जाता है। गले के रोगों में हरड़ के क्वाथ में शहद मिलाकर पिलाना चाहिए।

खांसी एवं दमा में हरड़ एवं हल्दी के चूर्ण को बराकर मात्रा में मिलाएं एवं थोड़े गर्म पानी के साथ आधा ग्राम लेने से खांसी एवं दमा में आराम मिलता है।

जिन्हें अपचन रहती हो, वे हरड़ के चूर्ण को सोंठ के साथ खाना खाने से पूर्व खाएं तो क्षुधा बढ़ती है।

वमन में हरड़ का चूर्ण शहद में मिलाकर चाटना चाहिए। हिचकी में हरड़ के चूर्ण को अंजीर के चूर्ण के साथ गर्म पानी के साथ लेने से लाभ मिलता है। दो या तीन हरड़ के मुरब्बे लेने से सुबह मल त्याग आसानी से हो जाता है। हरड़ किसी अच्छे पंसारी की दुकान पर आसानी से मिल जाती है।

जामुन की गुठली मधुमेह की औषधि

जामुन की गुठली मधुमेह तथा बहुमूत्र की अचूक औषधि है। जामुन की दस ग्राम गुठली का चूर्ण एक से दो ग्राम की मात्रा में जल के साथ दिन में तीन बार लिया जा सकता है। एक सप्ताह में ही पेशाब की शुगर कम होने से मूत्र का बढ़ा हुआ भार सामान्य हो जाता है। जिन्हें बहुमूत्र की शिकायत है, उनके लिए भी यह प्रयोग लाभकारी है। जौ, मूंग, बाजरा, परवल, लौकी आदि का सेवन भी साथ में करना चाहिए तथा प्रातः वेला टहलने की आदत डालनी चाहिए।

लहसुन

यों तो लहसुन को तामसिक माना गया है, परन्तु आयुर्वेद के अनुसार इसकी उत्पत्ति 'अमृत' से मानी गई है–

'अमृतोद्भूतममृत लशुनानां रसायनम्'

लहसुन एक अत्यन्त शक्तिशाली 'एन्टीसेप्टिक' है। औषधि के रूप में इसमें अनेक गुण हैं–

1. **चोट या घाव**–यदि किसी प्रकार का घाव हो गया हो, तो उस घाव को साफ कर उस पर पिसी हुई लहसुन की पट्टियाँ बाधने से एंटिसेप्टिक का कार्य करता है, साथ ही घाव भी भर जाता है। यदि खून निकल रहा हो, तो लहसुन का रस लगाने से लाभ होता है।
2. **टी.बी.**–लहसुन में प्राकृतिक रूप से सल्फ्यूरिक ऐसिड प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, इस कारण यह टी.बी. रोग के कीटाणुओं को मार भगाने में असरकारी है। इस रोग से ग्रस्त रोगी को प्रतिदिन नाश्ता करने से पूर्व तीन–चार लहसुन की कलियाँ खानी चाहिए।
3. **वमन या उल्टी**–यदि बार बार उल्टी हो रही हो, तो आधा चम्मच लहसुन का रस पिलाने से आधे घण्टे बाद आराम

दिन में सोना रोगों को आमंत्रण है

आयुर्वेद शास्त्रों में उक्ति है–**'दिवास्वापं च वर्जयेत्'** अर्थात् दिन में नहीं सोना चाहिए। वस्तुतः ग्रीष्म ऋत्रतु के अपवाद को छोड़कर अन्य किसी भी ऋतु में बाल, वृद्ध, रुग्ण एवं रातभर जगे पुरुष के अतिरिक्त सर्वसाधारण को दिन में नहीं सोना चाहिए। आयुर्वेद में उल्लेख आता है, कि दिन में सोने से **'प्रतिश्याम'** अर्थात् जुकाम हो जाता है, जो आगे चलकर **'श्वास रोग'** में परिवर्तित हो जाता है। दिन में सोने से प्रायः यह अनुभव किया होगा, कि उठने पर ताजगी के स्थान पर आलस्य ही ज्यादा घेर लेता है, जबकि रात्रि में नींद लेकर पुनः प्रातःकाल उठने से शरीर और मन दोनों ही तरोताजा होते हैं।
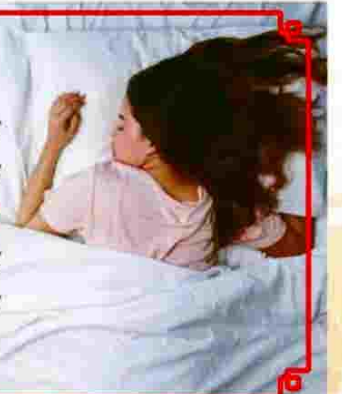
आतङ्क एङ्कमग्नानां हस्तालम्बो भिषग्जितम्।
जीवितं म्रियममाणानां सर्वेषामेव नौषधात्।।

अर्थात् रोगरूपी कीचड़ में फंसे हुए पुरुषों के लिए आयुर्वेद शास्त्र हाथ के सहारे की भांति होता है, किन्तु मरने वाले सब असाध्य रोगियों को औषधि से जीवन नहीं दिया जा सकता। रोगी का पूर्वकर्मफल भी इसमें कारण होता है।

हो जाता है।

4. **दाद**–लहसुन को यदि अच्छी तरह पीस कर वैसलीन में 1:4 के अनुपात में मिला दिया जाए, तो दिन में तीन-चार बार इसे दाद-खुजली के स्थान पर लगाएं, तो खुजली शरीर से समाप्त हो जाती है।
5. **हृदय रोग**–लहसुन में विशेष अवयव होते हैं, जिनके कारण उसमें हृदय में जमे हुए कोलेस्ट्रॉल को बाहर निकालने की क्षमता होती है। जमे हुए कोलेस्ट्रॉल से ही दिल के दौरे आदि पड़ते हैं, अत: हृदय रोगियों के लिए लहसुन रामबाण औषधि है। नित्य चार-पांच कच्चे लहसुन की कलियों का सेवन हृदय रोगियों के लिए लाभदायक होता है।
6. **गठिया**–यदि पाव भर दूध में 5-6 लहसुन की कलियों को उबाल कर पिया जाए, तो गठिया के रोग में लाभ मिलता है। गठिया के कारण शरीर के जिस अंग में दर्द होता हो, उस अंग में लहसुन के तेल की मालिश भी लाभदायक होती है। एक किलो तिल के तेल में आधा किलो लहसुन को पीस कर तब तक गर्म करें, जब तक लहसुन लाल न हो जाए। फिर छान कर इस तेल से दिन में दो बार मालिश करें।
7. **दमा**–दमे का दौरा पड़ने पर यदि 10 ग्राम लहसुन के रस को दोगुना गुनगुने पानी के साथ पीने से दौरा धीमा हो जाता है।

सौंफ

प्रत्येक घर में सौंफ रसोई में प्राप्त हो जाती है, इसके औषधीय गुणों के लाभ इस प्रकार हैं–

1. **कब्ज**–सौंफ का चूर्ण एक चम्मच और 2-3 चम्मच गुलकन्द रोज एक बार दोपहर में भोजन के घण्टे भर बाद खाने से हल्का कब्ज दूर होता है।
2. **नेत्र ज्योति**–मिश्री एवं सौंफ पीसकर 1 डब्बे में रख लें और इस चूर्ण को प्रतिदिन 1 चम्मच सोते समय लेते रहें। यदि छ: माह तक इस प्रकार नियमित सेवन किया जाए तो नेत्र ज्योति बढ़ती है।
3. **पेचिश**–सौंफ का चूर्ण तथा बेल का गूदा दोनों समान मात्रा में मिला लें। दिन में तीन बार इसको 10-15 ग्राम मात्रा में लेकर दही में मिलाकर खाने से पेचिश ठीक होती है।

(प्रयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें।)

अधिक नमक सेवन
मन्द विष के समान है

चिकित्सकों का मत है, कि मानवीय भोजन में नमक मिलाना आवश्यक नहीं है। अगर सन्तुलित भोजन लिया जाए, तो किसी भी व्यक्ति को अलग से नमक या शक्कर लेने की आवश्यकता नहीं है। जिस तरह शहद, दूध, सब्जियों व फलों में काफी मात्रा में कार्बोहाइड्रेट होता है, जो शक्कर की आवश्यकता को पूरा करता है, उसी प्रकार दूध, आलू, पानी, टमाटर तथा सब्जियों व फलों के रस में सोडियम, पोटैशियम होते हैं, जो नमक के तत्व हैं। मात्र इन्हीं वस्तुओं के नियमित सेवन से नमक की पूर्ति हो जाती है।

आजकल बाजारों में डिब्बा बंद खाद्य पदार्थों का काफी प्रचलन हो गया है। डिब्बा बंद खाद्य पदार्थों को अधिक टिकाऊ बनाने के लिए उसमें अधिक मात्रा में नमक व सोडा मिलाना पड़ता है, जिससे खाद्य सामग्री में सोडियम की मात्रा काफी बढ़ जाती है, और यही सोडियम कई बीमारियों का कारण बनता है। जिन देशो में डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों का अधिक सेवन किया जाता है, वहाँ के निवासी रक्तचाप और मानसिक तनाव के अधिक शिकार होते हैं।

आयुर्वेद में रक्तचाप के रोगी को सेंधा नमक देने की सलाह दी गई है। हर दृष्टि से वैसे भी यही उपयुक्त है, कि नमक अथवा शक्कर दोनों का ही कम से कम मात्रा में प्रयोग किया जाए, तभी रक्तचाप, मधुमेह व अन्य मानसिक बीमारियों से बचे रह सकते हैं।

साधनात्मक शब्दार्थ

अक्सर यह देखा गया है, कि लोग आम बोल-चाल की भाषा में कुछ शब्दों का प्रयोग तो करते हैं, परन्तु उसका सही अर्थ उन्हें ज्ञात नहीं होता है। यही बात साधनात्मक क्रिया-विधियों से सम्बन्धित अनेकानेक शब्दों के साथ लागू होती है। यदि कोई जिज्ञासावश आपसे पूछ ले, कि 'अंगन्यास' क्या होता है, तो आपके पास स्पष्ट रूप में एक सरल परिभाषा होनी चाहिए, जिससे उस शब्द विशेष का अर्थ स्पष्ट हो सके। साधना क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में साधनात्मक शब्दार्थ एक प्रयास है, आशा है साधकों एवं पाठकों को इससे अवश्य लाभ होगा।

- **जातक**–जिस पुरुष या स्त्री की कुण्डली होती है या जिसका ज्योतिष विश्लेषण करना होता है, उस व्यक्ति को जातक कहा जाता है।
- **राशि**–कुल बारह राशियाँ होती हैं, जिन्हें कुण्डली में 1 से 12 तक की संख्या में दर्शाया जाता है, जो क्रमशः इस प्रकार हैं–मेष (1), वृष (2), मिथुन (3), कर्क (4), सिंह (5), कन्या (6), तुला (7), वृश्चिक (8), धनु (9), मकर (10), कुंभ (11), मीन (12)।
- **कुण्डली**–ग्रहों की स्थिति को अंकों के माध्यम से एक विशेष रेखाचित्र व्दारा प्रदर्शित किया जाता है। बारह खानों या स्थानों वाले इस व्दादश चक्र या चित्र में बारह राशियों और ग्रह स्थितियों का निरूपण किया जाता है। इसे कुण्डली कहते हैं। कुण्डली अपने आप में जीवन का सम्पूर्ण चित्र है।
- **भाव**–कुण्डली में बारह घर बने होते हैं, जो कि बारह राशियों का निरूपण करते हैं। प्रत्येक घर को भाव कहते हैं।
- **लग्न**–कुण्डली में ऊपर की ओर मुख्य भाव को लग्न कहते हैं।
- **योग**–कुण्डली के बारह भाव मानव जीवन का पूरा ब्यौरा अपने आप में समेटे होते हैं। कुण्डली की राशियों तथा ग्रहों के परस्पर संयोग व सम्बन्ध होने से अलग-अलग योग निर्मित होते हैं, जिनका अलग-अलग अच्छा या बुरा फल होता है। कुण्डलीगत राशि तथा ग्रहों के इसी संयोगों को योग कहते हैं। दो या दो से अधिक ग्रह किसी एक भाव या राशि में बैठकर विशेष फल प्रदान करते हैं, जिसे योग कहते हैं।
- **भावेश**–प्रत्येक भाव के स्वामी ग्रह को भावेश कहते हैं।
- **लग्नेश**–लग्न में स्थित राशि का स्वामी ग्रह लग्नेश होता है।
- **ग्रहों की दृष्टि**–कुण्डली में स्थित प्रत्येक ग्रह अपने स्थान से सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से, तीसरे और दसवें भाव को एक चरण दृष्टि, पांचवे और नवें भाव को दो चरण दृष्टि से तथा चौथे व आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से देखता है। इसमें और भी कई नियम हैं, जिनका विस्तार यहाँ सम्भव नहीं है। एक ग्रह की दृष्टि जब किसी ग्रह पर पड़ती है, तो उसके प्रभाव से जातक के जीवन पर शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है।
- **ग्रहों का मैत्री विचार**–ग्रहों में परस्पर पांच प्रकार की मित्रता होती है—1. अधिमित्र, 2. मित्र, 3. सम, 4. शत्रु, 5. अधिशत्रु (घोर शत्रु)। कुण्डली में यदि कोई ग्रह अपने मित्र के घर में पड़ा होता है, तो शुभ फल देता है, परन्तु शत्रु के स्थान पर पड़ा ग्रह पूर्ण फल नहीं दे पाता, जैसे चन्द्र के लिए राहु व केतु अधिशत्रु हैं।
- **नक्षत्र**–किसी भी समय के ज्योतिषीय विवेचन उस समय के नक्षत्र स्थिति या तारा-ग्रह मण्डल की स्थिति पर निर्भर करता है। इसी आधार पर कुल 27 नक्षत्र माने गए हैं।

शरीर स्वस्थ रखना हम सभी का कर्तव्य है

नवस्फूर्ति व नवचेतना की प्राप्ति के लिए...

योग

सर्वांगासन

जैसा कि नाम से ही प्रतीत हो रहा है इस आसन के द्वारा शरीर के समस्त अंगों एवं अवयवों को लाभ प्राप्त होता है। हठयोग में नाना प्रकार के आसनों का वर्णन है एवं एक सामान्य गृहस्थ के लिए सभी आसनों का प्रतिदिन अभ्यास करना संभव नहीं है। अतः कुछ आसन इस प्रकार से विकसित किये गये हैं कि उनमें अधिकांशतः आसनों का सम्मिश्रण हो जाये एवं उन आसनों को साध लेने से शरीर को वो सब लाभ एवं शक्ति प्राप्त हो जाए जो अन्य आसनों से प्राप्त होती है। सर्वांगासन उन कुछ गिने-चुने आसनों की श्रेणी में आता है जिसके द्वारा प्रायः शरीर के सभी अंगों का व्यायाम हो जाता है।

सर्वांगासन एक ऐसा आसन है जिसके द्वारा शरीर में मौजूद विभिन्न अंतः स्त्रावी ग्रंथियों को क्रियाशील बनाया जा सकता है। सारांश में प्रत्येक साधक को इस आसन का अभ्यास करना चाहिए।

विधि - सर्वप्रथम पीठ के बल जमीन पर दोनों टांगों को सटाते हुए सीधे लेट जाइये, फिर कमर तक के हिस्से को ऊपर उठायें। इसके पश्चात् दोनों हाथों को नितम्बों के पास सहारा देते हुए कंधे से नीचे के समस्त शरीर को भूमि के लम्बवत स्थापित कीजिए और फिर पूरी तरह श्वास छोड़ते हुए पाँवों को घुटनों से सीधा कीजिए एवं समस्त शरीर को ऊपर की तरफ उठाते हुए बिल्कुल एकदम सीध में स्थापित कर दीजिए।

इस स्थिति में केवल सिर और गर्दन का पिछला हिस्सा, कंधे, कोहनियां एवं बाहों का पिछला हिस्सा ही भूमि पर टिका हुआ है। सर्वांगासन की इस स्थिति में दोनों हाथ रीढ़ की हड्डी के बगल में ही रखने चाहिए एवं श्वास-प्रश्वास सामान्य तरीके से चलने दें।

लाभ - इससे मस्तिष्क और याद्दास्त को बल मिलता है, चेहरा तेजस्वी होता है, नेत्रों की ज्योति बढ़ती है। पौरुष ग्रंथि और थायरायड ग्रंथ पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। स्वप्न दोष, धातु स्राव, शीघ्र पतन आदि यौन विकार रोग दूर रहते हैं। मन्दाग्नि, अजीर्ण, कब्ज, बवासीर के रोगियों को लाभ होता है। सिर के बाद घने व काले बने रहते हैं। महिलाओं के मासिक धर्म संबधी व्याधियाँ दूर होती हैं। गर्भवती महिलाएं यह आसन न करें। सिरदर्द, नेत्र रोग, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग वाले यह आसन किसी योगाचार्य की सलाह और अनुमति लेकर ही करें।

AGHOR SHIVA SADHANA

NO ONE CAN POSSIBLY COMPREHEND THE GREAT POWERS OF LORD SHIVA. TO BE ABLE TO DO SO ONE HAS TO COMPLETELY MERGE IN THE DIVINE AND PURE FORM OF THE LORD.

Every form of the Lord is supremely blissful and benign for the Sadhak. But to benefit from his grace one has to enter into the world of Sadhanas.

The most powerful form of the Lord is known as Aghor and through the Sadhana of Aghor Shiva even the most impossible task can be accomplished.

Aghor means the science of Hatthyog through which the senses are brought under perfect control and the Kundalini Power is activated in order to have the divine glimpse of Lord Shiva. Through the Aghor form of Lord Shiva one can overcome even the most adverse situation in life.

It is quite famous among even the most accomplished Sadhaks that it is very difficult to obtain a Aghor Sadhana. One can obtain knowledge of hundreds of Sadhanas but to get information regarding this wonderful form of Sadhana is almost impossible. It is easier to find a needle in a haystack than come across an Aghor Sadhana in the world of Sadhanas.

This Sadhana is based on Tantra the pure science which is used to make the individual progress spiritually. And once this happens then one can not just help oneself but also others to overcome their problems.

Generally no Guru is ready to give this Sadhana because of the tremendous power instilled in it. So it is very difficult to obtain this particular ritual.

Another fact about this ritual is that it is very simple, easy and quick acting. This is why revered Sadgurudev very kindly revealed it for the benefit of the common man.

For the common man the ritual comes as a boon because living in this world one has to face so many problems and adversaries.

But after trying this Sadhana through the blessing of Lord Shiva one is able to banish all fear from life. This is an eleven day Sadhana that must be started on Monday of the dark fortnight of lunar month.

Try the Sadhana early morning between 4 and 6 am. Have a bath and wear fresh clothes red in colour. Cover a wooden seat with a clean red cloth. In a copper plate place a Mantra energised *Aghor Shiva Yantra.* Offer flowers, sandalwood paste and rice grains.

Light a ghee lamp. Near the Yantra place a *Rudraksha* and on it also offer flowers and sandalwood paste. Then chant the following verse praying to Lord Shiva for success and meditating on his divine form.

Dakshinnam Neel Jeemot Prabham Sanhaar Kaarakam Vakrabhroo-kutilam Ghoram-ghoraakhyam Tamarchayet.

Next with a *Rudraksha rosary* chant 21 rounds of the following Mantra.

Om Yang Rang Lang Vang Aghoraay Ghortaraay Namah.

Do this daily for 11 days. Then wear the Rudraksha in a thread around the neck. Drop the Yantra and rosary in a river or pond. Do the same with the Rudraksha after one month.

Sadhana articles -570/-

Any Wednesday or Purnima

SANTAN PRAPTI

MANGALA SADHANA

An amazing and unfailing Sadhana that surely blesses one with a child

Married life without children is like life in a desert. Without the delightful cries of children, their pranks, their jingling laughter everything appears so dull and purposeless. Ask a couple who have been married for the past several years and have not yet been visited by the stork and they shall tell you how colourless life can be without children.

One reason for the absence of children could be the affliction of planet Mars in the horoscope of the husband or the wife or both. A malefic Yoga arising due to the affliction of Mars could not only make married life unhappy due to frequent quarrels between the couple, but could also deny one children.

The Indian world of Sadhanas is full of rituals that could help one overcome various problems of life. One such Sadhana is the Santaan Prapti Mangala Sadhana that if tried with full faith and devotion could produce the desired result.

Many childless couples were gifted this Sadhana by revered SadgurudevDr. Narayan DuttShrimali and in not one case did it fail to bless the couple with a child.

In many of the cases even the best of doctors had declared that the married couples would never be able to have children. But due to the Sadhana even the impossible came out to be.

Married couples who wish to have children could try this wonderful Sadhana.

This Sadhana should be tried on a **Wednesday or Purnima** (full moon day). Early morning try this

Sadhana between 4 am and 6 am. Have a bath. Wear yellow clothes. Sit on a yellow mat facing North. The wife should sit on the right side of the husband. She should not tie her hair and should let it remain loose.

Cover a wooden seat with yellow cloth and on it place a steel plate. In the plate place a **MangalYantra.** On the Yantra put a betel nut.

Then chant one round of Guru Mantra and ask the Guru to bless you with success in the Sadhana.

Make a mixture of milk, water, curd, ghee and sugar. The husband should then chant one round of the following Mantra with Rock Crystal Rosary while the wife should pour the mixture on the Yantra and betel nut in a steady stream. By the time the one round is complete the betel nut should get fully immersed in the mixture.

Om Bhoumeshwaraay Vam Purneshwaraay Namah

After this the wife should sit on the left side of the husband. Place a **Santaan Prapti Yantra** in another steel plate. Offer vermilion, rice grains and flowers on it. Light a ghee lamp. Then chant three rounds of this Mantra with two **yellow Hakeek rosaries.**

Om Purnendu Purneshwaraayei Yogaadhibalprakataayei Putra Pradaatavyei Namah

The husband and wife shall have one yellow Hakeek rosary each. The wife shall chant the Mantra with the husband and thus total six rounds shall be chanted. After Sadhana chant one round of Guru Mantra.

The next day drop all Sadhana articles in a river or pond except the yellow Hakeek rosaries. The husband and wife should wear their respective rosary daily for one or two hours and then keep it in the place of worship. They should wear it thus for one month and ther drop the rosaries in a river or pond. ***Without doubt this is a very powerful Sadhana whose results cannot fail to manifest provided it is tried with full faith and concentration.***

Sadhana Article-570

प्रेम का यह सौन्दर्य, नेत्रों की ही मोहिनी, दूसरों को अपना बना लेने की क्षमता

सभी कुछ व्यक्ति के अन्दर उतर सकता है, उसका जीवन संवर सकता है, वह अपने जीवन को सम्मोहन एवं प्रेम के रस में भीगो सकता है, उसकी इच्छाओं की पूर्ति करा सकता है, यदि उसे 'शक्तिपात युक्त नेत्र चुम्बकत्व दीक्षा' प्राप्त हो जाए।

उपहारस्वरूप प्राप्त करें

शक्तिपात युक्त दीक्षा

नेत्र चुम्बकत्व दीक्षा

भगवान श्रीकृष्ण ने अपने शिष्य जीवन में सम्मोहन की साधना को विशेष स्थान दिया था किन्तु सम्मोहन साधना पूर्ण करने के बाद भी जब उन्होंने अनुभव किया कि कुछ कमी रह गई है तब उन्होंने अपने गुरु सांदीपन से प्रार्थना की तब उनके **गुरु सांदीपन ने उनकी सेवा से प्रसन्न होकर अपने तपोबल को दीक्षा में परिवर्तित कर भगवान श्रीकृष्ण को यही नेत्र चुम्बकत्व दीक्षा प्रदान की थी जिसके पश्चात् ही श्रीकृष्ण पूर्ण सम्मोहन युक्त बन सके** और ऐसा सम्मोहन प्राप्त कर सके कि जड़ और चेतन दोनों ही सम्मोहन हो जाते उनकी आँखें एक जादू बनकर सारे व्यक्तित्व में बोलने वाली हो गई किसी को भी मंत्र मुग्ध कर देने में पूर्ण समर्थ।

योजना केवल 4, 10 एवं 11 जुलाई इन दिनों के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- 'नारायण मंत्र साधना विज्ञान', जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 2 पर देखें।

दिल्ली कार्यालय – सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 June, 2021
Posting Date : 21-22 June, 2021
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2019-2021
Licensed to post without prepayment
License No. RJ/WR/WPP/14/2018-
Valid up to 31.12.2021

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान गुरुधाम (जोधपुर)	
04	जुलाई
13	अगस्त

स्थान सिद्धाश्रम (दिल्ली)	
10-11	जुलाई
14-15	अगस्त

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002